Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अक्तूबर 2010

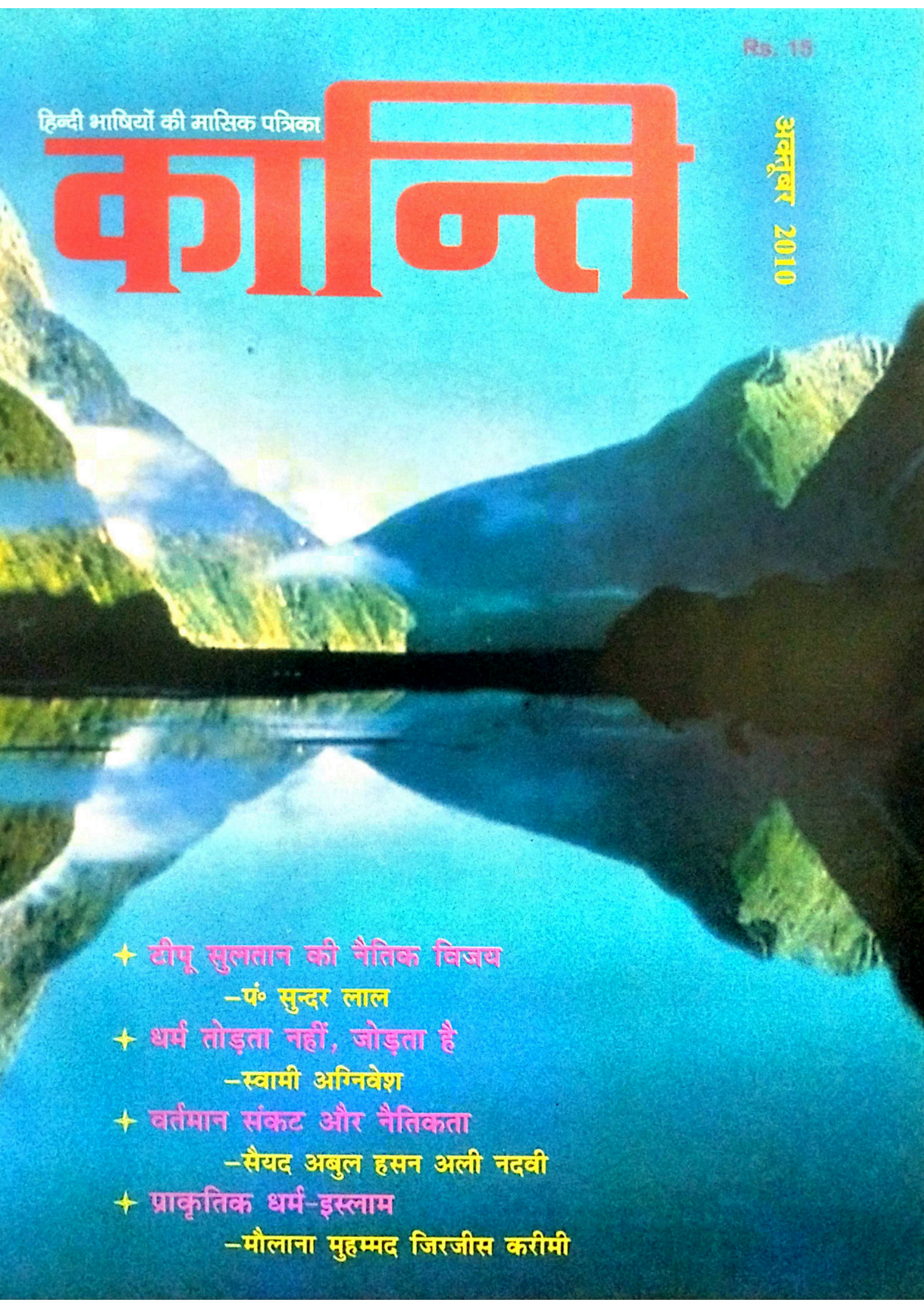

- टीपू सुलतान की नैतिक विजय
  –पं॰ सुन्दर लाल
- धर्म तोड़ता नहीं, जोड़ता है
  –स्वामी अग्निवेश
- वर्तमान संकट और नैतिकता
  –सैयद अबुल हसन अली नदवी
- प्राकृतिक धर्म-इस्लाम
  –मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी

"और अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके
साथ किसी को साझी न ठहराओ।
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों,
नातेदार पड़ोसियों के साथ, और उन
पड़ोसियों के साथ जिनका संबंध न हो,
और पास के व्यक्ति के साथ,
और राह चलने वालों के साथ,
और उनके साथ जो तुम्हारे
अधिकार में हों।"
(क़ुरआन, 4:36)

A WELL WISHER
PATNA

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 20 अंक 5 अक्तूबर 2010

जान रखो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं । और अपने गुनाहों के लिए क्षमा-याचना करो और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी । अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत को भी जानता है और तुम्हारे ठिकाने को भी ।

(कुरआन, 47:19)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantimasik@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

रोना है कहां, हंसना है कहां, ये बात मेरा दिल जाने है
तंहाई का मतलब समझे है मफ़हूमे[1]-महाफ़िल जाने है

गर अपने घाव दिखाओगे, सूली पे चढ़ाए जाओगे
इस शहर का मुन्सिफ़[2] ऐसा है, बिस्मिल[3] को जो क़ातिल जाने है

ऐ दिल न दिखा दरबार मुझे, हां ले चल सूए-दार[4] मुझे
तू ख़ूब मुझे पहचाने है, हूं किसके क़ाबिल जाने है

इन अहले-इल्मो-दानिश[5] के, नाक़िस[6] हैं सारे मनसूबे
इन्सां को बनाने वाला ही, इन्सां के मसाइल[7] जाने है

हम जीने से तो ऊब गये, मरने से मगर यूं डरते हैं
जो बोया है वो क़ाटेंगे, क्या बोया है, दिल जाने है

ऐ ऐसे-वैसे फ़नकारो ! मानो कि बुरा फ़नकार है वो
तश्हीर[8] की काविश[9] को भी जो तख़्लीक़[10] में शामिल जाने है

किरदार भी ज़द[11] में आते हैं मेअ्यारं[12] भी ज़द में आते हैं
हंगामए-महफ़िल को महफ़िल जब गर्मिए-महफ़िल जाने है

मेरी ही कमी है ये शायद या उसके दिल का खोट 'हफ़ीज़'
मैं जिसको अपना समझूं हूं वो मुझको मुक़ाबिल[13] जाने है।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

---

1. अर्थ 2. इन्साफ़ करने वाला, न्यायाधीश 3. पीड़ित, आहत, ज़ख़्मी 4. सूली की ओर 5. ज्ञान और बुद्धि वाले, 6. खोटे, अपूर्ण, बेकार 7. समस्याएं 8. प्रचार, विज्ञापन 9. कोशिश 10. कृति, रचना 11. चपेट 12. स्तर, मानदंड 13. प्रतिद्वंद्वी



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
मध्य मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष (हदीस प्रभा)		6
दूर हों न्याय के मार्ग की रुकावटें (संपादकीय)		7
हज़रत रूबैया बिन्त नज़र 'रज़ि०' (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	9
क्या इस्लाम तलवार से फैला ?	–राजेन्द्र नारायण लाल	11
प्राकृतिक धर्म-इस्लाम	–मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी	15
वर्तमान संकट और नैतिकता	–सैयद अबुल हसन अली नदवी	19
चचा जान (कहानी)	–मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी	21
मिड डे मील योजना...	–विद्या प्रकाश	23
निर्बल के हम बल बन जाएं (कविता)	–अभिराम सत्यज्ञ 'जयशील'	25
बालिका (कविता)	–डा० सदानंद भोसले	25
ग़ज़ल	–सैयद मुहम्मद असलम	25
आंखें भर आतीं (कविता)	–डॉ० स्वर्ण किरण	25
टीपू सुलतान की नैतिक विजय	–पं० सुन्दर लाल	26-27
ज़ुलैख़ा बेगम	–डॉ० आबिदा समीउद्दीन	30
स्वतंत्रता सेनानी हाजी बेगम	–डॉ० अमल सिंह 'भिक्षुक'	35
चीन की सामरिक चुनौती	–कुलदीप नैयर	39
धर्म तोड़ता नहीं, जोड़ता है	–स्वामी अग्निवेश	41
दहेज क़ानूनों पर एक नज़र	–रेणुका पामेचा	43
विश्व घटना-चक्र	–मुशर्रफ़ अली	45
अभिमत		47
बालवीथी		49

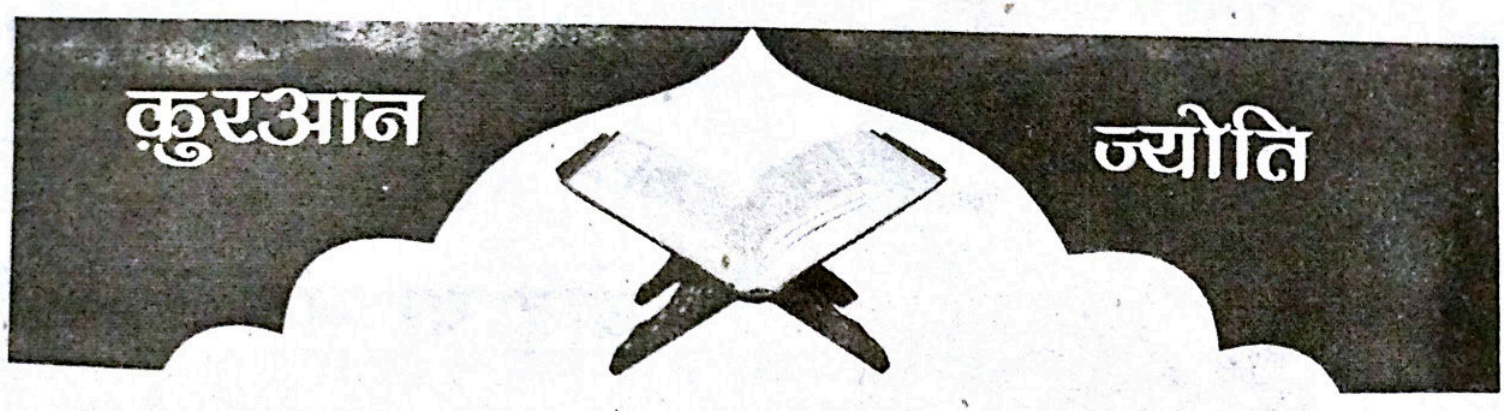

ऐ नबी (सल्ल०), अपने रब को सुबह व शाम याद किया करो दिल ही दिल में गिड़गिड़ाते और डरते हुए और ज़ुबान से भी हलकी आवाज़ के साथ । तुम उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं ।[154] जिन फ़रिश्तों को तुम्हारे रब के यहां सान्निध्य का स्थान प्राप्त है वे कभी अपनी बड़ाई के घमंड में आकर उसकी इबादत से मुंह नहीं मोड़ते[155] और उसकी तसबीह करते हैं[156] और उसके आगे झुके रहते हैं ।[157]

–क़ुरआन, 7 : 205,206

154. याद करने से तात्पर्य नमाज़ भी है और दूसरे क़िस्म की याद भी, चाहे वह ज़ुबान से हो या ख़्याल से । सुबह व शाम से तात्पर्य यही दोनों समय भी हैं और इन समयों में अल्लाह की याद से अभिप्रेत नमाज़ है, और सुबह व शाम का शब्द 'सदा-सर्वदा' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है और इससे अभिप्राय सदैव अल्लाह की याद में लगा रहना है । यह आख़िरी नसीहत है जो व्याख्यान के अंत में दिया गया है और इसका तात्पर्य यह बताया गया है कि तुम्हारा हाल कहीं ग़ाफ़िलों जैसा न हो जाए । दुनिया में जो कुछ गुमराही फैली है और इन्सान के शील-स्वभाव, अख़्लाक़ व कर्मों में जो बिगाड़ भी पैदा हुआ है, उसका कारण केवल यह है कि इन्सान इस बात को भूल जाता है कि अल्लाह उसका रब (पालनहार) है और वह अल्लाह का बन्दा है और दुनिया में उसको परीक्षा के लिए भेजा गया है और सांसारिक जीवन समाप्त होने के बाद उसे अपने रब को हिसाब देना होगा । अत: जो आदमी सीधे रास्ते पर चलना और दुनिया को उस पर चलाना चाहता हो उसको अत्यंत सावधान रहना चाहिए कि कहीं इस भूल का स्वयं शिकार न हो जाए । इसीलिए नमाज़ और अल्लाह की याद और अल्लाह की ओर सदा उन्मुख रहने की बार-बार ताकीद की गयी है ।

155. मतलब यह है कि बड़ाई का घमंड और बन्दगी से मुंह मोड़ना शैतानों का काम है और इसका नतीजा पस्ती और गिरावट है । इसके विपरीत अल्लाह के आगे झुकना और बन्दगी में क़दम जमाये रखना फ़रिश्तों जैसा काम है और इसका नतीजा उन्नति, उच्चता और अल्लाह का सामीप्य है । अगर तुम यह उन्नति चाहते हो तो अपनी कार्य नीति को शैतानों के बजाय फ़रिश्तों की कार्य नीति के अनुसार बनाओ ।

156. तसबीह (महिमागान) करते हैं, अर्थात वे अल्लाह का अवगुणरहित, दोषरहित और त्रुटिरहित हर प्रकार की कमज़ोरियों से उसका पाक होना और उसका ऐसी हस्ती होना जिसका कोई शरीक न हो, न कोई उस जैसा हो, न कोई समान हो, इसे दिल से मानते हैं, इसका इक़रार करते हैं, इसको स्वीकार करते हैं और सदैव इसके प्रदर्शन और एलान में लगे रहते हैं ।

157. इस स्थान पर आदेश है कि जो व्यक्ति इस आयत को पढ़े या सुने वह सजदा करे, ताकि उसका हाल सान्निध्य प्राप्त फ़रिश्तों के हाल के अनुकूल हो जाए और सारे जगत का प्रबंध चलाने वाले कार्यकर्ता जिस अल्लाह के आगे झुके हुए हैं उसके आगे वह भी उनं सबके साथ झुक जाए और अपने कर्म से तुरन्त सिद्ध कर दे कि वह न तो किसी घमंड का शिकार है और न अल्लाह की बन्दगी से मुंह मोड़नेवाला है ।

क़ुरआन मजीद में ऐसी 14 जगहें हैं, जहां सजदा की आयतें आयी हैं । इन आयतों को सुनने व

(शेष पृष्ठ 24 पर)

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com



मध्य-मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की मृत्यु हुई तो आपका कवच तीस साअ जौ के बदले में एक यहूदी के यहां रेहन रखा हुआ था । –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने सुफ़्फ़ह वालों में से सत्तर ऐसे व्यक्तियों को देखा है जिनमें से किसी के पास बड़ी चादर नहीं थी । उनके पास या तो तहबंद होता या एक कपड़ा जिसे वे अपनी गर्दन से बांध लेते । उनमें से किसी का कपड़ा आधी पिंडलियों तक पहुंचता और किसी का टखुनों तक और वह अपने हाथ से कपड़े को समेटे रखते कि कहीं उनके शरीर का वह हिस्सा न खुल जाए जिसको छुपाना ज़रूरी है । –बुख़ारी

● हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) कहते हैं कि हम अल्लाह के रसूल के साथ बैठे हुए थे कि अंसार में से एक व्यक्ति आया । उसने आपको सलाम किया और फिर वह अंसारी वापस पलटा, तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''ऐ अंसारी भाई, मेरे भाई साअद बिन उबादह (रज़ि॰) का क्या हाल है ?'' उन्होंने कहा कि ठीक हैं । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''तुममें से कौन उनकी बीमारपुर्सी के लिए चलेगा ?'' फिर आप खड़े हो गये और हम भी आपके साथ खड़े हुए । हम लोग दस से कुछ ज़्यादा ही व्यक्ति थे । न तो हमारे पास जूते थे और न मोज़े, न टोपियां और न क़मीज़ें । हम चटियल ज़मीन पर चलते रहे यहां तक कि हज़रत साअद (रज़ि॰) के यहां पहुंच गये । उनके (पास खड़े) लोग पीछे हट गये और अल्लाह के रसूल और आपके सहाबा जो आपके साथ थे वे उनके क़रीब हो गये ।

–मुस्लिम

● हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : ''तुममें सबसे अच्छे मेरे समय के लोग हैं । फिर वे जो उनके बाद आएंगे और फिर वे जो उनके बाद आएंगे ।'' हज़रत इमरान (रज़ि॰) कहते हैं कि मुझे याद नहीं कि नबी (सल्ल॰) ने यह बात दो बार कही या तीन बार कही । (फिर आप सल्ल॰ ने कहा) : ''फिर उनके बाद वे लोग आएंगे जो ग़वाही देंगे हालांकि उनसे गवाही ली नहीं जाएगी । वे ख़यानत (विश्वासघात) करेंगे, और उन पर विश्वास नहीं किया जाएगा । वे नज़्र मानेंगे और उसको पूरा नहीं करेंगे और उनमें मोटापा ज़ाहिर होगा ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू उमामह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''ऐ आदम के बेटे, तुम्हारे पास तुम्हारी अपनी आवश्यकता से अधिक जो माल हो उसे (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो, तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है और यदि तुम उसे रोकोगे, तो यह तुम्हारे लिए बुरा है । अलबत्ता आवश्यकता के अनुसार अपने पास माल रखने में तुम निन्दा के पात्र न होगे और (ख़र्च करना) आरंभ करो उनसे जो तुम पर आश्रित हैं ।''

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

दूर हों न्याय के मार्ग की रुकावटें

भारतीय लोकतंत्र के अपने फ़ायदे हैं, लेकिन इसके नुक़सानों की भी एक सूची है । अगर यह भीड़तंत्र बन जाए तो सूची भी बढ़ जाती है । सामान्यत: न्याय का प्रश्न इस सूची में उल्लेखनीय विषयों में सम्मिलित हो जाता है । व्यवहार में अक्सर यह दिखायी पड़ता है कि सामर्थ्यवान दोषमुक्त हो जाता है चाहे वह कितना ही बड़ा अपराध कर गुज़रे–सारा दोष बल्कि उसका ठीकरा सामर्थ्यहीन पर फूटता है । पुलिस का इसमें एक 'ख़ास रोल' दीखता है । वह सामर्थ्यवान के इशारे पर नाचती है और स्वयं में अपराधी नज़र आती है । लगभग तीस वर्ष पूर्व इलाहाबाद हाईकोर्ट के विद्वान न्यायाधीश आनन्द नारायण मुल्ला ने कहा था कि 'पुलिस वर्दीधारी गुंडों का सर्वाधिक संगठित गिरोह है ।' आज भी इसकी कार्य-प्रणाली और गतिविधियों को देखकर कोई भी व्यक्ति इस नतीजे पर पहुंच सकता है कि जितने भी असामाजिक कार्य हो सकते हैं, उन्हें पुलिस किसी न किसी रूप में करती और करवाती है । वह न्याय प्रक्रिया को अंतिम सीमा तक बाधित करती है । वह कभी राजनेताओं से सांठ-गांठ करके (वैसे राजनेता स्वयं पुलिस का दुरुपयोग करने पर तत्पर रहते हैं) अपनी स्थिति को मज़बूत करती है, तो कभी रातोंरात मालदार बनने की भौतिकवादी लालसा के फेर में पड़कर धन कमाने के लिए अपराधियों का भी सहारा लेती है । यह बात भी शत-प्रतिशत सही है कि ग़ैर-क़ानूनी कामों में वह प्रत्यक्ष रूप से भाग लेती है, फिर भी अपराधियों की श्रेणी में नहीं आती, क्योंकि उस पर मामले प्राय: नहीं चलते ।

निर्दोष व्यक्तियों को सताना और उन्हें कोपभाजित करना पुलिस का नित्य-कर्म बनता जा रहा है । अपराधियों के उससे तो घनिष्ठ संबंध होते ही हैं, अत: भोली-भाली जनता ही पुलिस और अपराधियों की हरकतों का शिकार होती है । राजनेताओं का बाल भी बांका नहीं होता । वे कुछ अपवादों को छोड़कर ग़ैर-क़ानूनी गतिविधियों में लिप्त होकर भी क़ानून की नज़र में निर्दोष बने रहते हैं ! कारण, पुलिस उन पर कोई कार्रवाई नहीं करती । मुंबई का ठाकरे 'परिवार' हो या संघ का पुराना 'परिवार' पुलिस की नज़र में क़ानून से बाहर है, चाहे कितने ही गंभीर अपराध करे ! किसी जांच-रिपोर्ट और प्राथमिकी एवं प्रक्रिया का इन 'परिवारों' पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । वैसे हमारे देश में अक्सर दो पैमाने काम करते दिखायी पड़ते हैं । जब कोई प्रभावशाली या समृद्धिशाली आदमी कोई छोटा-बड़ा संज्ञेय अपराध करता है, तो सामान्यत: वह बच निकलता है । बड़े-बड़े कांडों के सूत्रधारों और सरग़नाओं के चेहरों पर शिकन तक नहीं होती । दूसरी ओर कमज़ोर वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग विशेष कर मुसलमानों को झूठे मामलों में फंसा दिया जाता है, जहां से बच निकलने की राह नहीं होती । अपराध के लिए दंड तो मिलना चाहिए, वह भी शिक्षाप्रद दंड, ताकि अपराधी दोबारा अपराध करने का दुस्साहस न कर सके और वह अपराध-कर्म से हतोत्साहित हो जाए । इस्लाम की शिक्षा है कि सन्देह की स्थिति में दंड न दिया जाए । अत: हमारे देश में न्याय की राह में जो रुकावटें हैं, उनको दूर करने के लिए गंभीर प्रयास अपेक्षित है । इस दिशा में पुलिस की कार्य-प्रणाली में सुधार लाने की प्राथमिक आवश्यकता है ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

• दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला • 93 वर्षों की सेवाएं • बहुत से विभाग • शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक • हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक • हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट • पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी • कंप्यूटर की भी शिक्षा • किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष • कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

• जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें-उदाहरण के लिए • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • क़ुरबानी की खाल • एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च • अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

• याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप ख़ुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें-THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN GA/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 • Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

हज़रत रूबैया बिन्त नज़र (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) का ताल्लुक़ अंसार के सबसे प्रतिष्ठित ख़ानदान बनू नज्जार से था । आपके पिता का नाम नज़र बिन ज़मज़म था । जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि॰) आपके सगे भाई और हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि॰) आपके सगे भतीजा थे ।

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) का निकाह अपने ही ख़ानदान के एक व्यक्ति सुराक़ा बिन हारिस से हुआ । सुराक़ा की मृत्यु हिजरत से पहले ही हो गयी थी इसलिए उन्हें इस्लाम क़ुबूल करने का अवसर न मिल सका । लेकिन सुराक़ा से हज़रत रूबैया (रज़ि॰) को एक बेटा हुआ जिसका नाम हारिसा था । हज़रत रूबैया (रज़ि॰) और उनके बेटे हज़रत हारिसा (रज़ि॰) ने हिजरत से कुछ दिन पहले (या हिजरत के तुरंत बाद) इस्लाम क़ुबूल कर लिया था ।

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) अपने बेटे हारिसा (रज़ि॰) को बहुत चाहती थीं और अपने यतीम बेटे का पालन-पोषण इतनी तन्मयता और दिल लगाकर किया कि बच्चे को बाप की कमी महसूस न होने दी । हज़रत हारिसा (रज़ि॰) भी अपनी मां के बहुत आज्ञाकारी बेटे थे और हर समय मां की सेवा में लगे रहते थे ।

सन 2 हिजरी में जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बद्र की जंग के लिए रवाना हुए तो हज़रत हारिसा (रज़ि॰) भी आप (सल्ल॰) के साथ युद्ध के लिए निकल पड़े । मैदान जंग में हज़रत हारिसा (रज़ि॰) हौज़ के कनारे खड़े थे और पानी पीना ही चाहते थे कि हब्बान बिन अर्क़ा नाम के एक मुश्रिक ने ताक कर उन पर तीर चलाया । तीर उनकी गर्दन में लगा और आर-पार हो गया और उसी तीर की वजह से वे शहीद हो गये ।

हज़रत हारिसा (रज़ि॰) की शहादत की ख़बर सुनकर हज़रत रूबैया (रज़ि॰) को सख़्त सदमा पहुंचा लेकिन उन्होंने असाधारण धैर्य एवं संयम का सबूत दिया । जब अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जंगे बद्र के बाद मदीना मुनव्वरा वापस हुए तो हज़रत रूबैया (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुईं और कहा :

"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! हारिसा मेरा बहुत ही आज्ञाकारी एवं प्रिय बेटा था । उसकी जुदाई का जिस क़द्र सदमा मेरे दिल पर है उसको आप ख़ूब जानते हैं । मैंने चाहा था कि उसके ग़म में मातम करूं, रोऊं, चिल्लाऊं, लेकिन फिर सोचा कि जब तक आप से यह बात न पूछ लूं कि हारिसा (रज़ि॰) अब किस हाल में है, ख़ामोश रहूंगी । यदि वे जन्नत में हैं तो सब्र करूंगी और यदि वे जहन्नम में हैं तो अल्लाह देखेगा कि मैं उसके ग़म में अपना क्या हाल करती हूं ।"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "यह तुम क्या कह रही हो ? हारिसा (रज़ि॰) तो जन्नतुल फ़िरदौस में हैं ।"

यह सुनकर हज़रत रूबैया (रज़ि॰) ख़ुशी से चीख़ पड़ीं और अनायास ही उनकी ज़ुबान से निकल पड़ा : "वाह ! वाह ! ऐ हारिसा ।"

उसके बाद उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को संबोधित करते हुए कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! अब मैं हारिसा के लिए कभी न रोऊंगी ।"

***

सही बुख़ारी में हज़रत रूबैया (रज़ि॰) के बारे में एक और घटना का उल्लेख मिलता है । एक बार हज़रत रूबैया (रज़ि॰) के हाथ से एक अंसारी लड़की का दांत टूट गया । लड़की के ख़ानदान वालों ने क़िसास की मांग की । आप (सल्ल॰) ने उस लड़की के हक़ में फ़ैसला सुना दिया । आप (सल्ल॰) ने कहा : "दांत के बदले दांत और जान के बदले जान ही ख़ुदाई क़ानून है ।"

हज़रत रूबैया (रज़ि॰) के भाई हज़रत अनस बिन नज़र (रज़ि॰) भी वहां पर मौजूद थे । वे बहन की मुहब्बत के जोश में बोल उठे ।

"ख़ुदा की क़सम ! रूबैया (रज़ि॰) का दांत न तोड़ा जाएगा ।"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "भई, ख़ुदा का आदेश तो यही है । हां, यदि मुद्दई (यानी वह लड़की) दैत स्वीकार

कर ले तो क़िसास टल सकता है ।''

अल्लाह का करना लड़की के परिजन क़िसास लेने पर राज़ी हो गये और हज़रत रूबैया (रज़ि॰) का दांत टूटने से बच गया । इसी अवसर पर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया : ''अल्लाह के कुछ नेक बन्दे ऐसे हैं कि जब किसी बात पर क़सम खा बैठते हैं तो अल्लाह उनकी क़सम पूरी कर देता है ।''

2. हज़रत ख़लीदा बिन्त क़ैस (रज़ि॰)

हज़रत ख़लीदा बिन क़ैस (रज़ि॰) अंसार की उन महिलाओं में से हैं जिन्होंने हिजरते नबवी से पहले ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया था । आपका निक़ाह मशहूर सहाबी हज़रत बराअ् बिन मारूर अंसारी से हुआ । हज़रत बराअ् ख़ज़रज क़बीला के ख़ानदान बनू सलमा के रईस थे ।

हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) को एक बेटा बिशर (रज़ि॰) और एक बेटी सलाफ़ा (रज़ि॰) थी । इन दोनों को सहाबी-ए-रसूल (सल्ल॰) होने का सम्मान प्राप्त है । बिशर (रज़ि॰) बैअते उक़्बा कबीरा में अपने पिता हज़रत बराअ् (रज़ि॰) के साथ शामिल थे । बाप बेटे ने इस बैअत से पहले ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया था । हज़रत बराअ् बिन मारूर ने हिजरते नबवी से केवल एक महीना पहले वफ़ात पायी ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जब मदीना मुनव्वरा पहुंचे तो आपने हज़रत बिशर (रज़ि॰) को अपने पिता की जगह बनू सलमा का सरदार मुक़र्रर किया । ख़ैबर की जंग में हज़रत बिशर (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) के साथ थे । इसी युद्ध के मौक़े पर आप (सल्ल॰) को बकरी के गोश्त में ज़हर दिया गया तो उसके खाने वालों में आप (सल्ल॰) के अलावा हज़रत बिशर (रज़ि॰) भी थे । इसी ज़हर के प्रभाव से उनका इन्तिक़ाल हो गया ।

बयान किया जाता है कि जब आप (सल्ल॰) का आख़िरी वक़्त आ गया और हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की अयादत को उनकी सेवा में पहुंचीं और आप (सल्ल॰) के मुबारक शरीर पर हाथ रखा तो अनायास ही कह उठीं : ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! ऐसा तेज़ बुख़ार मैंने किसी का नहीं देखा ।''

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

''जिस तरह हमको दूसरों से ज़्यादा अज्र दिया जाता है, उसी तरह तकलीफ़ों की शिद्दत भी दूसरों से दोगुनी होती है ।'' फिर पूछा : ''लोगों को मेरी बीमारी के बारे में क्या ख़्याल है ?''

हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) ने जवाब दिया कि उनका गुमान है कि आप (सल्ल॰) को 'ज़ातुल जुन्ब' पसली का दर्द है ।

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया : या अल्लाह ! इस बला से मुझे सुरक्षित रखना । यह तो उस ज़हर का प्रभाव है जो मैंने और तेरे बेटे (हज़रत बिशर रज़ि॰) ने ख़ैबर में खाया था । यह अन्दर ही अन्दर काम करता रहा ।''

अल्लामा इब्न साअद (रह॰) कहते हैं कि एक बार हज़रत ख़लीदा (रज़ि॰) ने आप (सल्ल॰) से पूछा :

''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! क्या मुर्दे भी पहचाने जाते हैं ?''

आप (सल्ल॰) ने कहा : ''पाक आत्मा तो जन्नत में हरी चिड़िया के समान हैं । यदि चिड़िया पेड़ के पत्तों में पहचानी जाती है तो वह भी पहचाने जा सकते हैं ।''

हज़रत ख़लीदा बिन्त क़ैस (रज़ि॰) से कुछ और हदीसें भी उल्लिखित हैं । उनकी बेटी सलाफ़ा (रज़ि॰) मशहूर सहाबी हज़रत अबू क़तादा (रज़ि॰) की पत्नी थीं ।

मारूफ़
शू पैलेस
जी॰ई॰ रोड, बस स्टैंड, बी॰एम॰वाई॰
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस॰के॰ इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

क्या इस्लाम तलवार द्वारा फैला ?

❖ राजेन्द्र नारायण लाल

संसार के सब धर्मों में इस्लाम की एक विशेषता यह भी है कि इसके विरुद्ध जितना भ्रष्ट प्रचार हुआ किसी अन्य धर्म के विरुद्ध नहीं हुआ । सबसे पहले तो महाईशदूत मुहम्मद साहब की जाति क़ुरैश ही ने इस्लाम का विरोध किया और अन्य कई साधनों के साथ भ्रष्ट प्रचार और अत्याचार का साधन अपनाया । यह भी इस्लाम की एक विशेषता ही है कि उसके विरुद्ध जितना प्रचार हुआ वह उतना ही फैलता और उन्नति करता गया तथा यह भी एक प्रमाण है–इस्लाम के ईश्वरीय सत्य-धर्म होने का । इस्लाम के विरुद्ध जितने प्रकार के प्रचार किये गये हैं और किये जाते हैं उनमें सबसे उग्र प्रचार यह है कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला, यदि ऐसा नहीं है तो संसार में अनेक धर्मों के होते हुए इस्लाम चमत्कारी रूप से संसार में कैसे फैल गया ? इस प्रश्न या शंका का संक्षिप्त उत्तर तो यह है कि जिस काल में इस्लाम का उदय हुआ उन धर्मों के आचरणहीन अनुयायियों ने धर्म को भी भ्रष्ट कर दिया था । अत: मानव कल्याण हेतु ईश्वर की इच्छा द्वारा इस्लाम सफल हुआ और संसार में फैला, इसका साक्षी इतिहास है ।'

मुहम्मद साहब के ईशदूत पद पर नियुक्त होने के पहले अरब जाति सर्वथा धर्म भ्रष्ट तथा पापाचारों का साकार रूप थी, ऐसी पतित जाति को धर्मात्मा और सुकर्मी बनाने के लिए सर्वथा साधनहीन तथा नि:सहाय होते हुए भी ईश्वर की प्रेरणा से मुहम्मद साहब अकेले खड़े हो गये । जिनके हृदय शुद्ध थे, वे आपके उपदेश से इस्लाम ग्रहण करने लगे किन्तु आपकी जाति के सरदारों को यह साहस न था कि वे अपने पूर्वजों का धर्म त्यागकर आपको अपना धर्म गुरु मान लें और आपकी अधीनता स्वीकार कर लें । आपके धर्म प्रचार के विरुद्ध प्रतिरोधक बनकर खड़े हो गये और आप पर और आपके अनुयायियों पर असह्य अत्याचार करने लगे, यहां तक कि अत्याचार-पीड़ित मुसलमानों का एक समूह हिजरत अर्थात धर्म के लिए देश त्याग करके हबशा चला गया । मक्का में अत्याचार चक्र चलता रहा, अंतत: मुहम्मद साहब और मुसलमानों का अपनी जन्मभूमि में रहना असंभव हो गया था ।

इस्लाम को तलवार की शक्ति से प्रसारित होना बताने वाले इस तथ्य से अवगत होंगे कि अरब मुसलमानों के ग़ैर-मुस्लिम विजेता तातारियों ने विजय के बाद विजित अरबों का इस्लामी धर्म स्वयं ही स्वीकार कर लिया । ऐसी विचित्र घटना कैसे घट गयी ? तलवार की शक्ति तो विजेताओं के पास थी वह इस्लाम से विजित क्यों हो गयी ? इस्लाम के विलक्षण प्रसार पर आरोप लगाने वालों के पास इसका क्या उत्तर है ?

मक्का में तो इस्लाम की यह अवस्था थी, अब देखिए मदीना में इस्लाम कैसे पहुंच जाता है और घर-घर फैल जाता है । इसी से अनुमान किया जा सकता है कि संसार में इस्लाम कैसे फैला ? हुआ यह कि मदीना निवासियों का एक समूह हज करने मक्का आया, मुहम्मद साहब ने उनको इस्लाम का उपदेश दिया और उन्होंने इस्लाम ग्रहण कर लिया । दूसरे साल कुछ और निवासी हज करने आये और मुहम्मद साहब के उपदेश से वे भी मुसलमान हो गये । इनकी प्रार्थना पर इनकी शिक्षा के लिए मुहम्मद साहब ने अपने एक सहचर को मदीना भेज दिया । इनके द्वारा वहां घर-घर इस्लाम फैल गया । तीसरे वर्ष हज के अवसर पर मदीना के मुसलमानों का एक भारी समूह मक्का आया । उसने मुहम्मद साहब के समक्ष प्रस्ताव रखा कि आप और मुसलमान मक्का त्याग कर मदीना चले आएं, हम जान व माल हर प्रकार से आपकी और मुसलमानों की सहायता और रक्षा करेंगे । आपने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और मुसलमानों को मदीना जाने की आज्ञा दे दी और वे मदीना चले गये । हबशा की हिजरत के बाद यह दूसरी ऐतिहासिक

हिजरत थी । मुहम्मद साहब को तो रात के समय इस अवस्था में हिजरत करनी पड़ी थी कि शत्रु आपकी हत्या के लिए आपका घर घेरे खड़े थे परन्तु आप ईश्वर की रक्षा में घर से सुरक्षित निकल आये ।[2]

यह है इस्लाम का 1300 वर्ष का इतिहास । फिर यह स्वीकार करने में कौन-सा तर्क बाधक होता है कि इस्लाम अपनी सत्यता और नैतिकता की शक्ति तथा मुहम्मद साहब के दिव्य व्यक्तित्व के प्रभाव द्वारा फैला । युद्ध तो शत्रुओं ने आप पर लादा था । जिस प्रकार रक्षार्थ देश-त्याग करना पड़ा था उसी प्रकार रक्षार्थ युद्ध पर भी बाध्य होना पड़ा । मुहम्मद साहब और मुसलमानों के देश-त्याग के बाद भी मक्का निवासियों की शत्रुता-अग्नि शांत न हुई, उन्होंने मदीने पर आक्रमण आरंभ कर दिया । अब धर्म रक्षा ही का प्रश्न न था, प्राण रक्षा का प्रश्न भी उपस्थित हो गया था । इसी परिस्थिति में ईश्वर की ओर से मुसलमानों को रक्षार्थ जिहाद की अनुमति मिली ।

इस्लाम विरोधी आक्षेप करते हैं कि मुहम्मद साहब का आन्दोलन मक्का में पूर्णरूपेण शान्तिमय था, परन्तु मदीने में उनको शक्ति प्राप्त हुई तो उन्होंने अपनी नीति बदल दी । यह कितना अन्यायपूर्ण आक्षेप है ? क्या इस परिस्थिति में भी मुहम्मद साहब को मुसलमानों से कहना चाहिए था कि "अपनी और धर्म की रक्षा मत करो । गर्दनें कटवा दो ?" रक्षार्थ युद्ध किस धर्म और किस राजनीति में वर्जित है ? रामचन्द्र जी ने तो पत्नी के लिए और कृष्ण जी ने भूमि के लिए युद्ध किया । रामचन्द्र जी के युद्ध से देश और राष्ट्र का कौन-सा कल्याण हुआ ? कृष्ण जी के युद्ध के फलस्वरूप उनके संबंधियों और अर्जुन के परिवार का संहार हो गया और राष्ट्र की शक्ति क्षीण हो गयी । मुहम्मद साहब के युद्ध के द्वारा उनकी जाति के बहुत थोड़े लोग मारे गये । मक्का विजय के समय मुहम्मद साहब ने अपने 21 वर्ष के शत्रुओं को जिनमें बड़े-बड़े अपराधी भी थे क्षमा कर दिया, जाति भी सुरक्षित रह गयी, इस्लाम भी स्थापित हो गया और क़बीलों-क़बीलों में बंटा हुआ देश इस्लाम की व्यवस्था में बंधकर सुदृढ़ हो गया ।

इस्लाम को तलवार की शक्ति से प्रसारित होना बताने वाले इस तथ्य से अवगत होंगे कि अरब मुसलमानों के ग़ैर-मुस्लिम विजेता तातारियों ने विजय के बाद विजित अरबों का इस्लामी धर्म स्वयं ही स्वीकार कर लिया । ऐसी विचित्र घटना कैसे घट गयी ? तलवार की शक्ति तो विजेताओं के पास थी वह इस्लाम से विजित क्यों हो गयी ? इस्लाम के विलक्षण प्रसार पर आरोप लगाने वालों के पास इसका क्या उत्तर है ?

मंगोलों की बर्बरता का निराकरण इस्लाम के अलावा किस धर्म के पास था ? सारा संसार मंगोलों की बर्बरता और अत्याचार से थर-थर कांपता था । उनको सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढ़ाकर मनुष्य बना देने का श्रेय केवल इस्लाम को प्राप्त है । क्या चीन, हिन्देशिया[3] और अफ़्रीक़ा में इस्लाम का प्रसार तलवार के द्वारा हुआ ? इतिहास तो यह नहीं बताता ।

हो सकता है कि मध्य काल में यूरोप में भारत में या अन्य देशों में जो युद्ध हुए और जिनमें मुसलमान एक पक्ष थे और विजयी हुए, परिणामतः मुस्लिम समाज स्थापित हुए, विजित ग़ैर-मुस्लिमों पर अत्याचार हुए हों और इस्लाम के राज्यधर्म होने से कुछ अत्युत्साही और अविवेकी मुसलमानों ने बल प्रयोग किया हो किन्तु इस प्रकार के युद्धजन्य

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रातः 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रातः 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

दुर्घटनाओं और अविवेकपूर्ण अत्युत्साह को इस्लाम के खाते में रखना नितांत अन्याय है । ये युद्ध तो उसी प्रकार के थे जैसे मुसलमानों-मुसलमानों के बीच हिन्दुओं-हिन्दुओं के बीच ईसाइयों-ईसाइयों के बीच, राजपूतों के पारस्परिक युद्ध, मराठा से मराठा के युद्ध, मुग़ल और पठानों के युद्ध ।

यदि हम इन युद्धों के राजनीतिक कारणों से विमुख होकर हिन्दुओं और मुसलमानों के युद्ध का कारण इस्लाम को ठहराएं तो क्या यह वास्तविकता के सर्वथा विरुद्ध न होगा ।

भारत में ऐसे युद्ध अपवाद स्वरूप ही हैं जिनमें एक पक्ष विशुद्ध मुसलमान और दूसरा पक्ष विशुद्ध हिन्दू रहा हो । आरंभ में चाहे ऐसा हुआ हो किन्तु मुसलमानों के स्थायी रूप से भारत में निवास कर लेने के बाद ऐसा नहीं हुआ । सन 1565 ई० के तालीकोट के युद्ध में, जो बहमनी मुसलमान राज्यों और हिन्दू राज्य विजयनगर के बीच हुआ, मुसलमानों द्वारा अवश्य बड़ा विनाश हुआ किन्तु उसके पूर्व विजय नगर के हिन्दू राजा ने अहमदनगर के मुसलमान राज्य को बर्बाद कर दिया था और मुसलमानों पर घोर अत्याचार किया था । उसी की प्रतिक्रिया तालीकोट में हुई ।

इस्लाम पर बलात् धर्म परिवर्तन का आरोप लगाने वाले इस ऐतिहासिक तथ्य को दृष्टिगत रखें कि मैक्सिको में ईसाइयों द्वारा लाखों ग़ैर-ईसाई मारे गये, तथा अपनी जन्मभूमि से बौद्ध धर्म का लोप स्वत: ही नहीं हो गया था बल्कि ब्राह्मण पुष्यमित्र गुण द्वारा बौद्धों का घोर उत्पीड़न भी किया गया था ।

ईसाइयों का अपने ही सम्प्रदाय को जीवित जलाना विशेषकर पुर्तगालियों का, धार्मिक उन्माद और ईसाई मिशनरियों द्वारा कुत्सित प्रलोभनों से धर्म परिवर्तन केवल साम्राज्यवादी प्रेरणा से है । गोरे ईसाइयों का काले ईसाइयों पर घोर अत्याचार, हिन्दुओं का अपने सहधर्मी हरिजनों पर परम्परागत अत्याचार यह सब (तथाकथित) 'मुस्लिम धर्मोन्माद' से कहीं बढ़कर है । इस्लाम का प्रसार उसकी सादगी, शुद्ध समतावाद तथा नैतिक शक्ति से हुआ ।

व्याख्या

1. जिस समय मक्कानिवासी अपनी पूरी शक्ति से युद्ध द्वारा इस्लाम और मुसलमानों के उन्मूलन का प्रयास कर रहे थे, यह ईश्वरीय वाणी अवतरीत हुई–

"विरोधी अपने मुंह की फूंकों से ईश्वर के प्रकाश को बुझाना चाहते हैं और ईश्वर अपने प्रकाश को पूर्णरूप से फैला कर रहेगा चाहे वह विधर्मियों को कितना ही नापसन्द हो । वही है जिसने अपने सन्देष्टा को सत्य मार्ग और सत्य धर्म के साथ भेजा है, ताकि उसे समस्त धर्मों पर सत्तावान कर दे चाहे वह कर्म बहुदेववादियों को कितना ही नापसन्द हो ।" (कुरआन, 61:8-9)

अरब में बहुदेववादियों के अतिरिक्त यहूदी और ईसाई भी थे । ये दोनों सम्प्रदाय इस्लाम से द्वेष रखते थे । ईसाई देशों ने ही यह भ्रष्ट प्रचार किया कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला लेकिन आगे चलकर उन्हीं देश में ऐसे विद्वान भी हुए जिन्होंने इस आरोप का खंडन किया । हमारे देश में भी दोनों प्रकार के आरोपकर्ता और आरोपों के खंडनकर्ता विद्वान हुए हैं ।

2. मक्का से मुसलमानों की कोई तलवार मदीना नहीं गयी थी । यह वह समय था जब मक्का के मुसलमान स्वयं पीड़ित व अत्याचार-ग्रस्त थे । जो मुसलमान मक्का से मदीना हिजरत कर के गये उनके हाथ में भी तलवार नहीं थी, क्योंकि वे वहां शरणार्थी बनकर गये थे, सैनिक बनकर नहीं । फिर भी मदीना में इस्लाम घर-घर फैल जाता है ।

3. दक्षिण-पूर्व एशिया के देश ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are Construction of Prayer Hall & Purchase one more school bus, Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(Prof Z.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इंन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं॰

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

प्राकृतिक धर्म–इस्लाम

❖ मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी

इस्लाम के विभिन्न गुणों एवं विशेषताओं में से एक प्रमुख विशेषता उसका प्रकृति के अनुकूल होना है । अर्थात यह धर्म मानव स्वभाव के अनुरूप है । मानव स्वभाव को अनदेखा करके इसमें कोई आदेश नहीं दिया गया है और न ही मनुष्य की स्वाभाविक मांगों को कुचला गया है । अल्लाह कहता है–

''ऐ नबी एकाग्र होकर अपना मुख इस धर्म की दिशा में जमा दो, क़ायम हो जाओ उस स्वभाव पर जिस पर अल्लाह ने मानवों को पैदा किया है, अल्लाह की बनायी हुई संरचना बदली नहीं जा सकती । यही बिल्कुल सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं ।''

(क़ुरआन, 30:30)

इस आयत के विषय में इमाम इब्ने तैमिया लिखत हैं कि इस्लाम में इसमें सभी मनुष्यों की रचना का उल्लेख है और इसमें अल्लाह ने सीधे और ठीक धर्म के अनुसरण का आदेश दिया है, जो प्रकृति के अनुकूल है ।

इस अर्थ की पुष्टि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के इस कथन से होती है–''हर बच्चा प्रकृति पर पैदा होता है, फिर उसके माता-पिता उसको यहूदी, ईसाई या पारसी बना देते हैं, जिस प्रकार जानवर अपने बच्चे को (सही-सलामत) जानवर जन्म देता है । क्या तुमको उनमें कोई नाक या कान कटा नज़र आता है ।'' यह हदीस बयान करने के बाद हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) ने क़ुरआन की इसी आयत (क़ुरआन, 30:30) की तिलावत की । इस हदीस में प्रकृति को यहूदियत ईसाइयत और पारसी धर्म के मुक़ाबले में प्रयोग किया गया है, इससे भी सिद्ध होता है कि प्रकृति का अर्थ इस्लाम है ।

इस हदीस में बच्चे के प्रकृति पर पैदा होने का अर्थ यह नहीं है कि जब वह बच्चा पैदा होता है तो उसे इस्लाम की पहचान प्राप्त होती है और वह एकेश्वरवाद को स्वीकार करने वाला होता है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि बच्चे के भीतर वह शक्ति होती है कि अगर उसके मार्ग में रुकावट नहीं हो तो वह बड़ा होकर अपने पालनहार की पहचान कर ले । ठीक उसी प्रकार जैसे उसके लिए मां का दूध पीना स्वाभाविक काम है, अगर कोई रुकावट नहीं हो तो वह अनिवार्यत: मां का दूध पीएगा ।

प्रकृति से आशय 'इस्लाम' लेने का वास्तविक अर्थ यह है कि इस्लामी शिक्षाएं एकदम प्रकृति के अनुसार हैं, या जो स्वाभाविक मांगें हैं वे इस्लामी शिक्षाओं के अन्तर्गत हैं । अल्लाह के बारे में मनुष्यों का रवैया और धर्मों की शिक्षाएं विभिन्न हैं । कुछ धर्मों में बहुदेववाद की आस्था समा गयी है, लेकिन अगर मानव प्रकृति और उसके मनोविज्ञान के प्रकाश में ध्यान दिया जाए तो एकेश्वरवाद की मान्यता को ही ठीक मानना पड़ेगा, क्योंकि प्रकृति इसी की अपेक्षा करती है । इसे मौलाना जलालुद्दीन उमरी ने बड़ी ही सुन्दर शैली में प्रस्तुत किया है, लिखते हैं–

''ख़ुदा सृष्टि का स्वामी है और यह मनुष्य की प्रकृति है कि वह अपने लिए एक ही स्वामी को पसन्द करता है । उसके निकट दासता की बदतरीन क़िस्म यह है कि वह कई ख़ुदाओं की ख़ुदाई में घिरा रहे और उसकी दासता में किसी का नहीं बल्कि बहुत से स्वामियों का हिस्सा हो । जो व्यक्ति अपने लिए कई ख़ुदाओं को चुनता है वह अपने स्वभाव से युद्ध करता है । वह एक ऐसे मार्ग पर चल रहा है, जिसमें उसकी अन्तरात्मा उसका साथ नहीं देती ।...जब भुकंप आता है तो धरती अपने ख़ज़ाने को उगल देती है, जिन्हें वह अपने सीने में छुपाये रखे होती है, इसी प्रकार मनुष्य की वास्तविक मनोदशा उस समय उभर कर सामने आ जाती है, जब वह किसी संकट में घिर जाता है और सभी आशाएं टूटने लगती हैं ।

इस पहलू से देखिये तो मालूम होगा कि शिर्क (बहुदेववाद) से दुराव मनुष्य की मानसिकता में शामिल है । संकट और कठिनाइयां उससे एकेश्वरवाद की स्वीकारोक्ति कराती हैं । वह अपनी कठिनाइयों में दस सहारे नहीं ढूंढता, बल्कि केवल एक ऐसा मज़बूत सहारा चाहता है, जो उसे हर मुश्किल से मुक्ति दे सके । ...इन्सान की नौका जब भंवर में फंस जाती है और वह हर ओर से निराश होकर एक ईश्वर की ओर मदद का हाथ फैलाता है, तो इसकी घोषणा करता

है कि आराम और शान्ति की स्थिति में उसका बहुत से खुदाओं का मानना झूठ और धोखा है । शिर्क उसका स्वभाव नहीं, बल्कि एक अस्वाभाविक बात है, जो उसके साथ चिपक गयी है ।''

मनुष्य की इस मनोदशा को कुरआन की कई आयतों में बयान किया गया है । एक जगह अल्लाह कहता है :

''जब वे नौका में सवार होते हैं, तो वे अल्लाह को उसके दीन (आज्ञापालन) के लिए निष्ठावान होकर पुकारते हैं किन्तु जब वह उन्हें बचाकर शुष्क भूमि तक ले आता है, तो सहसा (अल्लाह के साथ) साझी ठहराने लगते हैं ।''

(कुरआन, 29:65)

इस्लाम की दूसरी मौलिक आस्था आख़िरत (परलोक) की है । इसका अर्थ यह है कि संसार के इस अस्थाई जीवन के बाद एक स्थाई जीवन है, जिसमें सभी मनुष्यों को उनके अच्छे या बुरे कर्मों का बदला मिलेगा । यह आस्था विभिन्न पहलुओं से प्रकृति के अनुरूप है ।

मानव इतिहास बताता है कि प्राचीनकाल से ही विश्व स्तर पर यह इच्छा मनुष्य के भीतर मौजूद रही है कि इस संसार के जीवन के अलावा एक-दूसरा जीवन हो, जहां वर्तमान जीवन की सीमाओं और कठिनाइयों से छुटकारा मिल सके । दूसरे जीवन की यह कल्पना वास्तव में आख़िरत का एक प्रमाण है । दूसरी बात यह कि संसार में अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी । बार-बार देखा गया है कि एक व्यक्ति बड़े-बड़े अपराध करता, यहां तक कि अकारण लोगों की हत्या कर देता है, मगर संसार में उसे कोई सज़ा नहीं मिलती ।

इसके विपरीत एक व्यक्ति भलाई के मार्ग पर चलता है, मगर वह जीवन भर कठिनाइयों में घिरा रहता है, उसे कभी चैन नहीं मिलता । मनुष्य की प्रकृति और उसके अन्दर की-न्यायप्रियता अपेक्षा करती है कि एक दिन ऐसा अवश्य आये जब सत्य और असत्य अलग-अलग हो जाएं, अपराधी को उसके अपराध का और भले व्यक्ति को उसकी भलाई का बदला मिले । यह स्वाभाविक मांग आख़िरत की आस्था से ही पूरी हो सकती है ।

मनुष्य को बुद्धि एवं विवेक के कारण दूसरे जीवों पर वरीयता प्राप्त है । वह सोच-विचार, कल्पना और अनुमान एवं खोज और आविष्कार की योग्यताएं रखता है, यदि उसकी बुद्धि पर प्रतिबंध लगा दिया जाए, तो यह उसकी प्रकृति को कुचलने जैसा होगा । इस्लाम ने बुद्धि एवं विवेक को विकसित करने की प्रेरणा दी है और बुद्धि एवं विवेक से काम न लेने वाले व्यक्ति की चौपायों से उपमा दी है । अल्लाह का कथन है–

''निश्चय ही अल्लाह की दृष्टि में अत्यंत बुरे प्रकार के जानवर वे बहरे-गूंगे लोग हैं, जो बुद्धि से काम नहीं लेते ।''

(कुरआन, 8:22)

कुरआन में कई जगहों पर ''वे क्यों सोच-विचार नहीं करते'', ''वे क्यों विवेक से काम नहीं लेते'', ''शायद कि तुम चिंतन करो'', ''सोच-विचार करने वाले लोगों के लिए'', ''बुद्धि से काम लेने वालों के लिए'', ''देखने वाले'', ''बुद्धि एवं विवेक वाले'' जैसे शब्द प्रयोग किये गये हैं और बुद्धि एवं चिंतन की ओर बुलाया गया है साथ ही बुद्धि से काम न लेने की भर्त्सना की गयी है । अर्थात इस्लाम ने मनुष्य को अपने स्वभाव पर रहते हुए बुद्धि के प्रयोग के लिए प्रेरित किया है और मूर्खता का चलन अपनाने से रोका है ।

मनुष्य दूसरे प्राणियों से इस दृष्टिकोण से भी अलग और श्रेष्ठ है कि वह परिधान का प्रयोग करता है, जो उसे सर्दी-गर्मी से बचाता है और जो उसकी स्वाभाविक लज्जा की भी मांग है । अल्लाह तआला कहता है :

''हे आदम की संतान हमने तुम पर परिधान उतारा है कि तुम्हारे शरीर के गुप्त अंगों को ढांके और तुम्हारे लिए शरीर की रक्षा और सजावट का साधन भी हो । और उत्तम परिधान धर्मपरायणता का परिधान है । यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है । कदाचित लोग इससे शिक्षा ग्रहण करें ।''

(कुरआन, 7:26)

इसी प्रकार मनुष्य खाद्य सामग्री के प्रयोग में भी दूसरे प्राणियों से अलग और श्रेष्ठ है । वह पवित्र भोजन का प्रयोग करता है, जबकि दूसरे प्राणी इस अन्तर से वंचित हैं । कुरआन में है–

''यह तो हमारी कृपा है कि आदम की संतान को श्रेष्ठता दी और उन्हें भूमि एवं समुद्र में सवारियां प्रदान कीं और उनको पाक चीज़ों से रोज़ी दी और अपने बहुत से पैदा किये हुओं पर स्पष्ट श्रेष्ठता प्रदान की ।''

(कुरआन, 17:70)

मनुष्य की इस विशेषता से अपेक्षा है कि वह अपवित्र चीज़ों के प्रयोग से बचा रहे । यही कारण है कि इस्लाम में

उन सभी चीज़ों को हराम ठहराया गया है, जो मानव स्वभाव के विपरीत हैं । बल्कि अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को खड़ा करने के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह भी ठहराया गया है कि वे पवित्र चीज़ों को हलाल (वैध) और अपवित्र और गन्दी चीज़ों को हराम (वर्जित ठहराएं । अल्लाह कहता है–

''और वह नबी (सल्ल॰) उनके लिए स्वच्छ चीज़ें वैध और अस्वच्छ चीज़ अवैध करता है ।''

(कुरआन, 7:157)

अल्लाह तआला ने सभी प्राणियों को जोड़े-जोड़े पैदा किया और उनके बीच यौन आकर्षण रखा है, जिसके फलस्वरूप उनका वंश जारी रहता है । इस्लाम ने जितने आयोजन से और जितना बल देकर निकाह की प्रेरणा दी है और नवजवान पुरुषों एवं स्त्रियों को निकाह के बंधन में बंध जाने के लिए प्रोत्साहित किया है, उससे भली-भांति यह स्पष्ट होता है कि इस्लाम के निकट यौन आकर्षण कोई घृणास्पद चीज़ नहीं, बल्कि अपेक्षित है । लेकिन हां इस्लाम ने इसे निकाह से प्रतिबंधित किया है । साथ ही इसने इस मामले में मनुष्य की शराफ़त का भी पूरा ध्यान रखा है, अत: इसने ख़ूनी और निकट संबंधियों से निकाह को हराम ठहरा दिया है । कुरआन की सूरह अन-निसा में उन स्त्रियों की सूची प्रस्तुत की गयी है, जिनसे निकाह हराम है । इसके साथ ही व्यभिचार अर्थात बिना निकाह के किसी स्त्री के साथ यौन संबंध स्थापित करने को भी हराम ठहराया गया है । कुरआन में है–

''व्यभिचार के निकट भी न फटको । वह बहुत बुरा कर्म है, और बहुत ही बुरा रास्ता ।'' (कुरआन, 17:32)

व्यभिचार मानव स्वभाव और ग़ैरत के विरुद्ध है, साथ ही यह वंश बिगाड़ने का भी कारण है । व्यभिचार के परिणामस्वरूप उत्पन्न बच्चे को अपने वास्तविक पिता के उत्तराधिकार से वंचित होना पड़ता है । वह समाज में प्रतिष्ठा और अपना स्थान नहीं प्राप्त कर सकता । (जारी)

''अल्लाह उस आदमी के साथ दयालुता का मामला करेगा जो क्रय-विक्रय और क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने में नरमी और शालीनता बरते ।'' (हदीस)

Abdul Malik **9845311911**

UNIQUE CREATIONS

Spl. in Unipole & Structure Hoarding

#4, Bldg NO. 29/35, 1st Main Road,
Opp. Masjid-e-Husna, SRK Garden,
Jayanagar East, Bangalore-560041
E-mail : uniquecreations2008@gmail.com

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

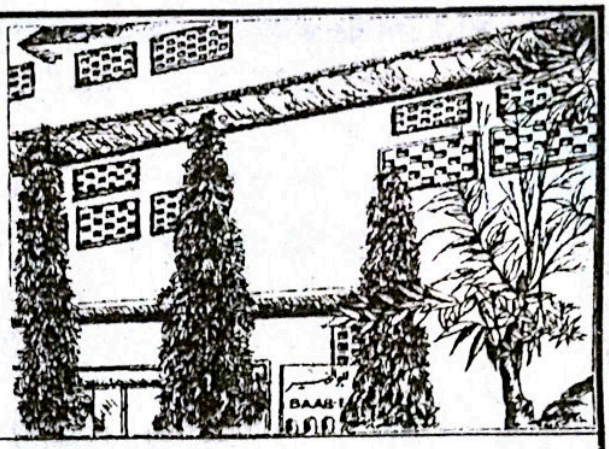

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 24 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई० से 2010 ई० तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

वर्तमान संकट और नैतिकता

❖ सैयद अबुल हसन अली नदवी

मैं रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद विवाद को वर्तमान हौलनाक फ़सादात और दिल दहला देने वाले अत्याचार का एकमात्र कारण नहीं समझता । मेरे नज़दीक यह अफ़सोसनाक बल्कि शर्मनाक घटनाएं एक कारण नहीं बल्कि चार कारणों का प्रतिफल हैं जिनमें आपस में क़रीबी रिश्ता है । उनका क्षेत्रफल अधिक व्यापक, उनकी जड़ें अधिक गहरी हैं और उनका इतिहास अधिक लंबा है, वे निम्नलिखित हैं :

1. साम्प्रदायिक घृणा जिसे अंग्रेज़ी शासन ने अपने हित में और अपनी आवश्यकता साबित करने व न्यायोचित ठहराने के लिए पैदा किया और नियोजित इतिहास और अतिश्योक्ति से परिपूर्ण परम्पराओं के द्वारा उसको पोषित किया । आज़ादी के बाद कुछ एक राजनीतिक पार्टियों ने सत्ता प्राप्ति के लिए इसका बाक़ी रहना ज़रूरी समझा और इससे लाभ उठाने का प्रयास किया ।

2. अत्याचार और अनाचार से नफ़रत का न होना और इन्सानी जान व माल और इज़्ज़त की बेक़ीमती ।

3. अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाने वालों, उसके मुक़ाबले में लामबन्द हो जाने वालों और उसको रोकने के लिए हर प्रकार का ख़तरा मोल लेने वालों की कमी, विशेषकर इस मौक़े पर धार्मिक नेताओं, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और बुद्धिजीवियों का मैदान में न आना और हालात से मुक़ाबला न करना ।

4. सरकार और सत्ता को हर माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश करने और इसके लिए हर नियम व सिद्धांत तथा सच्चाई और इन्साफ़ को बलि चढ़ा देने की प्रवृत्ति फिर चुनाव का वह तरीक़ा जिसमें हर नियम व आचरण की अनदेखी कर और देश हित की अनदेखी करके अधिक से अधिक लोगों का समर्थन प्राप्त हो सके ।

हर देश और हर युग तथा प्रत्येक धर्म व समाज का इतिहास बताता है कि हर देश व समाज बारम्बार बदनीयत (बुरी निष्ठा), विकारयुक्त तथा विखंडन पसन्द नेतृत्व साज़िशों का शिकार हुए हैं और ऐसा दिखने लगा है कि मानवता समाप्त होने को है, वह बहुत जल्दी दम तोड़ देगी । किन्तु यही इतिहास बताता है कि ऐसे हर मौक़े पर ऐसे कुछ लोग मैदान में आ गये जिन्होंने ज़माने की आंखों में आंखें डालकर हालात का मुक़ाबला किया । इन ग़लत नेतृत्वों और पथप्रदर्शकों के सामने बाधा बनकर खड़े हो गये और जान की बाज़ी लगा दी । मानव सभ्यता का क्रम जो अभी तक क़ायम है मात्र पीढ़ियों का क्रम नहीं, मानवीय गुणों का क्रम है जो हर युग में रहा है । मानवीय भावनाओं, शरीफ़ाना जज़्बात, उच्च उद्देश्य, नैतिक शिक्षा और इनके अस्तित्व तथा विकास के लिए हिम्मत व उत्साह और त्याग की भावना जो इस समय तक चली आ रही है, यह वास्तव में उन्हीं लोगों के प्रति अनुग्रहीत है जो बिगड़े हुए हालात में मैदान में आये और उन बिगड़े हुए हालात से पंजा लड़ाया और प्राय: ज़माने की कलाई (मैं यह नहीं कहता कि तोड़ दी) मोड़ दी । इन्हीं लोगों की बदौलत इन्सानियत ज़िन्दा है और अख़्लाक़ व शराफ़त का भ्रम क़ायम है ।

इन्सानियत की खेती हर ज़माने में खाद चाहती है । जिस प्रकार फ़र्टीलाइज़र्स भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं, पैदावार को ताक़त प्रदान करते हैं उसी प्रकार इन्सानियत की खेती के लिए भी खाद की ज़रूरत है । इन्सानियत की खेती के लिए खाद व्यक्तिगत और पार्टी इन्टेरेस्ट्स हैं, उद्देश्य व लाभ की यह खाद जब उस खेती में पड़ जाती है तो वह खेती लहलहा उठती है, ज़मीन अपनी पैदावार बढ़ा देती है, इन्सानियत की झोली भर जाती है और उसको जीवन की एक नयी क़िस्म मिल जाती है मानवता के अस्तित्व की सच्ची पक्की ज़मानत वे वीर बांकुरे और जांबाज़ व सहृदय इन्सान हैं जो चोट खाये दिल रखते हैं, जो हालात का सामना करते हैं, चोट को बर्दाश्त करते हैं और इतिहास के धारे को बदलने के लिए जान की बाज़ी लगा देते हैं ।

किसी समाज के लिए सबसे बड़ा ख़तरा यह है कि उसमें ज़ुल्म का मिज़ाज पैदा हो जाए, फिर इससे ज़्यादा ख़तरनाक बात यह है कि उसको नापसन्द करने वाले इतने कम और छिपे हुए लोग हों जो दूरबीन तो दूरबीन खुर्दबीन से भी नज़र न आएं । घर में बैठकर नापसन्द करने वाले तो मिल जाएंगे जो चार-छह आदमियों की मौजूदगी में कह दें

कि यह ठीक नहीं हो रहा है, लेकिन जो अपनी नापसन्दीदगी का ऐलान करें और उसको लेकर मैदान में आ जाएं वह उंगलियों पर गिने जा सकते हैं ।

जब जुल्म के लिए मापदंड यह बन गया कि ज़ालिम कौन है ? ज़ालिम (अत्याचारी) की राष्ट्रीयता ज़ालिम का समुदाय क्या है ? ज़ालिम की भाषा क्या है ? उसका मज़हब क्या है ? तो इन्सानियत के लिए एक बड़ा ख़तरा पैदा हो जाता है । जब आदमी अख़बार में किसी फ़साद किसी जुल्म व ज़्यादती की ख़बर देखे तो पहले उसकी निगाहें यह तलाश करें कि किस समुदाय के किस फ़िर्के की तरफ़ से यह बात शुरू हुई ? इसमें नुक़सान किस फ़िर्के को ज़्यादा पहुंचा ? जब जुल्म को नापने और ज़ालिम होने के फ़ैसले का यह पैमाना बन जाता है तो उस समय समाज को कोई ताक़त और बड़ी-बड़ी रचनात्मक योजनाएं भी नहीं बचा सकतीं ।

जब किसी इन्सान और समुदाय की साज़िश अथवा बिखराव पसन्द ताक़त का सोसाइटी शिकार होती है और किसी समाज को इनका सामना होता है तो इतिहास बताता है कि उस समय प्राय: दो वर्ग के लोग मैदान में आते हैं–एक बुद्धिजीवियों का वर्ग और एक मज़हबी इन्सानों का वर्ग । यह दो तबक़े हैं जिनमें बिगाड़ सबसे आख़िर में दाख़िल होता है, ख़ासतौर पर मज़हबी इन्सानों का तबक़ा । लेकिन जब इस वर्ग में भी ग़फ़लत, तसाहुली (अकर्मण्यता) और फ़र्ज़ नाशनासी (कर्तव्यविमूढ़ता) पैदा हो जाती है तो इस दलदल से कोई ताक़त निकाल नहीं सकती । मैं किसी क्षमायाचना के बिना साफ़ कहता हूं कि देश का और अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास का एक विद्यार्थी और तुच्छ लेखक हूं, मैं नहीं समझता हमारा भारतीय समाज कभी ऐसे ख़तरे से दोचार हुआ हो जैसा कि इस काल में (30-35 वर्ष के अन्दर) हुआ है । मैं इस पर बिल्कुल क्षमायाचना नहीं करूंगा । हिन्दुस्तान का जिस्म (शरीर) बारहा ज़ार व नज़ार (चोट खाया) हुआ, हिन्दुस्तान पर ब्रिटेन की वर्षों विदेशी हुकूमत रही । यह सब इतिहास की घटनाएं हैं, किन्तु हिन्दुस्तान की आत्मा और हिन्दुस्तान का अन्त:करण इस तरह कमज़ोर नहीं हुआ था कि उसने अपना काम छोड़ दिया हो । हिन्दुस्तान के इतिहास में कभी ऐसा दौर नहीं आया कि बुराई और ज़ालिम को इस आसानी के साथ सहन कर लिया गया हो जिस आसानी के साथ आज गवारा किया जा रहा है, बल्कि इसको फ़िलास्फ़ी बनाया जा रहा है, इसके द्वारा पार्टियों को सुदृढ़ और सुसंगठित किया जा रहा है ।

हिन्दुस्तान सैकड़ों मुसीबतों का शिकार हुआ है, लेकिन मानव अन्त:करण हिन्दुस्तान का ज़िन्दा रहा उसने अपना काम करना कभी छोड़ा नहीं । इस समय जो अस्ल ख़तरे की चीज़ है वह उर्दू के एक शायर के बक़ौल और मौलाना आज़ाद के पसन्दीदा शेअर के अनुसार यह है :

मुझे यह डर है दिले ज़िन्दा तू न मर जाए
कि ज़िन्दगी ही इबारत है तेरे जीने से ।

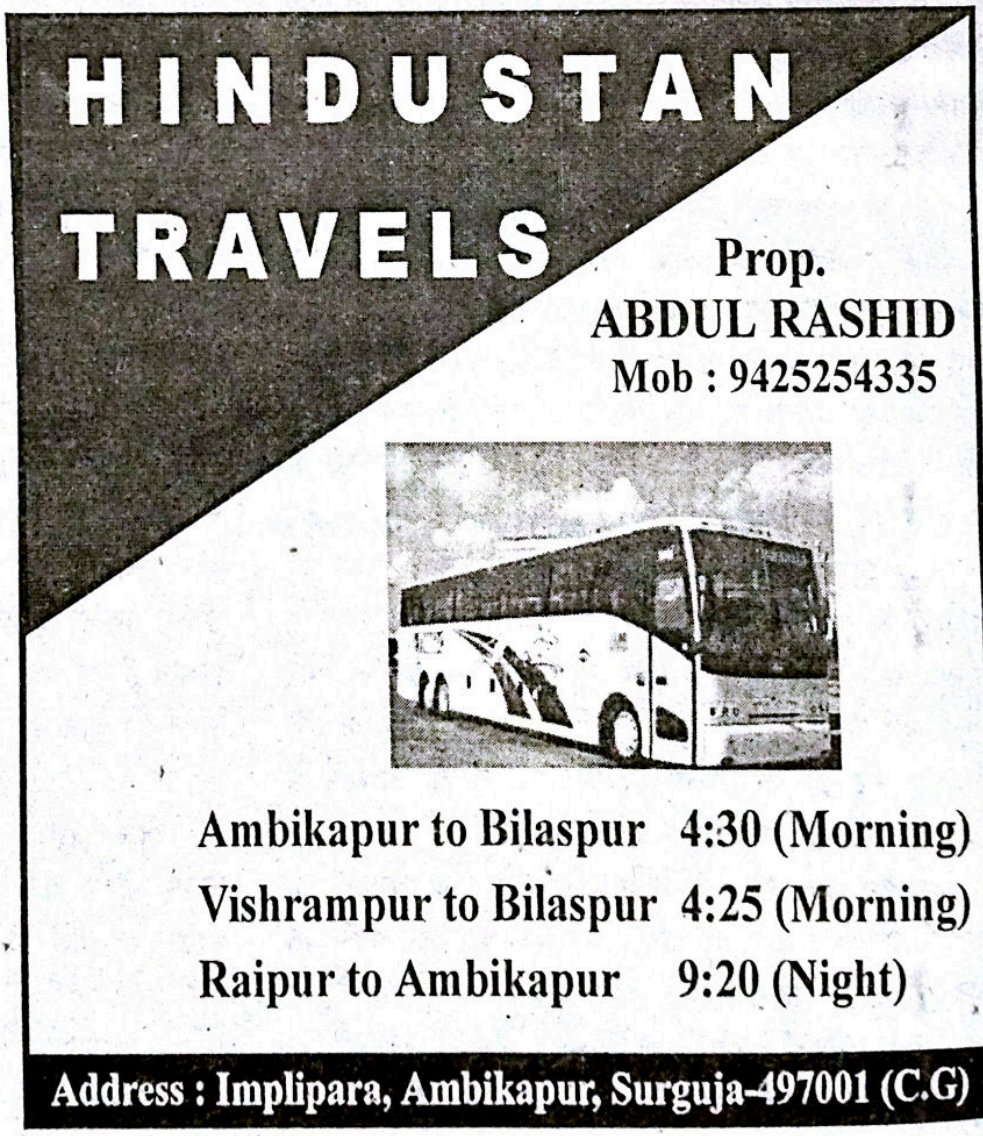

चचा जान

मुहम्मद इक़बाल सिद्दीक़ी
(गोंदिया)

डोर-बेल बजी तो ताहिरा के पास बैठा उसका बेटा आरिफ़ बोल उठा, ''पापा आ गये'' दोनों मां-बेटे दौड़ते हुए सामने के दरवाज़े के पास पहुंचे । दरवाज़े पर ज़ाहिद खड़े थे ।

रास्ते पर एक आवाज़ गूंज रही थी 'नूरानी सुरमा' एक बार में ही इसका असर दिखायी देता है ।

''आइए एक बार मुफ़्त में सुरमा लगाकर देखिए ।''
''पसन्द आ जाए तो ख़रीद लीजिए वरना कोई बात नहीं ।''

ताहिरा एकदम चौंक पड़ी और पति से आग्रह किया कि उस सुरमे वाले को अन्दर बुलाए क्योंकि वे उसके चचा थे ।

ज़ाहिद ने पत्नी का आग्रह देखते हुए उन्हें आवाज़ दी । वे अन्दर आये तो सोफ़े पर बैठाये गये ।

'हां कहिए साहब' कितनी शीशी लेंगे ।

'जी ! सुरमा नहीं चाहिए, मेरी पत्नी आपसे मिलना चाहती हैं ।'

ताहिरा बेटे का चेहरा धोकर कंघी करवा कर सुरमे वाले के सामने आयी और उसे सलाम किया । सुरमे वाले बुजुर्ग ने जवाब दिया–''वालैकुम अस्सलाम'' (आप पर भी अल्लाह की सलामती हो)।

कहिए क्या कहना चाहती हैं ?

चचा मैं मुहम्मद शफ़ी की बेटी हूं ।

अरे शफ़ी की बेटी । कौन शफ़ी जो पुलिस इन्सपेक्टर थे । माफ़ करना बेटी मैं पहचान नहीं सका ।

'चचाच आप थोड़ी देर बैठिए' कहकर ताहिरा अन्दर चली गयी और जाते-जाते शौहर को इशारा करती गयी । ज़ाहिद अन्दर गये और कुछ ही सेकेंड में लौटकर सुरमे वाले बुजुर्ग से बात करने लगे ।

मध्य प्रदेश के इस शहर सिवनी में वह लगभग दो साल के बाद अपने मायके वाले से मिल रही थी ।

ताहिरा चाय-नाश्ता ले आयी । बुजुर्ग इन्कार करते रहे मगर उन्हें नाश्ता करना पड़ा । इस बीच ताहिरा के बेटे आरिफ़ से नाना की दोस्ती हो गयी । वह नाना के नाश्ते में हिस्सेदार बन गया ।

तब तक बुजुर्ग नाश्ता करते रहे ज़ाहिद ताहिरा के इशारे पर दुबारा अन्दर जाकर आये और बुजुर्ग को दूसरे दिन दोपहर के खाने की दावत दी ।

'मगर मैं तो कल चला जाऊंगा' बुजुर्ग का जवाब था ।

''नहीं...नहीं आप कल दोपहर में हमारे घर खाना खा रहे हैं बस ।''

बहुत आग्रह करने पर बुजुर्ग ने दावत क़ुबूल कर ली ।

उन्होंने पूछा 'मैं किस वक़्त पहुंच जाऊं ?

''जी अगर आप बेहतर समझें तो नमाज़े जुमा के बाद'' ज़ाहिद ने जवाब दिया ।

''बहुत बेहतर है मैं भी दो बजे के बाद ही खाना खाता हूं'' चचा ने जवाब दिया ।

ज़ाहिद बोल पड़े, 'चचा जान मैं आपको मस्जिद से ही पिकअप कर लूंगा ।''

ऐसा तो नहीं हो सकेगा । मैं मुस्लिम नहीं हूं, चचा ने जवाब दिया ।

सुनकर ज़ाहिद के चेहरे का रंग ही बदल गया । ऐसा नहीं था कि उनके घर में उसके हिन्दू मित्रों ने खाना नहीं खाया था मगर जब से दुर्गा विसर्जन के रास्ते को लेकर शहर में तनाव और लाठी चार्ज हुआ था वे हर बार संशयित ही रहते थे ।

उन्हें अजीब-सा लग रहा था कि ये कुरते पजामे वाला बुजुर्ग मुस्लिम नहीं था । जिन्हें उनकी बीवी ने चचा कहा, वह मुस्लिम नहीं था ।

जो सलाम के जवाब में ''वालैकुम अस्सलाम'' कह रहे थे, वे बुजुर्ग मुस्लिम न थे । नाना-नाना कहकर जिनसे उनका बेटा घुल-मिल रहा था वे मुस्लिम नहीं थे नफ़ीस उर्दू बोलने वाले, तराशी हुई सफ़ेद दाढ़ी वाला यह आदमी मुस्लिम नहीं था ।

'एक मिनट' कहकर ज़ाहिद अन्दर गये और पत्नी को अपनी उलझन बतायी मगर पत्नी के इसरार (आग्रह) से हार गये ।

बुज़ुर्ग चचा सलाम कहकर नवासे को चूमकर चले गये ।

दूसरे दिन ज़ाहिद नमाज़ से लौटे ही थे कि डोर-बेल बजी । बेटे को गोद में लिए दरवाज़ा खोला तो चचा जान मौजूद थे । उन्होंने तुरंत नवासे को गोद में ले लिया और सौफ़े पर बैठते ही अपने साथ लाए हुए थैले में से नवासे को खिलौने देने लगे । आरिफ़ दौड़-दौड़कर अपनी अम्मी को खिलौने दिखाता रहा ।

ज़ाहिद और ताहिरा बहुत मना करते रहे मगर चचा जान ने खिलौनों के अलावा सुरमे की कई शीशियां भी भेंट में दे दीं ।

खाना खाकर चलने लगे तो ताहिरा के आंसू थम न सके । उसके मायके भंडारा से दो सालों में कोई भी नहीं आया था । वालिद थे तो साल में दो बार तो आ ही जाते थे, मगर भाई अपने काम-धंधों में ऐसे उलझे थे कि ख़त भी नहीं भेजते थे और ये शहर ऐसा था कि यहां भंडारा वाला कोई भी आता-जाता नहीं था ।

चचा जान ने ताहिरा के सिर पर हाथ फेरा और नवासे को चूमकर आंखें पोंछते हुए बाहर निकल गये । बाहर रिक्शा खड़ा था । चचा जान बैठकर चलने लगे तो दरवाज़े पर निगाह डाली । भतीजी रोती हुई खड़ी थी । बच्चा 'नाना-नाना' चिल्ला रहा था । बूढ़े चचा जान चलते हुए रिक्शे में फफक कर रो पड़े ।

बस स्टैंड पहुंचकर उतरने लगे तो ज़ाहिद को वहीं खड़ा पाया । रिक्शा का किराया चचा अदा न कर सके । ज़ाहिद ने उन्हें बस में बैठाकर टिकट हाथ में दी तो चचाज़ान चौंक पड़े ।

''अरे-अरे ऐसा मत करिए'' टिकट के पैसे ले लीजिए ।''

नहीं...नहीं ये कैसे मुमकिन है आप मेरे चचा ससुर हैं । कुछ मेरा भी हक़ है ।

बस छूटने से पहले बातचीत के दौरान ज़ाहिद को पता चला कि बुज़ुर्ग का नाम राम सिंह चौहान था । भंडारा में पुश्तैनी कारोबार था जो बेटे की दुर्घटना में हुई मौत के बाद ख़त्म-सा हो गया था । बहु मायके चली गयी थी । बेटी विदेश में बस गयी थी ।

घर में पत्नी अपनी घरेलु नौकरानी की मदद से सुरमा तैयार करती थी और राम सिंह चचा अपने पुश्तैनी धंधे को शहर-शहर घूमकर टिकाये हुए थे । घर के कुछ हिस्से को किराये पर दे रखा था । इन्हीं के घर से थोड़ी दूर पर ज़ाहिद के ससुर का मकान था जो इनके बचपन के दोस्त थे ।

ड्राइवर बस में चढ़ा तो ज़ाहिद ने भी चचा जान से विदा ली और नम आंखों के साथ स्कूटर स्टार्ट करके घर लौटने लगे ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

मिड डे मील योजना : शैक्षणिक सुधार का दीर्घगामी प्रयास नहीं

❖ विद्या प्रकाश

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक शिक्षा के प्रति अभिभावकीय जागरूकता तथा जन रुचि में वृद्धि के उद्देश्य से तथा पांच साल से 14 साल की उम्र के बच्चों को विद्यालय में पहुंचाने की प्रेरणा के लिए केन्द्र सरकार की मिड डे मील (मध्यान्ह भोजन) योजना का सार्थक, अपेक्षित था आशानुकूल परिणाम नहीं दृष्टिगत हो रहा है। लागू हुए अनेक वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद इस योजना का वैसा गुणात्मक परिणाम नहीं निकला जैसा सोचा गया था और जैसा सोचकर योजनाकारों ने इसे क्रियान्वित करने का बीड़ा उठाया था।

इस संबंध में योजना आयोग ने सर्वेक्षण कराया है। उसकी जांच के जो निष्कर्ष सामने आये हैं, उनसे इस बात का पता चलता है कि प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालय में मिड डे मील योजना के लागू होने के पश्चात विभिन्न राज्यों में छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में इज़ाफ़ा हुआ है। इसी के साथ यह भी तथ्य उभर कर सामने आया कि इस योजना के चलते बच्चों की शिक्षा का क़ीमती वक़्त मध्यान्ह भोजन योजना में अनावश्यक और निरर्थक रूप से बरबाद हो रहा है। सरकारी प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर अनेक सवाल प्रायः उठाये जाते हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि नगरों, क़स्बों तथा जनपद के सुदूरवर्ती ग्रामीणांचलों में सुन्दर आकर्षक नामों से स्थापित मांटेसरी, कानवेंट तथा किंडरगार्टन स्कूलों में ज़्यादा फ़ीस तथा महंगी पाठ्य-पुस्तकों के बावजूद ज़्यादातर अभिभावक अपने बच्चों का दाख़िला वहीं करवाते हैं तथा वे सरकारी प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में मिड डे मील, निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों और स्टेशनरी की व्यवस्था तथा निःशुल्क शिक्षा के बावजूद अपने बच्चों का दाख़िला नहीं करवाना चाहते।

इस संबंध में योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में प्राथमिक पाठशालाओं में छात्र-छात्राओं की उपस्थिति 90 से 100 प्रतिशत तक बढ़ी तथा इस प्रकार उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र में प्राथमिक पाठशालाओं में छात्रों की उपस्थिति में 50 फ़ीसदी वृद्धि हुई मगर नये बच्चों के प्रवेश में कोई इज़ाफ़ा नहीं हुआ। देश के अन्य राज्यों बिहार, केरल, झारखंड, कश्मीर, पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में सर्व शिक्षा अभियान के प्रति जागरूकता के फलस्वरूप बच्चों की विद्यालयों में उपस्थिति में वृद्धि अवश्य हुई। मगर इस जागरूकता का अर्थ यह नहीं कि अभिभावक अपने बच्चों की तालीम तथा उनका भविष्य बेहतर बनाने तथा संवारने के प्रति पहले से ज़्यादा जागरूक तथा समझदार हुए हैं। उनकी इस जागरूकता का कारण मिड डे मील है। आर्थिक रूप से समर्थ अभिभावक अपने बच्चों का दाख़िला मांटेसरी और कांवेंट स्कूलों में करा लेते हैं।

सरकारी प्राइमरी स्कूलों में अध्ययनरत बच्चे ज़्यादातर ग़रीब साधनविहीन तबक़े के परिवारों से ताल्लुक़ रखने वाले होते हैं जो अपने बच्चों का इन स्कूलों में दाख़िला इसी

POSTAL LIBERARY

जीवन ज्योति केन्द्र

पोस्टल लाइब्रेरी



Bainy Singh Ki Talaiya
Gohalpur, Jabalpur-482002
Mob. : 930092747, 9300101373

उम्मीद तथा लालच से कराते हैं कि उन्हें कम से कम दिन में एक वक़्त दोपहर में भोजन तो नसीब होगा । यदि सरकारी स्कूलों में बच्चों को मिड डे मील योजनानुसार दोपहर का भोजन मिलना बन्द कर दिया जाए तो निर्धन अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय भेजना बन्द कर दें या कम कर दें तथा इन स्कूलों में छात्र संख्या आधी से कम हो जाए ।

देश के लाखों बच्चों को दोपहर में भोजन के लिए स्कूल में लागू यह मिड डे मील स्कीम शिक्षण का समय बहुत ज़्यादा नष्ट कर रही है । एक तो विद्यालयों में ग्रीष्मावकाश, शीतावकाश, साप्ताहिक रविवासरीय अवकाश और तीज त्योहार की छुट्टियां सब मिलाकर वैसे ही ज़्यादा अवकाश होता है, ऊपर से प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में एक शिक्षक मीनू के हिसाब से मिड डे मील की तैयारी में कम से कम 2 घंटे बरबाद कर रहा है । अध्यापक को जो वक़्त अध्यापन में लगाना चाहिए, उसे वह भोजन की व्यवस्था में लगा रहा है । यदि वह ऐसा न करे तो उसे विभागीय उच्चाधिकारियों के कोप भाजन तथा दंडात्मक कार्रवाई का शिकार होना पड़े ।

एक तो सरकारी पाठशालाओं की हालत शैक्षणिक गुणवत्ता की दृष्टि से पहले से ही बदतर है, ऊपर से इस योजना को लागू कर शिक्षण का समय व्यर्थ में नष्ट किया जा रहा है । इस दौरान उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में दलित रसोइये का विवाद भी उभर कर सामने आया है । मिड डे मील योजना को लेकर प्रधानाध्यापक तथा ग्राम प्रधान की मिलीभगत तथा सांठ-गांठ से भ्रष्टाचार तथा आर्थिक घोटाला जैसी शिकायतें भी आमतौर पर मिलती रही हैं । वैसे मिड डे मील जैसी योजना दीर्घगामी नहीं कही जा सकती तथा बच्चों को पाठशाला में दोपहर के वक़्त भोजन के नाम पर कभी खिचड़ी, कभी खीर और कभी हलुवा खिलाकर अभिभावकों के मन में शिक्षा के प्रति जागरूकता तथा समझदारी नहीं पैदा की जा सकती तथा न इससे बच्चों का भविष्य संवारा-निखारा जा सकता है ।

होना तो यह चाहिए कि प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक व्यवस्था गुणात्मक बनायी जाए । विद्यालयों में होने वाली छुट्टियों में कटौती की जाए । इन विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की ड्यूटी जनगणना, मतगणना वग़ैरह में न लगायी जाए । अध्यापन तथा पठन-पाठन कार्य में अक्षम्य शिथिलता बरतने तथा बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करने वाले शिक्षकों के साथ सख़्ती से पेश आया जाए । पढ़ाई-लिखाई के साथ शैक्षणिक परिवेश में लगन, रुचि, आत्मानुशासन, निष्ठा, समर्पण आदि का समावेश किया जाए ।

क्या वजह है कि स्थापना के चन्द बरसों के अन्दर मांटेसरी तथा कांवेंट स्कूलों में छात्र संख्या काफ़ी बढ़ जाया करती है, छात्रों के ले आने, ले जाने के लिए दो से पांच बसों की व्यवस्था देखते ही देखते हो जाती है, नयी बिल्डिंग बन जाती है तथा उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत भी प्रशंसनीय होता है जबकि मांटेसरी कांवेंट स्कूलों से ज़्यादा वेतन आहरित करने वाले सरकारी स्कूलों के अध्यापकों की मौजूदगी के बावजूद इन स्कूलों का स्तरोन्नयन नहीं हो पा रहा है और न छात्र संख्या में वृद्धि हो पा रही है । इस दिशा में शिक्षाविशारदों, शासन, विभागाधिकारियों तथा समाज सेवियों को ईमानदार तथा सच्चे मन और लगन से आगे आना तथा कोशिश करना चाहिए । मिड डे मील योजना का जैसा रूप है उससे शैक्षणिक सुधार नहीं होने वाला है ।

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

पढ़नेवाले पर सजदा करने के बारे में उलमा में सर्वसहमति है, मगर इसके वाजिब (अनिवार्य) होने में अलग-अलग राये हैं । इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) तिलावत के सजदे को वाजिब कहते हैं और दूसरे उलमा ने इसको सुन्नत क़रार दिया है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्राय: एक बड़े मजमे में क़ुरआन पढ़ते और उसमें जब सजदे की आयत आती तो आप स्वयं भी सजदे में गिर जाते थे और जो व्यक्ति जहां होता वहीं सजदे में गिर जाता था, यहां तक कि किसी को सजदा करने के लिए जगह न मिलती तो वह अपने आगे वाले आदमी की पीठ पर सर रख देता । यह भी रिवायत में आया है कि आपने मक्का विजय के अवसर पर क़ुरआन पढ़ा और उसमें जब सजदे की आयत आयी तो जो लोग ज़मीन पर खड़े थे उन्होंने ज़मीन पर सजदा किया और जो घोड़ों और ऊंटों पर सवार थे वे अपनी सवारियों पर ही झुक गये । कभी आपने ख़ुत्बे (प्रवचन) के दौरान सजदे की आयत पढ़ी है तो मिंबर से उतर कर सजदा किया है और फिर ऊपर जाकर ख़ुत्बा शुरू कर दिया है ।

निर्बल के हम बल बन जाएं

निर्बल के हम बल बन जाएं,
दृष्टि एक विमल बन जाएं ।

नित जिनकी अवहेला होती
आंखें निशि दिन रहतीं रोती
उन पीड़ित प्राणी के मन में
आशा एक सरल बन जाएं

छोटे-बड़े की व्यर्थ भावना
कलुषित करती प्रेम ज्योत्सना
रेतों के फैले प्रांतर में
सरिता की कल-कल बन जाएं

लालच, छीन-झपट से हटकर
परहित निरत, ज्ञानमय बनकर
ईर्ष्या तम की काट कालिमा,
बहु-आलोक अमल बन जाएं

निर्बल के हम बल बन जाएं,
दृष्टि एक विमल बन जाएं ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
श्री रामायण, हथुआ (बिहार)

ग़ज़ल

डर मत किसी से, सिर्फ़ ख़ुदा से ही डर के देख,
क़िस्मत संवर ही जाएगी, ख़ुद ही सुधर के देख ।

ईश्वर पे तुझको है जो भरोसा तो आगे बढ़,
रुक मत कठिन जो राह मिले चल, गुज़र के देख ।

रब की जगह यूं नफ़्स की ख़ातिर न दिन बिता,
इन्सानियत के वास्ते कुछ काम करके देख ।

आंखों को तर भी कर ज़रा अपने गुनाह पर,
बारिश के बाद पेड़ों के जैसे निखर के देख ।

जिसने भी मन को जीत लिया हो गया अमर,
दुनिया में दुख न पाएगा, मन से संवर के देख ।

सैयद मुहम्मद असलम
142, ऑधियारी बाग़, गोरखपुर-273001

कविता

बालिका

घने कोहरे,
वह आती
कमज़ोर हाथों,
बर्तन समेटती

साथ उसके अक्सर
बालिका रहती नंगे पांव
मांजने से पहले बर्तन, बुढ़िया
रखती सामने उसके

टुकड़े रोटी के, बालिका
इकट्टा करती
जा–दूर
गन्दी नाली–किनारे

बैठ–खाती
देख–उसे
सोचता मैं–

है अपनी भी बालिका
इतनी उम्र-सी एक
किन्तु ?
क्या हैं दोनों एक ?

डॉ॰ सदानंद भोसले
रीडर, हिन्दी विभाग, पुणे विद्यापीठ, पुणे-7

आंखें भर आतीं

होता जाता फ़ीका उत्साह, आंखें भर आतीं,
नदी का कैसा उल्टा प्रवाह, आंखें भर आतीं ।
सुकृतियां की सफ़ाई देना व्यर्थ का सिद्ध होता,
उजाला की जगह अंधेरा स्याह, आंखें भर आतीं ।
अवसाद जानलेवा है, कहां है औषधि कोई,
कारागार में भी आत्मदाह, आंखें भर आतीं ।
दुख-सुख के बंटवारे में दुख अधिक बंटा,
लोग-बाग होते हैं तबाह, आंखें भर आतीं ।
कथनी-करनी में एकरूपता कब होगी, कैसे होगी,
ग़ायब होती जाती भीतरी चाह, आंखें भर आतीं ।

• **डॉ॰ स्वर्ण किरण**

टीपू सुलतान की नैतिक विजय



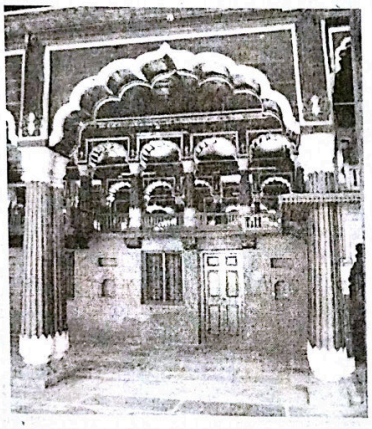

● पं० सुन्दर लाल

फ़तह हैदर सुलतान क़िले से बाहर कारीघाट पहाड़ी के निकट शत्रु से लड़ रहा था । पिता की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह क़िले की ओर लपका । सलाह के लिए उसने तुरंत अपने वज़ीरों और अमीरों को जमा किया । इनमें एक ओर मलिक जहां ख़ां और उसके साथी लड़ाई जारी रखने के पक्ष में थे और दूसरी ओर पूर्निया और उसके साथी फ़ौरन सुलह कर लेने पर ज़ोर दे रहे थे । इतने में जनरल हैरिस ने सुलह की बातचीत करने के बहाने अपने कुछ अफ़सरों सहित आकर फ़तह हैदर सुलतान से भेंट की और अत्यंत आदर और प्रेम के साथ सबके सामने उससे वादा किया कि यदि आप लड़ाई बन्द कर दें तो अंग्रेज़ सरकार आपको फिर से आपके पिता के तख़्त पर बैठा देगी । इस साफ़ वादे पर और पूर्निया जैसों के ज़ोर देने पर फ़तह हैदर सुलतान ने शस्त्र रख दिये । जनरल हैरिस ने वहां से लौटते ही अपने इस वादे को साफ़ तोड़ डाला । निस्सन्देह यह वादा केवल एक चाल थी । श्रीरंगपट्टन के क़िले पर अंग्रेज़ी सेना का पूरी तरह क़ब्ज़ा हो गया ।

श्रीरंगपट्टन में अंग्रेज़ी सेना के अत्याचार

श्रीरंगपट्टन क़िले के बाद अंग्रेज़ी सेना के लिए नगर में प्रवेश करना बाक़ी था । मार्क्विस वेल्सली के नाम से एक ऐलान प्रकाशित किया गया कि अंग्रेज़ी सेना नगर निवासियों की जान और माल, दोनों की रक्षा करेगी और किसी पर किसी तरह का अन्याय न होगा । किन्तु विजयी अंग्रेज़ी सेना के नगर में घुसते ही "श्रीरंगपट्टन की गलियों में एक-एक दीवार और एक-एक दरवाज़े से ख़ून बहने लगा । " इतना ही नहीं, श्रीरंगपट्टन के पतन के बाद कई दिन तक कंपनी के सिपाहियों और ख़ास कर गोरे सिपाहियों ने जो अकथनीय अत्याचार नगर निवासियों पर जारी रखे और जिन्हें स्वयं अंग्रेज़ अफ़सरों ने अपने पत्रों में स्वीकार किया है, उनके सामने किसी भी भारतीय नरेश के काले से काले पाप फीके मालूम होते हैं । मीर हुसैन अली ख़ां लिखता है

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ

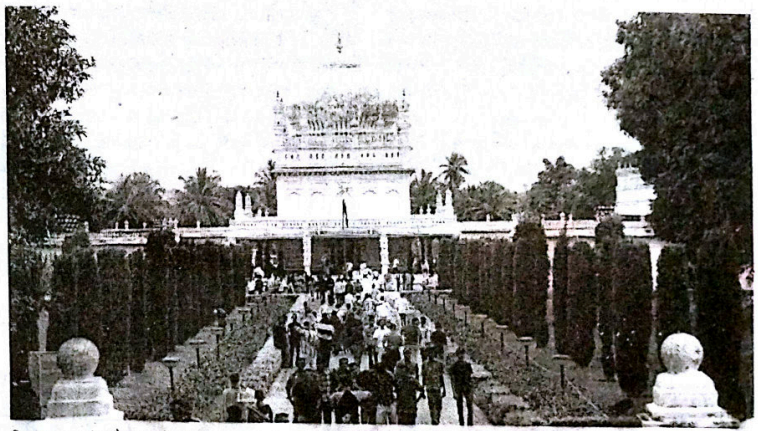

कि क़त्ल, लूट और स्त्रियों के साथ बलात्कार इस ज़ोरों से बढ़ा कि बयान करना नामुमकिन है ।

आज़ादी का सच्चा प्रेमी मलिक जहां ख़ां

टीपू के सरदारों में से एक वीर, मलिक जहां ख़ां, जिसे धूंडिया बाघ भी कहा जाता है, ने अन्त तक विदेशियों की अधीनता स्वीकार न की । केवल एक घोड़ा साथ लेकर श्री रंगपट्टन के पतन के समय वह नगर से निकल गया और थोड़े ही दिनों में उसने क़रीब तीस हज़ार सवार और पैदल अपने साथ जमा कर लिए । दो साल तक कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच के इलाक़े में वह अंग्रेज़ों और उनके साथियों को दिक़ करता रहा । अनेक लड़ाइयों में उसने विजय प्राप्त की । उसकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी । पर इस अरसे में वह कोई बाज़ाब्ता क़िला या केन्द्र अपने लिए न बना सका । दो साल तक इस तरह मुक़ाबला करने के बाद एक जगह कर्नल आर्थर वेल्सली की सेना के साथ उसका संग्राम हुआ, जिसमें कड़प्पा और कर्नल के अफ़ग़ानों ने उसके साथ विश्वासघात करके उसे कर्नल वेल्सली के हवाले कर दिया । अनेक अंग्रेज़ इतिहास लेखक आज़ादी के इस सच्चे प्रेमी को जिसने लगातार दो साल तक अनंत कष्ट सहन करते हुए भी विदेशियों की अधीनता स्वीकार न की डाकू बताते हैं ।

इस तरह वीर हैदर अली की नस्ल में राजसत्ता का अंत कर दिया गया और भारत में अंग्रेज़ी राज के मार्ग की सबसे ज़बरदस्त बाधा दूर हो गयी ।

टीपू की मौत पर ख़ुशियां

टीपू की मृत्यु का समाचार जब कलकत्ते पहुंचा तो वहां के अंग्रेज़ों ने बड़े-बड़े जलसे किये और ख़ुशियां मनायीं, बाक़ायदा जलूस निकाले गये, गवर्नर जनरल और बाक़ी सब अफ़सरों ने एक दिन नियत करके बड़े ठाट-बाट के साथ कलकत्ते के नये गिरजे में जाकर ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया, क्योंकि उस समय के बंगाल के नये चीफ़ जस्टिस, सर जॉन ऐन्सट्रथर के शब्दों में टीपू की ताक़त ही–"उस

समय एक मात्र ताक़त थी, जो हमारी सेनाओं का मुंह मोड़ने का अपने में बल रखती थी ।'' और ''भारत (अंग्रेज़ी) सम्राज्य अब से पक्का और महफ़ूज़ हो गया ।''

टीपू के चरित्र को कलंकित करने की कोशिशें

प्रसिद्ध इतिहास लेखक जेम्स मिल को छोड़कर बहुत कम अंग्रेज़ लेखक ऐसे हैं जिन्होंने टीपू के चरित्र के साथ न्याय करने की कोशिश की है । इनमें से अधिकांश लेखकों ने टीपू को बदनाम करने के भरसक प्रयत्न किये हैं, यहां तक कि मुसलमान लेखकों को धन देकर उनसे फ़ारसी में सुलतान टीपू की कल्पित जीवनियां लिखवा डाली । इन अंग्रेज़ों या अंग्रेज़ों के ज़रख़रीद भारतीय लेखकों की पुस्तकों में टीपू के अत्याचारों की अनेक कल्पित क़िस्से भरे हुए हैं । संसार के इतिहास में शायद बहुत कम लोगों के चरित्र पर इतने अधिक झूठे कलंक लगाए गये होंगे, जितने उन भारतीय वीरों के चरित्र पर जिन्होंने समय-समय पर इस देश के अन्दर अंग्रेज़ी राज के जमने को रोकने का प्रयत्न किया । प्रसिद्ध अंग्रेज़ इतिहास लेखक, सर जॉन के, जो सन 57 के स्वाधीनता युद्ध के बाद इंग्लिस्तान के भारत मंत्री के दफ़्तर में ''राजनैतिक और गुप्त विभाग'' का सेक्रेट्री रहा साफ़ लिखता है–''हम लोगों में यह एक प्रथा है कि पहले किसी देशी नरेश का राज छीनते हैं और फिर उस पर और उसका उत्तराधिकारी बनने वाले पर झूठे कलंक लगाकर उन्हें बदनाम करते हैं ।''

धार्मिकता

टीपू पर इस इल्ज़ाम के संबंध में हम सबसे पहले इतिहास लेखक जेम्स मिल की राय नक़ल करते हैं । जेम्स मिल लिखता है–

''टीपू के चरित्र की एक और विशेषता उसकी धार्मिकता थी । उसके मन पर इस धार्मिक भाव का अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा हुआ था । दिन का अधिकांश समय वह ईश्वर प्रार्थना में ख़र्च किया करता था । अपनी सल्तनत को वह 'खुदादाद' यानी 'ईश्वर प्रदत्त' कहा करता था । ईश्वर के अस्तित्व और उसकी पालकता में उसे इतना गहरा विश्वास था कि इस विश्वास का प्रभाव उसके जीवन के समस्त कार्यों पर पड़ता था । वास्तव में जिन चीज़ों ने उसे फंसाने के लिए जाल का काम किया उनमें से एक उसका ईश्वर की सहायता पर विश्वास था, क्योंकि वह ईश्वरीय सहायता पर इतना अधिक भरोसा करता था कि कभी-कभी अपनी रक्षा के दूसरे उपायों की अवहेलना कर जाता था ।''

यह बयान एक विद्वान और प्रामाणिक अंग्रेज़ इतिहास लेखक का है । निस्संदेह इस विषय में हैदर अली और टीपू सुलतान में अन्तर था । हैदर अली सम्राट अकबर के समान बिल्कुल आज़ाद ख़याल का था । टीपू ईश्वर में अधिक विश्वासी और धार्मिक विचार का था । हैदर अली किसी धर्म को भी पूर्ण या निभ्रान्त न समझता था । टीपू धार्मिक प्रवृत्ति का मनुष्य था और ख़ासकर इस्लाम धर्म को मानता था ।

हिन्दुओं के साथ टीपू का व्यवहार

मैसूर की अधिकांश आबादी हिन्दू थी और हिन्दुओं के साथ टीपू के किसी तरह के अनुचित व्यवहार का हमें एक भी प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता । इसके विपरीत अपनी हिन्दू प्रजा के साथ टीपू के उदार और प्रेम भरे व्यवहार की बेशुमार मिसालें उस समय के इतिहास में भरी पड़ी हैं ।

अंत समय तक टीपू के दरबार में ऊंची से ऊंची पदवियां हिन्दुओं को मिली हुई थीं । उसके दो मुख्यमंत्री, पूर्निया और कृष्णराव, ब्राह्मण थे, जिनमें पूर्निया उसका प्रधानमंत्री था । इन दोनों मंत्रियों का प्रभाव उस समय अत्यंत बढ़ा हुआ था । इनके अलावा बेशुमार ब्राह्मण टीपू के दरबार में ख़ासकर राजदूतों का काम करने और दरबार में लोगों का परिचय कराने पर नियुक्त थे ।

एक बार मालाबार तट की हिन्दू नय्यर जाति के कुछ लोगों ने अपने ईसाई मत स्वीकार करने या न करने के विषय में टीपू सुलतान से सलाह मांगी । टीपू ने उत्तर दिया–

''राजा प्रजा का पिता होता है । इस हैसियत से मेरी आपको यह सलाह है कि आप लोग अपने पूर्व पुरुषों के मज़हब (यानी हिन्दू मज़हब) पर क़ायम रहें, और यदि आपको अपना मज़हब बदलने की इच्छा है ही, तो आप (ईसाई होने की जगह) अपने पिता तुल्य राजा का मज़हब स्वीकार करें ।''

(Historical Sketches of the South India, etc. by Colonel Mark Wilks, vol. ii, pp. 529,530)

व्यक्तिगत चरित्र

टीपू का व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सरल, शुद्ध और संयमी था । उसका आहार अधिकतर दूध, बादाम और फल थे । शराब और अन्य मादक द्रव्यों से उसे सख़्त परहेज़ था । यहां तक कि उसने अपने राज भर में हर तरह की मदिरा और मादक द्रव्यों का बनना-बिकना क़तई बन्द कर रखा था । स्त्री जाति के सतीत्व की रक्षा का उसे ज़बरदस्त ख़याल रहता था । अपनी लड़ाइयों में वह इसका ख़ास ख़याल रखता था कि उसके सिपाही इस विषय में कोई ग़लती न कर बैठें । यदि कभी किसी से इसके विपरीत आचरण हो जाता था तो टीपू अपराधी को कड़े से कड़ा दंड देता था । मराठों के साथ उसके संग्रामों में कम से कम दो बार अनेक मराठा स्त्रियां, जिनमें कुछ सरदारों की पत्नियां भी थीं, उसकी सेना के हाथों में आ गयीं । दोनों बार टीपू ने उन स्त्रियों को बड़े आदर के साथ अलग ख़ेमों में रखा और फिर जब कि अभी युद्ध जारी ही था, उन्हें पालकियों में बैठा कर अपनी सेना की हिफ़ाज़त में मराठों के ख़ेमों तक पहुंचवा दिया ।

(Tipu Sultan, by Colonel Miles, pp. 75,81,95,96,201,202)

अंग्रेज़ों का पक्का दुश्मन

इस सबके अलावा टीपू अपने बाप के समान वीर योद्धा और ऊंचे दर्जे का सेनापति था । 17 साल की आयु से ही उसने संग्राम विजय करने शुरू कर दिये थे । पिता ही के समान वह आज़ादी का सच्चा प्रेमी और देश के अन्दर विदेशियों की साम्राज्य पिपासा का पक्का दुश्मन था । अपने समय का वही एकमात्र भारतीय नरेश था जिसके पास विदेशियों के मुक़ाबले के लिए सुसन्नद्ध और प्रबल जलसेना थी, क्योंकि मराठों की जलसेना उस समय तक काफ़ी घट चुकी थी । वास्तव में हैदर और टीपू से बढ़कर शत्रु अंग्रेज़ों को भारत में कोई नहीं मिला । टीपू के विरुद्ध अंग्रेज़ इतिहास लेखकों के विष उगलने की यही सबसे बड़ी वजह है ।

टीपू की असफलता के कारण

किन्तु टीपू अपने समस्त सामंतों और अनुयायियों को उस तरह वफ़ादारी और ख़ैरख़्वाही के पाश में बांध कर न रख सका, जिस तरह के पाश में हैदर अली ने उन्हें बांध रखा था । इसके कई सबब हो सकते हैं । एक इतिहास लेखक लिखता है कि हैदर अपने जिन बाग़ी मुलज़िमों को एक बार बर्ख़ास्त कर देता था उन्हें दोबारा अपने यहां न रखता था । किन्तु टीपू का व्यवहार इसके विपरीत था । वह इस तरह के आदमियों को एक बार सज़ा देकर उन्हें फिर बहाल कर देता था । इस इतिहास लेखक की राय है कि वह एक त्रुटि ही टीपू के नाश का कारण हुई ।

असलियत यह है कि विश्वासघात का जो पौधा हैदर अली के रहते हुए मैसूर की भूमि में न फल सका, वह धीरे-धीरे टीपू के शत्रुओं के लगातार परिश्रम और सिंचन द्वारा टीपू के समय में आकर फल देने लगा । संभव है कि देशघातकता के उस महान पाप से भारतीय आत्मा को मुक्त करने के लिए, जिसने कि वास्तव में वीर टीपू की शक्ति को चारों ओर से घेर कर चकनाचूर कर दिया, भारत का एक बार विदेशी शासन के कटु अनुभवों में से निकलना आवश्यक था । जो कुछ हो, टीपू वीर, योग्य और अपनी प्रजा का सच्चा हितैषी था । उसके शत्रु भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि उसने अपने रुधिर के अन्तिम बिन्दु से अपने देश की स्वाधीनता की रक्षा का प्रयत्न किया । उसने कभी किसी के साथ दग़ा नहीं की । उसकी मृत्यु एक आदर्श वीर की मृत्यु थी । भारत की स्वाधीनता के रक्षकों में उसका पद अत्यंत ऊंचा था और संसार के स्वतंत्रता के शहीदों में उसका नाम सदा के लिए यादगार रहेगा ।

उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता

हमें दुख और लज्जा के साथ यह स्वीकार करना पड़ता है कि औरंगज़ेब की मृत्यु के समय से सन 1857 के स्वाधीनता संग्राम तक अंग्रेज़ों और भारत के संबंध के डेढ़ सौ वर्ष के राजनैतिक इतिहास में हमें हैदर और टीपू, दो और केवल दो व्यक्ति ही ऐसे नज़र आते हैं, जिन्होंने कभी किसी अवसर पर भी अपने किसी देशवासी के विरुद्ध विदेशियों के साथ 'समझौता' करना अंगीकार नहीं किया । विशेषकर टीपू यदि चाहता तो इस उपाय द्वारा आसानी से अपनी सत्ता के कुछ न कुछ अवशेष और सौ-दो सौ साल के लिए छोड़ सकता था । वह मर मिटा, किन्तु मरते-मरते उसने अपने दामन पर यह दाग़ लगने न दिया । ध्यानपूर्वक खोज करने पर भी इन डेढ़ सौ साल के अन्दर हमें कोई और हिन्दू या मुसलमान, नरेश या नीतिज्ञ, ऐसा नहीं मिलता जिसका चरित्र इस संबंध में सर्वथा निष्कलंक रहा हो ।

('भारत में अंग्रेज़ी राज' से)

प्रस्तुति : **इरशाद अली ख़ां**

ज़ुलैख़ा बेगम

(बेगम मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

■ डॉ॰ आबिदा समीउद्दीन

स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी इससे बढ़कर और क्या हो सकती है कि जिस ज़माने में उनके मुजाहिद पति जेलों में चक्की के परिश्रम को सहन किया करते तो उनकी जीवन संगनियां घरों की व्यवस्था ही नहीं संभालती थीं बल्कि हर प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों, मानसिक उलझनों तथा अन्य परेशानियों के बावजूद अपने पति महोदयों का साहस बढ़ातीं और दूसरे स्वतंत्रता क़ैदियों के परिवारों की भी देखभाल करती थीं । कड़ी से कड़ी परीक्षा में भी कभी कोई शिकवा उनके होंठों पर नहीं आया । ऐसी ही साहसिक एवं बुलंद हौसला महिलाओं में ज़ुलैख़ा बेगम आज़ाद का नाम भी सर्वोपरि आता है ।

देश की महान हस्तियों के जीवन परिचय में अधिकतर उनके घरेलू जीवन को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है हालांकि ऐसी हस्तियों के उतार-चढ़ावों को समझने के लिए उनके जीवन के इस पहलू का अध्ययन अत्यावश्यक है । ज़ुलैख़ा बेगम मौलाना पर फ़िदा थीं । उनके लगाव एवं सहयोग की भावना का वर्णन करते हुए हमीदा सुल्तान ने लिखा है कि, ''एक दिन जब वे अपनी मां के साथ मौलाना के यहां पहुंची तो बेगम आज़ाद की नर्गिसी आंखों में लाल डोरे देखकर मां ने उनसे मुस्करा कर कहा, क्या रतजगा किया है भावज ? आंखें गुलाबी हो रही हैं । वे हंस कर बोलीं : ''आपको आदत ही है बनाने की, आजकल मौलाना क़ुरआन पाक की तफ़्सीर लिख रहे हैं । रात को 2 बजे के बाद उठ बैठते हैं जितनी देर वे लिखते हैं, मैं पंखा झलती हूं । मौसम बहुत गर्म है भला यह कैसे हो सकता है कि वह जागें, मेहनत करें और मैं आराम से सोती रहूं ।''

यह वफ़ा और त्याग की भावना मात्र पति की सेवा तक ही सीमित न थी । मौलाना का बार-बार जेल जाना, जुदाई का दुख झेलना और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना इसको उन्होंने बड़ी ही ख़ामोशी से गले लगा लिया था । राजनीति में लगे रहने के कारण मौलाना की आर्थिक स्थिति कभी भी ठीक नहीं रही । ज़ुलैख़ा बेगम ने न अच्छा खाने और पहनने की शिकायत की और न कभी अपनी परेशानियों को गिनाया, बल्कि हर तरह से अपने प्रिय पति को आराम पहुंचाने में लगी रहीं ताकि घर के सुन्दर वातावरण में ताज़ादम होकर वे नयी उमंग और जोश के साथ आज़ादी की लड़ाई के तक़ाज़ों को पूरा कर सकें । यही नहीं उन्होंने मौलाना के राजनीतिक दृष्टिकोणों एवं विचारों को भी पूरी तरह से अपना लिया था । मौलाना ही की ज़बान में :

''ज़ुलैख़ा बेगम ने पूरी कोशिश की कि मेरी ज़िन्दगी के हालात का साथ दे । उसने सिर्फ़ साथ ही नहीं दिया बल्कि पूरी हिम्मत और इस्तिक़ामत से हर तरह के नाख़ुशगवार हालात बर्दाश्त किये । वह दिमाग़ी हैसियत से मेरे अफ़कार और अक़ायद में शरीक थी और अमली ज़िन्दगी में रफ़ीक़ व मददगार ।''

(अबुल कलाम आज़ाद, गुबारे ख़ातिर,
तीसरा एडीशन लाहौर, पेज 284)

ख़िलाफ़त आन्दोलन के सिलसिले में 20 दिसम्बर 1921 ई॰ में जब मौलाना को राजनैतिक आरोपों के तहत कलकत्ता जेल में डाल दिया गया तो ज़ुलैख़ा बेगम न केवल मानसिक रूप से इसके लिए तैयार थीं, बल्कि एक साल क़ैदे बामशक़्क़त को वह कम समझती थीं जो एक तरह से आज़ादी के मांग के तौहीन भी थी । गांधी जी के नाम एक तार में उन्होंने निम्नलिखित सन्देश भेजा :

''मेरे शौहर मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद के मुक़दमे का फ़ैसला आज सुनाया गया, उन्हें सिर्फ़ एक साल क़ैदे बामशक़्क़त की सज़ा दी गयी । यह निहायत ताज्जुबअंगेज़ तौर पर उससे कई गुना कम है जिसके सुनने के लिए हम तैयार थे । अगर सज़ा और क़ैद क़ौमी ख़िदमात का मुआवज़ा है तो आप तसलीम करेंगे कि इस मामले में भी उनके साथ सख़्त नाइन्साफ़ी बरती गयी । यह तो कम से कम भी नहीं है जिसके वे मुस्तहिक़ थे । मैं आपको इत्तिला देने की जुर्अत करती हूं कि बंगाल में जो जगह उनकी ख़िदमात की ख़ाली हुई है उनके लिए मैंने अपनी नाचीज़ ख़िदमात पेश कर दी है और वे तमाम काम बदस्तूर जारी रहेंगे जो उनकी

मौजूदगी में अंजाम पाते थे ।

यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा बोझ है लेकिन ख़ुदा से मदद की पूरी उम्मीद रखती हूं अलबत्ता उनकी जगह सिर्फ़ बंगाल में ही ख़ाली नहीं हैं बल्कि तमाम मुल्क में उसके लिए कोशिश करना मेरी पहुंच से बाहर है । में पहले चार साल तक उनकी नज़रबंदी के ज़माने में अपनी इब्तिदाई आज़माइश पूरी कर चुकी हूं और मैं कह सकती हूं कि इस दूसरी आज़माइश में भी पूरी उतरूंगी । पिछले पांच सालों से मेरी सेहत निहायत कमज़ोर हो गयी है । दिमाग़ी मेहनत से बिल्कुल मजबूर हूं । इसलिए मेरी ख़्वाहिश के बावजूद मौलाना हमेशा इससे मना करते रहे कि मैं किसी तरह की मेहनत और मशगूलियत के काम में हिस्सा लूं । लेकिन मैंने इरादा कर लिया था कि इस सज़ायाबी के बाद मुझे अपनी नाचीज़ हस्ती को फ़र्ज़ की अदायगी के लिए वक़्फ़ कर देना चाहिए । मैं आज से बंगाल प्रोवेंशियल ख़िलाफ़त कमेटी के तमाम कामों को अपने भाई की मदद से अंजाम दूंगी ।''

(मौलाना आज़ाद, क़ौले फ़ैसल, चमन बुक डिपो दिल्ली, पेज 146)

उसी तार में परिशिष्ट के रूप में उन्होंने गांधी जी को यह भी लिखा था कि मेरे पति ने बहुत ही प्यार और आदर के साथ अपनी शुभ कामनाएं भेजते हुए निम्नलिखित संदेश आप तक पहुंचाने के लिए कहा है । हुकूमत और देश इस समय किसी भी प्रकार की संधि और समझौते के लिए तैयार नहीं हैं । हमारा कर्तव्य इस समय अपने को पूरी तरह तैयार रखना है । बंगाल आगे भी इस पेशक़दमी को बाक़ी रखेगा जो इस समय उसने बना रखी है । बारदोली ताल्लुक़े के साथ अब बंगाल के नाम की वृद्धि भी करा दीजिए तो मेहरबानी होगी और अगर कोई मौक़ा समझौते का आता भी है तो कृपा करके हमारी रिहाई को महत्व न दीजिए, जो दुर्भाग्यवश उसके साथ आजकल संबद्ध हो गयी है । क़ेवल एक उद्देश्य को नज़र में रखते हुए राष्ट्रीय हितों एवं स्वार्थों को सामने रखते हुए ही सुलह-समझौते की शर्तें स्पष्ट रखिए जिसका हमारी रिहाई से क़तई कोई संबंध नहीं होना चाहिए ।

(Collected Works of Mahatma Gandhi, Publication Division, Govt. of India vol. xxii, p. 459)

दिन और रात की गर्दिश तेज़ थी । राजनैतिक गतिविधियों में हलचल के कारण मौलाना की असाधारण व्यस्तता भी बढ़ रही थीं । उनके बार-बार जेल जाने और रोज़ाना की बढ़ती परेशानियों के चलते ज़ुलैख़ा बेगम का स्वास्थ्य तेज़ी से गिर रहा था । 1941 ई० में जब मौलाना नैनीताल जेल में क़ैद थे उनके पत्र आदि उन्हें मिलते रहते थे, जिसमें अपनी बीमारी को छोड़कर सभी बातों का उल्लेख होता था । रिहाई के बाद ही मौलाना को ज्ञात हो सका कि पूरा ज़माना कमोबेश बीमारी की हालत में ही गुज़रा था । रिहाई के बाद इलाज और जलवायु के बदलने से हालात में कुछ सुधार हुआ था कि 1942 ई० में मौलाना फिर क़ैद कर लिए गये और काफ़ी दिनों तक क़ैद की जगह भी गुप्त रखी गयी ।

अपने प्रिय मित्र नवाब सदर यार जंग हबीबुर्रहमान ख़ान साहब शिरवानी के नाम अहमद नगर जेल से लिखे गये एक विस्तृत पत्र दिनांक 11 अप्रैल 1942 ई० (जो रिहाई के बाद प्रकाशित हुआ) में मौलाना अपनी गिरफ़्तारी, ज़ुलैख़ा बेगम की बीमारी और फिर देहांत का वर्णन विस्तार से किया है । पत्र यद्यपि कुछ लंबा है, फिर भी ज़ुलैख़ा बेगम के बारे में जानकारी का यही एकमात्र स्रोत है । देश और क़ौम की ख़ातिर इस बेमिसाल त्याग की दास्तान के कुछ उद्धरण देखिए ।

''इस तमाम ज़माने में मैं ज़्यादातर सफ़र में रहा । वक़्त के हालात इस तेज़ी से गुज़र रहे थे कि किसी एक मंज़िल में दम लेने की मोहलत ही नहीं मिली थी । एक मंज़िल में कभी क़दम पहुंचा नहीं कि दूसरी मंज़िल सामने नमूदार हो गयी ।.....जुलाई की आख़िरी तारीख़ थी कि मैं तीन हफ़्ता बाद कलकत्ता वापस हुआ । और फिर चार दिन के बाद ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के बम्बई इजलास के लिए रवाना हो गया । यह वह वक़्त था कि तूफ़ान अभी आया नहीं था मगर तूफ़ानी आसार हर तरफ़ उमडने लगे थे'। हुकूमत के इरादों के बारे में तरह-तरह की अफ़वाहें मशहूर हो रही थीं । एक अफ़वाह जो ख़ास तौर से मशहूर हुई यह था कि ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के इजलास के बाद वर्किंग कमेटी के तमाम मेम्बरों को गिरफ़्तार कर लिया जाएगा और हिन्दुस्तान से बाहर किसी नामालूम मक़ाम में भेज दिया जाएगा और यह बात भी कही जाती थी कि लड़ाई की ग़ैरमामूली (असाधारण हालत ने हुकूमत को ग़ैर मामूली इख़्तियारात दे दिये हैं और वह उनसे हर तरह का काम ले सकती है । इस तरह के हालात पर मुझ से ज़्यादा ज़ुलैख़ा की नज़र रहा करती थी और उसने वक़्त की सूरतेहाल का पूरी तरह अंदाज़ा कर लिया था । इन चार दिनों

के अन्दर मैंने दो सफ़रों के दर्मियान बसर किये । इस क़दर कामों में मशगूल रहा कि हमें आपस में बातचीत करने का मौक़ा बहुत कम मिला । वह मेरी तबीयत से वाक़िफ़ थी । वह जानती थी कि इस तरह के हालात में हमेशा मेरी ख़ामोशी बढ़ जाती है और मैं पसन्द नहीं करता कि इस ख़ामोशी में ख़लल पड़े । लेकिन हम दोनों की यह ख़ामोशी भी बेज़बान न थी । हम दोनों ख़ामोश रहकर भी एक-दूसरे की बातें सुन रहे थे और उनके मतलब अच्छी तरह समझ रहे थे । 3 अगस्त को जब मैं बम्बई के लिए रवाना होने लगा तो हर बार की तरह वह दरवाज़े तक ख़ुदा हाफ़िज़ कहने के लिए आयीं, मैंने कहा कि अगर कोई नया वाक़िया पेश नहीं आ गया तो 13 अगस्त तक वापसी का मक़सद है । उसने ख़ुदा हाफ़िज़ के सिवा कुछ नहीं कहा । लेकिन अगर वे कहना भी चाहती तो उससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकती थी जो उसके चेहरे का ख़ामोश इज़्तिराब कह रहा था उसकी आंखें ख़ुश्क थीं मगर चेहरा अश्कबार था ।

पिछले पचीस बरस के अन्दर कितने ही सफ़र पेश आये और कितनी ही बार गिरफ़्तारियां हुईं लेकिन मैंने इस दर्जा अफ़्सुर्दा ख़ातिर (उदास) उसे कभी नहीं देखा था । क्या यह जज़्बात की वक़्ती कमज़ोरी थी जो उसकी तबीयत पर ग़ालिब आ गयी थी ? मैंने उस वक़्त ऐसा ही ख़याल किया था लेकिन अब सोचता हूं तो ख़याल होता है कि शायद उसे सूरतेहाल का एक हल्का-सा एहसास होने लगा था । शायद वह महसूस कर रही थी कि इस ज़िन्दगी में हमारी आख़िरी मुलाक़ात है । वह ख़ुदा हाफ़िज़ इसलिए नहीं कह रही थी कि मैं सफ़र कर रहा था । वह इसलिए कह रही थी कि ख़ुद सफ़र करने वाली थी ।

वह मेरी तबीयत के मिज़ाज से अच्छी तरह वाक़िफ़ थी । वह जानती थी कि इस तरह के मौक़ों पर अगर उसकी तरफ़ से ज़रा-सी बेचैनी का इज़हार होगा तो मुझे सख़्त नागवार गुज़रेगा और अर्से तक उसकी तल्ख़ी हमारे ताल्लुक़ात में बाक़ी रहेगी । सन 1916 ई० में जब पहली बार गिरफ़्तारी हुई थी तो वह अपने अन्दर की बेचैनी नहीं रोक सकी थी । और मैं अर्से तक उससे नाख़ुश रहा था । इस वाक़िया ने हमेशा के लिए उसकी ज़िन्दगी का ढंग पलट दिया ।''

(अबुल कलाम आज़ाद, ग़ुबारे ख़ातिर, लाहौर, पेज 281-84)

कुछ समय बाद जब अहमद नगर जेल के क़ैदियों को अपने संबंधियों से पत्र व्यवहार की अनुमति मिली तो मौलाना को ज़ुलेख़ा बेगम का एक पत्र मिला, जिसमें सभी इधर-उधर की बातें थीं । लेकिन अपनी बीमारी का उन्होंने कोई उल्लेख नहीं किया था । फिर अख़बारों के माध्यम से उनकी तेज़ बीमारी की ख़बरें मिलना शुरू हुईं । आख़िर में चिंतनीय दशा का तार मिला । बम्बई हुकूमत के इशारे पर जेल सुपरिन्टेंडेंट ने मौलाना से पेरोल पर रिहाई की बात की । दोस्तों विशेष रूप से पंडित नेहरू ने लाख आग्रह किया कि वे इस पेरोल की बात मान लें लेकिन मौलाना का स्वाभिमान कब इस हल्केपन को सहन कर सकता था । अलबत्ता भावनाओं का जो हाल था उसका हाल स्वयं उनकी ही ज़ुबानी सुनिये ।

''ज्यों ही सूरतेहाल की पहली ख़बर मिली मैंने अपने दिल को टटोलना शुरू कर दिया । मैंने महसूस किया कि तबीयत का सुकून मिल गया है और उसे क़ाबू में रखने के लिए जिद्दोजेहद करनी पड़ेगी । यह जिद्दोजेहद दिमाग़ को नहीं जिस्म को थका देती है और वह अन्दर ही अन्दर घुलने लगता है ।

(ग़ुबारे ख़ातिर, लाहौर, पेज 288)

अंततः 19 अप्रैल 1943 ई० को ज़ुलैख़ा बेगम उनके दर्शन की आशा लिए इस दुनिया से हमेशा-हमेशा के लिए कूच कर गयीं ।

काम तो इश्क़ में बहुत थे मीर
हम ही फ़ारिग़ हुए शताबी से

और इस तरह मौलाना के अनुसार :

''हमारी 26 बरस की इज़्दिवाजी ज़िन्दगी (वैवाहिक जीवन) ख़त्म हो गयी और मौत की दीवार हम दोनों में हाइल हो गयी । हम अब भी एक-दूसरे को देख सकते हैं मगर इसी दीवार की ओट से...मुझे इन चन्द दिनों के अन्दर बरसों की राह चलनी पड़ी है । मेरे अज़्म ने मेरा साथ नहीं छोड़ा, मगर मैं महसूस करता हूं कि मेरे पांव शल हो गये हैं यहां इहाते के अन्दर एक पुरानी क़ब्र है, नहीं मालूम किस की है ? जब से आया हूं सैकड़ों बार उस पर नज़र पड़ चुकी है लेकिन अब उसे देखता हूं तो ऐसा महसूस होने लगता है जैसे एक नयी तरह का उन्स (लगाव) उससे तबीयत को पैदा हो गया है । कल शाम देर तक उसे देखता रहा और मुतम्मिम बिन नवेरा का मर्सिया जो उसने अपने भाई मालिक की मौत पर लिखा था बेइख़्तियार याद आ गया ।''

(ग़ुबारे ख़ातिर, पेज 290)

उस मर्सिये (शोक कविता) का सार निम्नलिखित है :

''मेरे रफ़ीक़ ने जब देखा कि क़ब्रों को देखकर मेरे आंसू बहने लगते हैं तो उसने मुझे मलामत की । उसने कहा यह क्या बात है कि एक इस क़ब्र की वजह से जो एक ख़ास मक़ाम पर है तू हर क़ब्र को देखकर रोने लगता है ? मैंने कहा बात यह है कि एक ग़म का मंज़र दूसरे ग़म की याद ताज़ा कर देता है । लिहाज़ा मुझे रोने दे । मेरे लिए तो यह तमाम क़ब्रें मालिक की क़ब्रें बन गयी हैं ।''

(मुहम्मद अजमल ख़ां, दीबाचा गुबारे ख़ातिर, लाहौर)

पूरे देश में ज़ुलेख़ा बेगम की इस दुखद मौत पर मातम किया गया और साम्राज्यवादी सरकार के अन्याय एवं अत्याचार पर अत्यधिक रोष व्यक्त किया गया जिसने मौलाना को अपनी धर्म पत्नी की ख़तरनाक बीमारी के बावजूद बिना शर्त के रिहाई देना मंज़ूर नहीं किया । यहां तक कि मुस्लिम लीग ने भी मौलाना के राजनैतिक विचारों एवं दृष्टिकोणों से अत्यधिक विरोध के बावजूद कलकत्ता में शोक सभा की । सभा में इबराहीम होश की मातमी नज़्म (कविता) सुनकर सभी श्रोताओं की आंखें भर आयीं ।

रिहाई से कुछ मुद्दत पहले मौलाना को अहमद नगर क़िला से बाकूरा स्थानांतरित कर दिया गया । रिहाई के बाद जब हावड़ा स्टेशन से वे कार में रवाना हुए तो बंगाल कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा मिसेज लबानिया प्रभा दत्त और अन्य स्थानीय नेता उनके साथ थे । जिस समय कार पुल से गुज़री मौलाना पर क्या गुज़री उसे जाने बिना इस दुखद व्यथा कथा की समाप्ति संभव नहीं ।

''मुझे गुज़रा हुआ ज़माना याद आने लगा । तीन साल पीछे का वह दिन याद आया जब मैं वर्किंग कमेटी और ऑल इंडिया कमेटी के जलसों में शिर्कत करने की ग़रज़ से बम्बई के लिए रवाना हो रहा था । मेरी बीवी घर के दरवाज़े तक मुझे रुख़सत करने आयी थीं । अब मैं तीन साल के बाद वापस आ रहा था मगर वे क़ब्र की आग़ोश में थीं और मेरा घर ख़ाली था । मुझे वर्ड्स वर्थ का यह शेअर याद आया : "मगर अब वे अपनी क़ब्र में है और हाय ! मेरी दुनिया कैसी बदल गयी है ।''

मैंने अपने साथियों से कार वापस करने को कहा, क्योंकि घर जाने से पहले मैं उनकी क़ब्र पर जाना चाहता था । मेरी कार हारों से लदी हुई थी । मैंने उनमें से एक हार लेकर क़ब्र पर चढ़ाया और ख़ामोशी के साथ फ़ातिहा पढ़ा ।

(अबुल कलाम आज़ाद, हमारी आज़ादी, उर्दू अनुवाद मुहम्मद मुनीब, ओरिएन्ट लांग मैन, पेज 207)

मौलाना मलीहाबादी लिखते हैं :

''मौलाना के घर पहुंचते ही मैं भी हाज़िर हो गया । यह पहला मौक़ा था कि उनकी आंखों में आंसू तैरते देखे । और मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया ।''

(अब्दुर्रज़्ज़ाक़, ज़िक्रे आज़ाद, पेज 435)

ऐ ज़मीं हक़ है अगर तू अपने सर पर ख़ाक उड़ाए
ऐ फ़लक़ हक़ है अगर तू ख़ून के आंसू बहाए
हक़ है गीती पर जो छाएं यास की तारीकियां
हक़ हैं दुनिया में अगर शम-ए-मुसर्रत झिलमिलाए
आज तक देखा न होगा आलमे-ईजाद ने
जान दी जिस बेकसी में बेगमे-आज़ाद ने

आओ ऐ मुर्ग़ाने-गुलशन अश्क अफ़्शानी करें
आओ ऐ सहरा के ज़र्रों मर्सिया ख़्वानी करें
आओ ऐ अहले वतन सब मिल के हों मातम गुसार
आओ हम रो-रो के अपने ख़ून को पानी करें
बाग़ पर आए ख़िज़ां और बाग़बां हो क़ैद में
कारवां लुट जाए मीरे-कारवां हो क़ैद में

उसकी बेगम जान दे और वह सरे बालीं न हो
या ख़ुदा ऐसी किसी की मौत ग़मआगीं न हो
मरते दम भी अपने बेगानों से जो मिलने न दे
यूं किसी भी मुमलिकत में जब्र का आयीं न हो
आह वह आंखें जो हसरत ले गयीं दीदार की
यह भी इक तर्जे इनायत थी मेरे सरकार की

ऐसी मौतें होती हैं सरमाया-ए-नक़्शे दवाम
ता अबद बाक़ी रहेगा होश मरहूमा का नाम
जब मुरत्तब होगी मुस्तक़बिल में तारीख़े वतन
हर्फ़े ख़ूनी से रक़म होगा ये क़िस्सा ला कलाम
इन्क़िलाब ऐसा भी होने को है ज़ेरे आसमां
ज़ुल्म ख़ुद दोहराएगा सब्रो रज़ा की दास्तां

इबराहीम 'होश'

(रिसाला माहौल, कराची, आज़ाद नम्बर, सितम्बर 1960, पेज 105,106)

Caring for the Needy since 1979

REHMANI FOUNDATION

Non-Profit Public Charitable Trust (Regn. No. E-7291, Bom)

43/A, Nava Nagar, Next to Dockyard Road Rly. Stn., M. D. Naik Road, Mazagaon, Mumbai-400010, India
☎ +91-22-23758074, 23710656 • Fax : +91-22-66570305 • Email : rehmani.f@gmail.com

Respected Brothers & Sisters in Islam

Assalaamu Alaikum wa Rahmatullahi wa Barakatuhu.

Do you care to share your Zakaat/Donation effectively...for the poor and needy people?

If Yes! read on about some of the ongoing educational, healthcare and social welfare activities for the poor and needy by Rehmani Foundation, in the last 31 years :-

- Providing Educational Scholarships and Aids to over 15,000 needy and deserving students of various schools and colleges, including for professional courses.
- Managing 10 KG classes in Mumbai for over 500 poor/slum students free of cost. Alongwith education they are also provided their daily milk and nutritional lunch, free of cost.
- Organizing completely Free Medical Check-up Camps, which include examination by doctor, investigations, and medicines (as well as eye check-up and free spectacles too)...at various schools with over 80% below poverty line students.
- Regular monthly Distribution of essential grains and basic food items to the direly needy and poor households, mainly of orphans and widows.
- Sponsoring Computer Hardware and Software study courses for the interested but very poor students, free of cost, for enhancing their employment opportunities.
- Sponsoring orphan boys and girls for their education, lodging and boarding.

All these aid activities for the upliftment of the many underprivileged and distressed poor and needy by Rehmani Foundation are executed by us under our personal supervision.

Feel free to send your Zakaat/Donations genourously to Rehmani Foundation.

May Allah (swt) in turn bless your entire household for your 'taqwa' and contribution. Aameen.

Adv. Ismail Patni
B Com (Hons), LLB, Inter ICWAI
Executive Trustee
Ph. : 022-23758074, 022-23710656

Dr. Abdul Karim Mohammed Naik
MBBS, DPM, FCGP (Bom); FIPS, MWFMH (USA), Ph. D (Tor)
Managing Trustee
Mob. : 09769251125

स्वतंत्रता सेनानी हाजी बेगम

❖ डॉ॰ अमल सिंह 'भिक्षुक'

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में रोहतास ज़िले की महिला हाजी बेगम का नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। सरज़मीन-ए-बिहार की वह पहली बहादुर ख़ातून थी, जिसने हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए अंग्रेज़ी फ़ौज के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलन्द की। यही नहीं, उनके दांत भी खट्टे कर दिए। शायद इसीलिए उन्हें बिहार की 'झांसी की रानी' कहा गया है।

डॉ॰ एम॰ए॰ क़दीर ख़ान द्वारा प्रकाशित 'ख़ानदान-ए-अफ़ग़ान की चन्द अज़ीम हस्तियां' में लिखा है कि डॉ॰ क़दीर ख़ान, पिता अब्दुल रशीद के ख़ानदानी शिजरा के अनुसार सन 1540-45 के बीच फ़रीदउद्दीन ख़ान शेरशाह सूरी के दौर-ए-हुकूमत में बादशाह की दावत पर बहुत से अफ़ग़ानी अपना देश छोड़कर दिल्ली से होते हुए पूरे परिवार के साथ सहसराम नगरी में आये और यहीं बस गये। अब उन्होंने अपना वतन हिन्दुस्तान को ही बना लिया। वैसे भी यदि ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए, तो अफ़ग़ानिस्तान अखंड भारत का ही अंग रहा है। यहां से आने वालों में बहुत से सूफ़ी संत व मशहूर-मारूफ़ क़बीले जैसे-खटक, बंगश, आफ़रीदी, यूसुफ़ज़ई, रूहीले तथा ब्लूची आदि शामिल थे। मरहूम रशीद ख़ान के दस्तावेज़ के अनुसार उनका ख़ानदान अफ़ग़ानिस्तान से शेरशाह सूरी के दौर-ए-हुकूमत में दिल्ली होते हुए ग़ाज़ीपुर आया। फिर जल्द ही वहां से स्थानांतरित होकर सहसराम आया और मुहल्ला अफ़ग़ान टोली (हाल-भारतीगंज, लखनुसराय और पैठान टोली) में रहने लगा। ग़ाज़ीपुर के क़स्बा ज़मानिया में आज भी खटक टोली नामक मुहल्ला में पठानों के कई क़बीले मौजूद हैं।

चूंकि सारे क़बीले पठान जाति के थे। अत: उनके सरदार बूदी ख़ान थे। इसे नोट करना आवश्यक है कि इस जाति में एक-दूसरे से शादी-विवाह होता रहा। सरदार बूदी ख़ान की औलादों में मुअज़्ज़म ख़ान, वासिल ख़ान तथा बंगश क़बीले में मुबारक ख़ान, सैफुल्लाह ख़ान, क़ुदरतुल्लाह ख़ान मशहूर व्यक्तित्व के मालिक थे। सहसराम के अधिकतर मुहल्लों का नामकरण इनके और इनके वंशजों के नाम पर हुआ है। क़ुदरतुल्लाह ख़ान की औलादों में दो लड़के (जमालुल्लाह ख़ान एवं सरफ़राज़ ख़ान अलतमगादार) और एक लड़की हाजी बेगम थी। हाजी बेगम का जन्म 1781 ई॰ में हुआ था। वह अपने भाइयों से क़रीब 10-12 वर्ष बड़ी थी। बचपन से ही बुद्धिमान होने के कारण हाजी बेगम की तालीम घर पर ही एक बुज़ुर्ग ख़लीफ़ा अब्दुल्लाह के



द्वारा हुई, जो उन्हें किताबी ज्ञान के साथ-साथ फ़न-ए-सिपहगरी भी सिखायी थी, जिसका प्रयोग 1857 की जंगे-आज़ादी में हुआ । तलवारबाज़ी में वह अपने दादा सैफुल्लाह ख़ान से कम नहीं थी । वाज़ेह हो कि सैफुल्लाह ख़ान की सैफ़ अर्थात तलवार आज भी मशहूर है । हाजी बेगम को 'गुलिस्तां', 'बोस्तां' जो फ़ारसी की किताबें हैं, ज़बानी याद थीं । वह अपनी कम उम्र से ही पिता के साथ-साथ रहकर उनके जागीर के कामकाज में हाथ बंटाती थी ।

हाजी बेगम की शादी 16-18 वर्ष की उम्र में छपरा ज़िला (हाल सीवान) के एक मशहूर ज़मींदार शहरयार ख़ान से अंजाम पायी । मगर चन्द साल बाद ही उनके पति की मृत्यु हो गयी । बेगम साहिबा अभी सदमों से उबर भी नहीं पायी थी कि उनके सिर से पिता का साया भी उठ गया । मायके में केवल दो छोटे-छोटे भाई थे । ये जागीर के काम को अंजाम नहीं दे सकते थे । अत: हाजी बेगम अपने वालिद की जागीर का इन्तिज़ाम संभालने के लिए सहसराम चली आयी । इनकी देख-देख में दोनों भाइयों की परवरिश अच्छे ढंग से हुई । ध्यान रहे, मुबारक ख़ान की जागीरदारी में कुल 52 गांव थे, जो विरासतन कुदरतुल्लाह ख़ान को मिली थी, जिनकी मृत्यु के बाद उस जागीर का कार्य-भार हाजी बेगम ने संभाला था ।

हाजी बेगम की इन्तिज़ामी सलाहियत बहुत ही अच्छी थी । उनकी जागीर एक छोटी-सी रियासत से कम नहीं थी, जिसमें मुख़्तसर-सा लश्कर (फ़ौज) भी था । बेगम साहिबा खुद ही अपनी फ़ौज को प्रशिक्षण दिया करती थीं । इसके साथ ही अपने जागीर का कार्य भार बहुत ही अच्छी तरह से अंजाम देती थीं । वह अपनी रिआया को औलादों की तरह मानती थीं । उनकी दृष्टि में अमीर-ग़रीब का फ़र्क़ नहीं था । वह प्रतिदिन अपने महल के सबसे ऊपरी छत पर चढ़कर यह मुआइना किया करती थीं कि किसके घर से आज चूल्हे का धुआं नहीं उठा है । पता चलते ही उस परिवार के सभी सदस्यों को अपने यहां महल में खिलाती थीं । इतना ही नहीं, उन्हें खाने-पकाने के लिए राशन भी देती थीं । वे हमेशा कहा करती थीं कि हम सब खुदा के बंदे हैं, उसके मुहताज हैं । बड़ा तो वह है जो अल्लाह की बतायी हुए मार्ग पर चलता है और उससे जितना हो सके, अल्लाह की राह में ख़र्च करता है ।

बेगम साहिबा के समय में कुछ सरपसन्दों ने शेरशाह तालाब के किनारे मंदिर बनाना चाहा, तो दो गुटों के बीच तनाव हो गया । हाजी बेगम ने मौक़े वारदात पर जाकर मामले को रफ़ा-दफ़ा किया । उन्होंने मंदिर बनाने के लिए एक अलग स्थान पर ज़मीन दी और माली मदद करके उसे बनवाने में मदद भी की । इस तरह सहसराम की धरती पर बेगम साहिबा बहादुरी के साथ अपने जागीर की देखभाल कर रही थी । इसी बीच सन 1857 में भारत की पहली जंग-ए-आज़ादी शुरू हुई । बेगम साहिबा अपने वतन को जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ मानती थी । अत: वह कैसे चुप रह सकती थीं । उन्होंने अपने यहां भी अलमे बग़ावत बुलन्द कर दिया । यही नहीं अपनी हस्ती का लोहा भी मनवाया ।

सन 1857 में जब जंग-ए-आज़ादी शुरू हुई, तो उस समय सहसराम में बेकर नाम का अंग्रेज़ मजिस्ट्रेट था । यहां पहले से ही अंग्रेज़ों की दो रेजिमेंट मौजूद थी, जो स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को कुचलकर आतंक फैला रही थी । उसी समय आरा जगदीशपुर से अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आज़ादी की लड़ाई की अगुआई करते हुए अमर सिंह एवं बाबू कुंवर सिंह सहसराम पहुंचे । हाजी बेगम ने उन दोनों का पूरे जोश-ख़रोश के साथ स्वागत किया । इतना ही नहीं उन्हें सम्मानपूर्वक अपने महल के मेहमान ख़ाने में ठहरा कर उनकी लंबी उम्र के लिए दुआएं मांगी और उन दोनों को अपना भाई भी बना लिया ।

बाबू कुंवर सिंह, अमर सिंह और हाजी बेगम ने मिलकर अंग्रेज़ों से लड़ने की योजना बनायी । इस योजना में वह हर तरह से मदद करने को तैयार थी । इधर शहर के किसी गद्दार ने अमर सिंह व बाबू कुंवर सिंह को हाजी बेगम के महल में ठहरने की ख़बर अंग्रेज़ों तक पहुंचा दी । मजिस्ट्रेट दो सौ रेजिमेंट फोर्स लेकर हाजी बेगम के महल के पास पहुंचा । उसने हाजी बेगम से अमर सिंह और बाबू कुंवर को हवाले करने का मुतालिबा किया । इतना ही नहीं इसके बदले उन्हें इनाम से नवाज़े जाने की पेशकश भी की, तो बेगम साहिबा ने आग बबूला होकर कड़ा जवाब दिया– 'मैं अपने जिस्म के ख़ून का एक-एक

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

क़तरा वहा दूंगी, पर मुल्क की आज़ादी के लिए लड़ रहे मतवालों को तुम लाल मुंहे बंदरों के हवाले नहीं कर सकती ।' इसके बाद अपने आसपास के लोगों को उन्होंने ललकारा--'आओ ! हम मिलकर वतन को आज़ाद कराएं ।' लेकिन यह ललकार सुनकर उनके क़रीबी लोगों के सिवा कोई भी बाहर न आया । बेगम साहिबा ने उनके घरों पर साड़ियां और चूंड़ियां भिजवा दीं और कहा कि--'तुम्हें शर्म नहीं आती । हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए अपनी जान की परवाह करते हो । यदि आज अपनी जान की फ़िक्र करोगे तो तुम्हारी औलाद कभी भी गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़ नहीं सकेगी ।' यह ललकार सुनकर लोगों में जोश पैदा हुआ । वे अपने घरों से बाहर निकल आये ।

इधर अंग्रेज़ों ने हमला कर दिया । अपने हाथ में नंगी तलवार लिए बेगम साहिबा महल से बाहर निकलीं और अंग्रेज़ों पर टूट पड़ीं । अंग्रेज़ी लश्कर तितर-बितर हो गया । दूसरी बार प्लानिंग के साथ अंग्रेज़ों के 17वीं रेजिमेंट ने बेगम साहिबा के महल पर धावा बोल दिया । दोनों तरफ़ से घमासान युद्ध होने लगा । बेगम साहिबा और कुंवर सिंह की कुशल तलवारबाज़ी से कई अंग्रेज़ सैनिक मारे गये, जिनकी क़ब्रें आज भी गोरक्षिणी मुहल्ला में मौजूद है । अन्ततोगत्वा हाजी बेगम ने वीर कुंवर सिंह और अमर सिंह को मिर्ज़ापुर पहाड़ी का रास्ता पकड़ा दिया । इसलिए कि वे दोनों अन्य स्थानों पर भी जंग-ए-आज़ादी का लौ जला सकें ।

अंग्रेज़ों के पास आधुनिक हथियार थे । अत: उन्होंने बेगम साहिबा के महल को बारूद से उड़ा दिया । इस महल का अधिकतर भाग खंडहर हो गया । इसलिए वह अपनी जागीर में पड़ने वाले गांव खुर्माबाद चली गयीं । यहीं से बाबू कुंवर सिंह को माली मदद करती रहीं । जब हंगामा कुछ शांत हुआ, तो वे सहसराम चली आयीं । लेकिन कंपनी की हुकूमत ने उनकी सारी जायदाद को ज़ब्त कर लिया । मगर कुछ दिन के बाद शहर से सटे हुए कुछ गांव को (52 गांवों में से) वापस कर दिया । इसका इन्तिज़ाम फिर से बेगम साहिबा संभालने लगीं । अपने रिआया के लिए उन्होंने जगह- जगह कुएं भी खुदवाया, जो आज भी उनकी जागीर में पड़ने वाले हिस्सों में नज़र आते हैं । बहुत दिनों तक बुख़ार झेलने के बाद एक जनवरी 1859 ई० को वे इस देश की आज़ादी का सपना लिए सदा-सदा के लिए इस दुनिया से रुख़सत हो गयीं । उनके महल के पश्चिम में उनका मज़ार है ।

बेगम साहिबा का महल खंडहर में तब्दील हो गया है । उनकी कचहरी जिसमें वे अदालत चलाया करती थीं, उसमें आज मिल चलाई जाती है । महल का खंडहर और कचहरी की दीवार देखने से ऐसी लगती है कि यह अपने समय की दास्तान सुना रही हैं। बेगम साहिबा द्वारा निर्मित मस्जिद, जो केवल पत्थरों से बनी है, वह आज भी भारतीगंज मुहल्ला में पड़ने वाले मल्लाह टोली में मौजूद है । उनकी तलवार, उनका साज़ो-सामान, ज़मीनदारी के काग़ज़ात--ये सारी चीज़ें उनके वंशजों ने यादगार के तौर पर संभाल कर रखा है । किन्तु उनके बहुत सारे काग़ज़ात, बर्तन वग़ैरह सामानों को असामाजिक तत्वों ने 1989-90 के दंगों में लूट लिया, जो काग़ज़ात मिले, उन्हें उन लोगों ने आग के हवाले कर दिया ।

संदर्भ : शाहाबाद की गजट, बी०सी०सी० लंदन--'जनरली सड़क', एज़ेम ऑफ़ इंडियन हिस्ट्री, इंडियन नेशन, नया सबेरा, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, प्रभात ख़बर, क़ौमी तंज़ीम, फ़ारूक़ी तंज़ीम, रोहतास दर्पण, बिहार शिक्षा परियोजना का चौथे वर्ग की उर्दू पुस्तक । हाजी बेगम के वंशजों के पास उपलब्ध सामग्री । (इस आलेख की सामग्री हाजी बेगम के वंशज क़मर रज़ा ख़ान द्वारा उपलब्ध करायी गयी है ।)

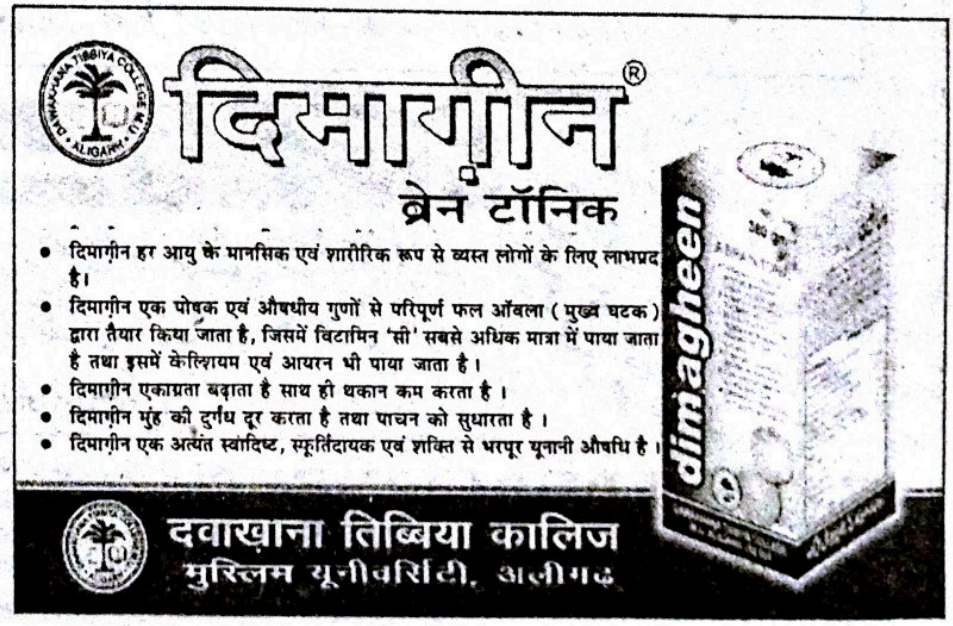

ڈائریاں اور کیلنڈر-2011

شب و روز (ڈائری)

• ہر صفحے پر قرآنی آیات واحادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابہ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال، معتبر شعرا کے تعمیری، فکر انگیز اور رگِ احساس کو پھڑکا دینے والے اشعار • شروع وآخر کے ۶۴ صفحات پر اہم ودل چسپ معلومات، مسنون دعائیں، خطباتِ جمعہ ونکاح اوران کا ترجمہ، قربانی، عقیقے، نمازِ جنازہ اور استخارے کی ماثورات • فہرست تعطیلات • مولانا عامر عثمانی ؒ کی ایک پرسوز نظم ''جشنِ آزادی'' • اردو اکادمیوں اور مختلف دینی جماعتوں کے پتے اوران کے فون نمبر • مختلف شہروں کے لیے فون کے STD کوڈ • پوسٹ آفس سے متعلق ضروری قواعد وضوابط • انسانی حقوق کی سرکاری وغیر سرکاری تنظیموں، مرکزی حکومت کے امدادی اداروں، حق اطلاعات اور آن لائن اسلامی وتعلیمی معلومات کی اہم ویب سائٹ • مکتبہ کی تعلیمی وتربیتی سی ڈیز اور ڈی وی ڈیز کی فہرست • اقلیتی ترقیاتی ومالیاتی کارپوریشن کے پتے • خاص سفارت خانوں کے پتے • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبروں کی فہرست کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ ومفید ڈائری۔
صفحات: ۴۳۲ نفیس کاغذ دیدہ زیب ٹائٹل۔

اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

• ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیثِ رسولؐ، بزرگوں کے اقوال اور بزرگ وتعمیر پسند شعرا کے تعمیری وفکر انگیز اشعار سے مزین • ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات۔ • کل صفحات: ۲۰۸ • نفیس اور عمدہ کاغذ۔

کیلنڈر

• چار رنگوں پر مشتمل سفید میٹ پیپر پر نفیس طباعت • ہر صفحے پر منتخب قرآنی آیات کے اردو، ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کمپوزر • ۳ ورقی دوطرفہ طباعت، قرآنی آیات کے دل کش طغرے اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

آندھراپردیش کے خریداران مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز کے
سب ڈپو چھتہ بازار
حیدرآباد سے رجوع کریں

MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) • Fax: 26947858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

चीन की सामरिक चुनौती

■ कुलदीप नैयर

1962 में जब भारत और चीन एक-दूसरे से भिड़े तब मैं तत्कालीन गृहमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का प्रेस अधिकारी था । प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की निराशा उनकी इस टिप्पणी से स्पष्ट थी कि उन्होंने कभी भी यह आशा नहीं की थी कि एक कम्युनिस्ट देश एक विकासशील देश पर आक्रमण करेगा । उनकी पुत्री इंदिरा गांधी ने भारत को लगे आघातों का संदर्भ आर्थिक विकास के स्थगन और रक्षा बजट बढ़ाने के बीच चयन की दुविधा के रूप में दिया था । नयी दिल्ली के समक्ष पुन: वैसी ही दुविधा उपस्थित हो सकती है, यद्यपि 1962 की तुलना में अब यह अधिक संपन्न है और उसकी तैयारी भी बेहतर है । सीमा पर इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी, आधुनिक उपकरण, सड़कें और हवाई अड्डे एक बार फिर से स्तरीय नहीं हो पाना एक पुरानी कहानी दोहराने जैसा है । इस तर्क में कुछ वज़न हो सकता है कि 8-9 प्रतिशत वृद्धि दर की लय गड़बड़ा सकती है, यदि रक्षा मद में और अधिक राशि की व्यवस्था की गयी ।

चीन ने जब 1954 में अक्साई-चिन में इस बात क जानते हुए भी सड़क बनायी थी कि यह भारतीय क्षेत्र है अथवा इसे ज़्यादा से ज़्यादा विवादस्पद कहा जा सकता है तो नयी दिल्ली के समक्ष तभी यह स्पष्ट हो जानां चाहिए था कि देर-सवेर अनिर्धारित सीमाओं को लेकर टकराव होना ही है । नेहरू कूटनीति पर निर्भर रहे और कुछ नहीं पा सके । निश्चय ही यह सोचने की बात है कि विवादस्पद गिलगित बालतिस्तान क्षेत्र में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत कार्य हेतु आयी है अथवा वहां ठहरने के लिए ? किन्तु नयी दिल्ली को इस्लामाबाद से ही अधिक शिकायत होनी चाहिए, क्योंकि वह क्षेत्र बीजिंग के बजाय उसके नियंत्रण में है ।

यदि पाकिस्तान वहां पी॰एल॰ए॰ की मौजूदगी का विरोध नहीं करता है तो हमारे विरोध का कोई ख़ास अर्थ नहीं हो सकता । सत्य है कि तकनीकी तौर पर पाकिस्तान के क़ब्ज़े वाला कश्मीर क्षेत्र जम्मू-कश्मीर का ही भाग है, किन्तु यह भी तो एक खुला रहस्य है कि भारत ने अक्सर ऐसे समझौतों की चर्चा की है जिनसे वर्तमान नियंत्रण रेखा अन्तर्राष्ट्रीय सीमा हो सकती है । बहुत पहले 1972 में जब शिमला समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे तो तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री ज़ुल्फ़िक़ार अली भुट्टो से ऐसी पेशकश हुई थी और ऐसा बताया जाता है कि वह इस पर सहमत हो गये थे, परन्तु वह इस पर अपने निकटतम सहयोगियों को भी रज़ामंद नहीं कर सके थे । निस्सन्देह भारत ने संसद में पाकिस्तान के क़ब्ज़े वाले कश्मीर को वापस लेने का एक सर्वसम्मत प्रस्ताव संसद में पारित किया था, किन्तु संसद ने तो वह प्रस्ताव भी पारित किया था जिसमें यह कहा गया था कि चीन ने जिन भारतीय क्षेत्रों पर क़ब्ज़ा जमाया है उनको पूर्णत: प्राप्त किया जाएगा । ऐसे गर्जन-तर्जन युक्त वक्तव्य राजनीति का हिस्सा तो हो सकते हैं, किन्तु सुविचारित विदेश नीति का नहीं । कश्मीर पर समझौते के लिए भी तात्कालिक आवश्यकता यह है कि भारत और पाकिस्तान में दोनों देशों के क्षेत्रीय दावों पर चर्चा और विचार-विमर्श हो । कश्मीरियों की संबद्धता भी किसी समाधान हेतु ज़रूरी है । इससे स्थिति और अधिक जटिल बन जाती है । हमारा ध्यान समस्या पर केन्द्रित होना चाहिए । निस्सन्देह बीजिंग ने यह कहा है कि कश्मीर मुद्दा भारत और पाकिस्तान को ही सुलझाना है । फिर राज्य को पाकिस्तान के उत्तरी भाग अथवा भारतीय क़ब्ज़े वाले कश्मीर में विभाजित करने का प्रयास चीन को क्यों करना चाहिए ?

इससे तो यही संकेत मिलता है कि बीजिंग कश्मीर के स्तर पर अपना निर्णय पहले ही ले चुका है । उदाहरण के तौर पर नयी दिल्ली में चीनी दूतावास जम्मू एवं कश्मीर के निवासियों को वीज़ा एक काग़ज़ पर देता है, जिसे पासपोर्ट के साथ स्टेपल कर दिया जाता है । क्या बीजिंग का इस्लामाबाद कार्यालय भी यही विधा अपनाता है ? और चीन उत्तरी कमांड के जनरल आफ़िसर कमांडिंग इन चीफ़ लेफ्टिनेंट जनरल वी॰एस॰ जसवाल को वीज़ा से इन्कार क्यों कर रहा है, इसलिए कि वह कश्मीर में सेवारत हैं ? बीजिंग की भूमिका इतने भर तक ही सीमित नहीं है । उसका अपना एजेंडा है । उसमें शीर्ष पर है गिलगित का यह क्षेत्र । इस

बारे में प्रतिक्रिया तत्काल इस्लामाबाद को करनी चाहिए । अतीत से एक प्रेरणा लेते हुए अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन ने नयी दिल्ली को जो हथियारों की सहायता दी थी उसकी क़ीमत थी उसकी यह समझ-बूझ कि कश्मीर पर इस्लामाबाद से वार्ता होगी । भुट्टो के साथ वार्ता के उद्घाटन चरण के लिए जब स्वर्ण सिंह रावलपिंडी पहुंचे तो पाकिस्तान रेडियो ने घोषणा की कि कश्मीर के उत्तरी क्षेत्रों में चीन अपनी सीमा निर्धारित कर चुका है । तब जनरल अय्यूब पाकिस्तान के मुखिया थे । उन्होंने नयी दिल्ली को सूचित करना तब भी ज़रूरी नहीं समझा ।

पासपोर्ट पर वीज़ा नत्थी करने से लेकर गिलगित बालतिस्तान में पी॰एल॰ए॰ सैनिकों को जुटाने तक के अनेक पग चीन ने उठाये हैं । नयी दिल्ली के लिए अधिक चिंता की बात यह है कि चीन का श्रीलंका, बंगलादेश, म्यांमार और नेपाल में प्रभाव बढ़ रहा है । ये वे देश हैं जो भारत को घेरे हुए से हैं । नयी दिल्ली को भी ताइवान, वियतनाम और अन्य दक्षिण एशियाई देशों तक पहुंचना चाहिए जो चीन की हठधर्मी को महसूस कर रहे हैं । बीजिंग को भी यह अनुभूति करा दी जानी चाहिए कि भारत ने तिब्बत पर चीन की अधिसत्ता को मान्य किया है, किन्तु जनसांख्यिकीय परिवर्तन अथवा उस क्षेत्र में दमन को नहीं । दलाई लामा भी उद्विग्नता महसूस कर रहे हैं । नेहरू ने बहुत पहले 1962 में ही यह चेतावनी दी थी-"यह सोच लेना निपट भोलापन ही होगा कि चीन के साथ परेशानी निश्चित रूप से कुछ क्षेत्र पर विवाद को लेकर है । इसके बहुत गहरे कारण हैं । एशिया के दो विशालतम देशों में एक व्यापक सीमा को लेकर एक-दूसरे से टकराव है । उनमें अनेक दृष्टियों से भिन्नता है और कसौटी यह है कि क्या उनमें से कोई एक सीमा पर और खुद एशिया में एक-दूसरे से अधिक प्रभावी स्थिति में होगा ।"

नेहरू ने भारत-चीन युद्ध से ठीक पहले मुख्यमंत्रियों को लिखा था-"हम किसी देश पर हावी होने की इच्छा नहीं रखते और हम अन्य देशों के साथ शांतिपूर्वक रहने में ही संतुष्ट हैं, बशर्ते कि वे हमारे मामले में हस्तक्षेप न करें अथवा अतिक्रमण न करें । दूसरी ओर चीन स्पष्टत: ही ऐसे शांतिपूर्ण अस्तित्व के विचार को पसन्द नहीं करता और एशिया में प्रभुत्व की स्थिति चाहता है ।"

इसी सप्ताह एक चीनी प्रवक्ता ने कहा है कि बीजिंग शांति और दक्षिण एशिया में विकास चाहता है । लेकिन यदि भारत चीन की हठधर्मिता को महसूस करता है, जैसा कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी कहा है तो नयी दिल्ली को सदैव सतर्क रहना होगा । बीजिंग को भारत को विश्वास की अनुभूति कराने के लिए और अधिक करना होगा । क्या पाकिस्तान सहायता करेगा ? एक बार मुझे विदेश मंत्री ने बताया था कि दिल्ली से बीजिंग का शांति मार्ग इस्लामाबाद से होकर गुज़रता है । (साभार : दैनिक जागरण)

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

धर्म तोड़ता नहीं, जोड़ता है

■ स्वामी अग्निवेश

रामभक्ति का मुखौटा पहनकर कुछ निहित स्वार्थी लोग धर्मपरायण जनता की भावनाओं का शोषण कर रहे हैं तथा अपने राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति करना चाहते हैं । हिन्दुत्व हिन्दू धर्म नहीं है बल्कि हिन्दू धर्म का आन्तरिक दुश्मन है । हिन्दू धर्म सनातन और जीवंत है जबकि हिन्दुत्व सारहीन है । यह अपने उद्‌भव और मूल प्रवृत्ति में नैतिकताविहीन विचारधारा है । हिन्दुत्व के प्रेरणा स्रोत राम, कृष्ण और शिव नहीं हैं बल्कि हिटलर और मुसोलिनी हैं । हिन्दुत्व कोई धर्म नहीं है बल्कि हिन्दू धर्म का अपहरण कर उसे लांछित करने के इरादे से शुरू किया गया एक षड्‌यंत्र है । अशोक सिंहल, नरेन्द्र मोदी, प्रवीण तोगड़िया, विनय कटियार आदि हिन्दू प्रतीत होते हैं किन्तु इनके कार्यकलाप पूर्णतया हिन्दू धर्म के प्रतिकूल हैं । जिस प्रकार आतंकवादी फ़ौजी की वर्दी पहनकर हमारे सैनिक शिविर पर धावा बोलते हैं उसी तरह उक्त हिन्दुत्ववादी लोग मज़हबी आतंकवादी हैं । इनकी भाषा व रणनीति भी आतंकवाद से ओतप्रोत है । इन लोगों का धर्म एवं आध्यात्मिकता से दूर का भी कोई संबंध नहीं है । धर्म व्यक्ति को जिन आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ता है वे हैं सत्य, न्याय, करुणा एवं प्रेम ।

ये धर्म के मूल तत्व हैं । हिन्दू धर्म में समाहित इन मूल तत्वों को दरकिनार कर हिन्दुत्ववादी लोग अपनी तुच्छ सत्तालोलुपता के लिए हिन्दू धर्म को कलंकित कर रहे हैं । असहाय लोगों को भयभीत करना, निर्दोष महिलाओं एवं बच्चों की हत्या करना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कुचलना, बलात्कार आगज़नी और लूटपाट जैसी घिनौनी हरकत कर समाज में आतंकवाद फैलाना इनके कारनामे हैं । जबकि कोई भी धार्मिक व्यक्ति ऐसे निकृष्ट कार्य नहीं कर सकता ।

हिन्दू राष्ट्र के नाम पर हिन्दुत्ववादी अब इसी रास्ते चल रहे हैं । हिन्दू धर्म का अपहरण करके हिन्दुत्ववादियों ने अमानवीय कृत्य किये हैं । इसी तरह की हैवानियत आडवाणी, मोदी, सिंहल और तोगड़िया एंड कंपनी करती रहती है लेकिन उन्हें अपने प्रपंचकारी कामों में मुकम्मल कामयाबी नहीं मिली है । इसका कारण यही है कि बहुसंख्यक हिन्दुओं में सद्‌भाव और मानवीयता की भावना भरपूर है ।

हिन्दू धर्म के अपहरणकर्ता ऐसे चोर हैं जो इसके मालिक होने का दावा कर रहे हैं । वे हिन्दू धर्म के हितरक्षक नहीं हैं बल्कि इसकी आड़ में अपनी सत्ता की भूख पूरी करना चाहते हैं । सच्चे अपहरणकर्ताओं की तरह उन्होंने राम मंदिर की आड़ में सत्ता और मुनाफ़ा दोनों अर्जित किये । उनका मूल लक्ष्य राम मंदिर नहीं बल्कि सत्ता प्राप्ति था । तमाम अपहरणकर्ता बड़ी सावधानी के साथ अपनी योजना बनाते हैं । वह रणनीति विकसित करते हैं और उसे लागू करते हैं । हिन्दू धर्म के अपहरणकर्ताओं के लिए भी यह कथन उतना ही सच है । आइये हम उनके काले कारनामों के ऊपर से परदा हटाएं ।

1. किसी भी धर्म का अपहरण करने से पहले उसके श्रद्धा प्रतीकों का अपहरण करना ज़रूरी होता है । हिन्दुत्ववाद के सिद्धांतकारों ने यही सब कुछ किया है । उन्होंने राम चन्द्र जी को साम्प्रदायिकता की राजनीति का बंधक बना दिया । इस कुकृत्य से उन्होंने राम का अपमान किया है । युगों-युगों से जो राम न्याय के समग्र प्रतीक रहे हैं, हिन्दुत्ववादियों ने उसी राम का विद्रूपीकरण करते हुए राम को क्रूरता और आक्रमण का प्रतीक बना दिया है । इससे बड़ा राम का वह और क्या अपमान कर सकते थे ? हमें बताया गया है कि राम किसी बालक की तरह, तब तक रूठे रहेंगे जब तक की बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे पर उनका मंदिर नहीं बन जाएगा । क्या राम अयोध्या की मात्र एक एकड़ भूमि तक सीमित किये जा सकते हैं ?

हिन्दुत्ववादियों को राम के विद्रूपीकरण का कोई

अधिकार नहीं है । हिन्दू धर्म के किसी भी बाह्य दुश्मन से अधिक ख़तरनाक ये हिन्दुत्ववादी हैं । हिन्दू धर्म को आज सबसे बड़ा ख़तरा हिन्दुत्व से ही है । हम एक क्षण के लिए भी इस तरह की अमर्यादित हैवानियत बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

2. भगवान को बंधक बनाने की मंशा से हिन्दुत्ववादी उनके प्रतीकों से खिलवाड़ करते हैं और अपने कुत्सित प्रयोजन के लिए उन प्रतीकों का दुरुपयोग करते हैं । मंदिर और त्रिशूल इसके दो उदाहरण हैं ।

हिन्दू धर्म के अपहरण का एक पहलू यह है कि इसकी मूल भावना को ही पतित कर दिया गया है । एक बंधक अपने सही व्यक्तित्व को उजागर करने के लिए स्वतंत्र नहीं रहता । वह उसी तरह का बर्ताव करता है जिस तरह का व्यवहार अपहरणकर्ता करना चाहते हैं । हिन्दू धर्म आज हिन्दुत्व का बंधक बना हुआ है । अब समय आ गया है कि हिन्दू धर्म को अपहरणकर्ताओं के दमघोंटू वातावरण से निजात दिलायी जाए । जब तक हिन्दुत्व की काली छाया से उसे मुक्ति नहीं मिलती है, तब तक वह सच्ची भावना और गरिमा को व्यक्त करने का कैसे अधिकारी हो सकेगा ?

हिन्दुत्व हमारी मानवीयता के तत्व को प्रदूषित करता है और हमारी संवेदनशीलता को कुंद कर देता है । ऊपर से क्रूरता, अन्याय और अमानुषिकता पर गर्व-बोध करना सिखाता है । हिन्दुत्व का यही सतत कुतर्क रहा है । भाजपा के नरेन्द्र मोदी, विश्व हिन्दू परिषद के तोगड़िया जैसे लोग गुजरात के सत्ता पोषित नरसंहार के लिए दर्प करना सिखाना चाहते हैं । उनका गर्वोक्तिपूर्ण हिन्दुत्व नफ़रत, हिंसा और असहिष्णुता की बुनियाद पर टिका है । इसे हमारी मानवीयता के लिए विष कहा जा सकता है । यदि हिन्दुत्व हमारी आदत को और हमारे विश्व दृष्टि को घुणास्पद बना देता है तब भारत अपने उच्चासन से पतित होकर एक खूंख्वार समाज में परिवर्तित हो जाएगा और इससे साम्प्रदायिक उन्माद में वृद्धि हो सकती है और नफ़रत की संस्कृति का जन्म हो सकता है ।

नरेन्द्र मोदी का ही उदाहरण लीजिए । उनकी समूची बौद्धिकता न्यूटन की 'क्रिया और प्रतिक्रिया' के इर्द-गिर्द घूमती है । गोधरा दंगों पर उनकी इसी तरह की प्रतिक्रिया थी । आडवाणी भी पीछे नहीं रहे हैं । उन्हें अल्पसंख्यक वर्ग की बढ़ती जनसंख्या से चिंता है तो वह उस राम चन्द्र जी से कोई शिक्षा लेना नहीं चाहते जिस राम का नाम लेकर वह सत्ता की सीढ़ियां नापते रहे हैं । इसके विपरीत वे फ्रेंच दार्शनिक अगस्तस कामटे से प्रेरणा लेते हैं । गुरु गोलवलकर की प्रेरणा के स्रोत तो हिटलर और उनकी बहु विवादित किताब–'मैनकेंफ' रही है । इस तरह के अनगिनत उदाहरण दिये जा सकते हैं । झगड़ालू क़िस्म के हिन्दुत्व को हिन्दू धर्म से क्या रिश्ता है ? कुछ भी तो संबंध नहीं है । कहीं मंदिर के नाम पर मस्जिद गिराना, सरस्वती वन्दना के नाम पर धमकी देना, त्रिशूल के नाम पर नवजवानों को हिंसा के लिए भड़काना यही सब इनका एजेंडा है । इसे हिन्दू धर्म का ख़ौफ़नाक–विद्रूपीकरण ही कहा जा सकता है जो फोड़ा बनकर गुजरात में फूटा और दुनिया की नज़रों में भारतीय समाज और हिन्दू समाज बुरी तरह बदनाम हुआ ।

हिन्दुत्व ने भारत की धरती पर घृणा एवं साम्प्रदायिक नरसंहार को ही परोसा है । हिन्दुत्व को हिन्दू धर्म से जोड़ना हमारे धर्म और हमारी चेतना का अपमान है । साम्प्रदायिकता और धार्मिक कट्टरवाद बीमारी के लक्षण हैं । वह तभी फलते-फूलते हैं जब धर्म में गिरावट आती है और तब वह स्थापित स्वार्थ के हाथ का औज़ार बन जाते हैं । अपनी धार्मिक परम्परा की रक्षा करना आज हमारा तात्कालिक फ़र्ज़ है । आन्तरिक दुश्मन, बाह्य दुश्मन से कम ख़तरनाक नहीं है । बाहरी शक्ति के काल्पनिक ख़तरे के बावजूद हिन्दू धर्म सुरक्षित रह सकता है । लेकिन ऐसा पहली बार हुआ है कि आन्तरिक शत्रु संगठित, एकजुट और सत्ता की राजनीति में पागल होकर हमला कर रहा है । शत्रु ने हिन्दू हित रक्षक का मुखौटा लगा रखा है । उसके ख़िलाफ़ पूरी चेतना के साथ खड़े होकर उसे बेनक़ाब करना है ।

हम सभी भारतवासियों तथा सभी धर्म-मज़हब वालों का लक्ष्य है एक ऐसे समाज और राष्ट्र का निर्माण करना जो समता एवं प्रगतिशीलता की मज़बूत बुनियाद पर खड़ा हो । जिन धर्माचार्यों की ऐसी कोई आध्यात्मिक दृष्टि नहीं है, वे स्वयं तथा अपने पीछे चलने वालों को हमेशा यही बताते रहते हैं कि दूसरों की धार्मिक मान्यताओं पर कुठाराघात करना ही धर्म है । यह कोरी मूर्खता है–पहले दरजे की धूर्तता है । धर्म तोड़ता नहीं–जोड़ता है ।

दहेज क़ानूनों पर एक नज़र

■ रेणुका पामेचा

सर्वोच्च न्यायालय ने 1983 में बना 498ए धारा की फिर से जांच पड़ताल करने की बात कहकर एक नयी बहस को जन्म दिया है । यह धारा बढ़ती दहेज प्रताड़ना व अन्य घरेलू अत्याचारों से महिला को राहत देने व प्रताड़ित करने वालों को कठोर सज़ा देने के लिए 1983 में भारतीय दंड संहिता में जोड़ी गयी थी । कोर्ट का कहना था कि बड़ी संख्या में झूठे मामले कोर्ट में आ रहे हैं । इस तरह के वैवाहिक मामलों का कोर्ट में अंबार लग रहा है ।

जस्टिस दलवीर भंडारी व जस्टिस के॰एस॰ राधाकृष्णन की खंडपीठ ने कहा है कि घरेलू हिंसा के दहेज संबंधी मामलों में बढ़ा-चढ़ाकर शिकायतें की जा रही हैं । आपराधिक प्रक्रिया के कारण संबंधित व्यक्तियों को काफ़ी परेशानी झेलनी पड़ती है । अंत में चाहे सज़ा न हो फिर भी बहुत खरोचें जीवन के साथ चिपक जाती हैं । इससे कोर्ट में ही केसेज का अंबार नहीं लगा है बल्कि परिवारों की शांति भी भंग हो गयी है । समाज में मधुरता, शांति व खुशहाली को बहुत बड़ा झटका लग रहा है । अदालत ने कहा है कि यह अब ज़रूरी हो गया है कि व्यवस्थापिका इस क़ानून में उचित बदलाव करे ।

वकीलों को सावधान करते हुए बेंच ने कहा है कि बार के सदस्यों का सामाजिक दायित्व है कि वे समाज के ताने-बाने को न बिगड़ने दें । साथ ही यह भी ध्यान रखें कि पारिवारिक ज़िन्दगी समाप्त न हो जाए । वकीलों का दायित्व है कि शिकायत में छोटी-छोटी घटनाओं का उल्लेख न करें । ज़्यादातर शिकायतें वकीलों की सलाह पर दायर की जाती हैं । उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि एक शिकायत के बाद विभिन्न तरह की शिकायतें एक के बाद एक दर्ज न हों । इस फ़ैसले के बाद तो जैसे सबको मौक़ा मिल गया कि औरतों को झूठा बताएं और साथ में इस तरह लिखना शुरू हो गया है कि हिंसा तो छोटी-मोटी बात है । इस कारण महिला पति व उसके पूरे परिवार को थाने में घसीट लेती है । अस्ल में कोई भी क़ानून जब एक पक्ष को मदद करता है और उसकी मार दूसरे पक्ष वह भी पति व उसके परिवार पर पड़ती है तो पूरी पितृसत्ता हिलती है । इस कारण बड़ी आसानी से औरत को झूठा कहकर यह धारणा बना दी जाती है कि मामला तो ज़्यादा बड़ा नहीं था और सबको हथकड़ी लगवा दी । हो सकता है कुछ मामले सामान्य हों ऐसी स्थिति में पुलिस जिस पर जांच का दायित्व है वह अच्छे से जांच करके सच को सामने लाए । इसके बजाए पुलिस महिला पर दबाव बनाती है कि वह केस वापस ले ले । महिला पर चारों तरफ़ से इतना दबाव पड़ता है कि उसे यह लिखना पड़ता है कि केस ग़लतफ़हमी में दायर कर दिया था । उसके जीवन में सब ठीक है । यह धारा समझौते की नहीं है इस कारण पुलिस एफ॰आर॰ पेश कर देती है । केस चलता रहता है ।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि 498ए सिर्फ़ दहेज विरोधी क़ानून ही नहीं है । यह क्रूरता के ख़िलाफ़ हथियार भी है परन्तु जब महिला क्रूरता की शिकायत दर्ज करने थाने पर आती है या वकील के पास जाती है तो उसे यह सलाह दी जाती है कि इसमें दहेज की मांग वाला मुद्दा डालो, नहीं तो केस कमज़ोर हो जाएगा । ऐसी स्थिति में अन्य क्रूरता तो पृष्ठभूमि में चली जाती है और दहेज प्रमुख हो जाता है जिसे सिद्ध करना मुश्किल होता है । इस प्रकार वह झूठी बना दी जाती है । घर में होने वाली क्रूरता इतनी ज़्यादा है कि उसको शायद पुलिस या कोर्ट समझ भी नहीं सकते ।

सर्वोच्च न्यायालय के एक-दूसरे फ़ैसले में जस्टिस आर॰एम॰ लोढा और ए॰के॰ पटनायक ने कहा है कि पर्याप्त दहेज न लाने के लिए महिला को ताना मारना धारा 498ए और 304बी के तहत अपराध है । हर लड़की शादी के बाद सुखी जीवन जीना चाहती है लेकिन शादी के बाद हर रोज़ उसे दहेज या अन्य बात को लेकर ताने कसे जाएं तो वह क्रूरता व उत्पीड़न है । यानी दहेज के लिए महिला के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार अपराध है । यह फ़ैसला संतोष के मामले में दिया गया है । 1992 में शादी के एक साल बाद उसकी हत्या कर दी गयी थी । उसका पति उसे कम दहेज लाने के लिए ताने मारता था । स्कूटर व पच्चीस हज़ार रुपये लाने के लिए उसे मजबूर करता था । सच तो यह है कि 498ए की शिकायत पर गंभीरता से कार्यवाही हो तो औरतें मरेंगी नहीं ।

(विविधा फ़ीचर्स)

K. M. KHALID
CELL : 9820801169

E-mail : afkartubes@yahoo.co.in
afkartubes@gmail.com

AFKAR

TUBE CORPORATION

IMPORTERS STOCKISTS & SUPPLIERS OF :

SEAMLESS, WELDED PIPES & TUBES
OF ANY QUALITY & SPECIFICATION IN :
MILD STEEL, CARBON STEEL,
ALLOY STEEL & STAINLESS STEEL

BPT Plot No. 131, Shop No. 6-B, Reay Road, Mumbai-400033
Tel. : 022-23720719, Fax : 022-23756521, Res. : 022-26338477

संवेदनहीनता

''छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव ज़िले में नशे में धुत सिपाही ने हवलदार को गोली मार दी तथा बाद में ख़ुद को भी गोली मारकर आत्महत्या कर ली ।''

''दिल्ली के मंडावली इलाक़े में यातायात पुलिस के एक कर्मचारी पर शराब का नशा इस क़दर चढ़ा कि ड्यूटी ख़त्म होने के बावजूद उसने एक वाहन चालक को रोक कर उससे गाड़ी के काग़ज़ात मांगे । पुलिसकर्मी को नशे में धुत देखकर एकत्र हुए लोगों ने हंगामा कर दिया ।''

''दिल्ली के जाफ़राबाद थाना क्षेत्र में शराब पीने से मना करने पर एक पति ने अपनी पत्नी की गला घोंट कर हत्या कर दी । आरोपी घटना के बाद से फ़रार है ।''

यह (राष्ट्रीय सहारा, 2 सितम्बर 2010 के एक ही पृष्ठ पर छपे समाचारों की एक झलकी मात्र है । दरअस्ल हमारी संवेदनहीनता ने हमें वर्तमान स्थिति में जीने के लिए मजबूर कर रखा है ।

शराब की बुराइयों से कौन अवगत नहीं ? हमारे चारों ओर जितनी भी बुराइयां होती हैं, उनका एक महत्वपूर्ण कारण शराब है । व्यभिचार और बलात्कार के अधिकतर मामले शराब के नशे में होते हैं, स्नैचिंग और झपटमारी शराब की लत पूरी करने के लिए की जाती है, डाके और सेंधमारी में शराब की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । इनके अतिरिक्त भी बुराइयों को बढ़ावा देने में शराब की जो भूमिका है वह जगज़ाहिर है ।

लोगों की शराब की बुराइयों के प्रति जागृत करने की आवश्यकता है । हालांकि इस बीमारी से छुटकारा पाना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन हमें एक अभियान के रूप में इसे लेना चाहिए और सरकार एवं प्रशासन पर दबाव डालकर समाज को शराब की लानत से बचाने की कोशिश करनी चाहिए ।

अमेरिकी मन्दी

''अमेरिकी अर्थव्यवस्था अभी भी मंदी से पूरी तरह उबर नहीं पायी है । शायद यही वजह है कि निजी कंपनियों ने केवल अगस्त महीने में 10,000 नौकरियों की कटौती की । यह इस बात का भी संकेत है कि आर्थिक सुधार अभी भी नाज़ुक दौर में है । प्रख्यात अमेरिकी अर्थशास्त्री एवं अमेरिकी फ़ेडरल रिजर्व के पूर्व चेयरमैन एलन ग्रीनस्पैन ने कहा, ''मुझे लगता है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था में फिर से मंदी आ सकती है ।' उन्होंने कहा कि अमेरिका के फिर से मंदी में जाने के 25 से 30 फ़ीसद आसार हैं ।''

(राष्ट्रीय सहारा, 3 सितम्बर 2010)

अमेरिका में इस मंदी के लिए वास्तविक उत्तरदायी वहां की राष्ट्रीय, सामूहिक एवं व्यक्तिगत जीवनशैली है ।

लोगों का मृत्यु के बाद के जीवन और परलोक की जवाबदेही पर तो विश्वास नहीं है, बल्कि व्यावहारिक रूप में मृत्यु पर भी उनका विश्वास नहीं है । उनके व्यवहार से ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु उनके वश में है और वे इस संसार में सदा के लिए आये हैं ।

न्याय या अन्याय ?

''हरियाणा के कैथल में न्यायाधीश ए०के० शौरी ने एक दिन में दीवानी एवं फ़ौजदारी के 148 मामलों का निबटारा किया । 137 मामले भूमि अधिग्रहण से संबंधित थे ।

आंध्र प्रदेश के गुंटूर ज़िले के एक सिविल जज ने एक दिन में 111 आपराधिक मामलों का फ़ैसला करके, नया रिकार्ड बनाया था । इससे पहले देश में एक दिन में सर्वाधिक फ़ैसले सुनाने की संख्या 80 थी ।''

(दैनिक जागरण, 3 सितम्बर 2010)

अर्थात ऐसा नहीं है कि यह काम एकदम असंभव हो । अदालतें यदि ईमानदारी से चाहें तो उचित समय के भीतर मुक़दमों को निबटा कर दोनों पक्षों के साथ न्याय किया जा सकता है । लेकिन हमारे यहां की अदालतों का हाल यह है कि छोटे-छोटे मामले भी दशकों तक चलते रहते हैं ।

बड़े-बड़े महत्वपूर्ण मामलों के साथ जिनसे लाखों-करोड़ों लोगों का हित जुड़ा होता है, भी यही होता है । अदालतें विभिन्न बहानों से उन्हें खींचती रहती हैं, यहां तक कि जब फ़ैसला आता है तो स्थिति इतनी बदल चुकी होती है

कि उसका कोई महत्व नहीं रह जाता ।

ऐसा भी होता है कि पुलिस फ़र्ज़ी मुक़दमे बना देती है । अदालतों में घोंघा गति से कार्यवाई चलती रहती है । बाद में पता चलता है कि मुक़दमा झूठा था, आरोपी निर्दोष है, लेकिन तब तक उस 'आरोपी' के जीवन के 10-12 बहुमूल्य वर्ष बरबाद हो चुके होते हैं, जिसका उत्तरदायित्व लेने को कोई तैयार नहीं । न तो पुलिस को झूठा मुक़दमा बनाने की सज़ा दी जाती है और न ही निर्दोष 'आरोपी' को उसके 10-12 वर्ष का कोई हर्जाना ।

आत्महत्या का प्रेरक

झारखंड के जे०आर०डी० टाटा सेन्टर फॉर एक्सेलेंस ने पिछले तीन साल में देश भर में 16,000 छात्रों की आत्महत्या की घटनाओं की केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सी०बी०आई०) से जांच कराने की मांग की है । सेन्टर का कहना है कि हमारे देश में औसतन 16 छात्र प्रतिदिन आत्महत्या करते हैं । विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार हर साल एक करोड़ 10 लाख युवक स्नातक तो हो जाते हैं, पर उनमें से 90 प्रतिशत नौकरी के लायक़ नहीं होते । सेन्टर के निदेशक प्रभात रंजन ने कहा कि ये आंकड़े न केवल हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सवालिया निशान खड़ा करते हैं, बल्कि शैक्षणिक संस्थाओं तथा अभिभावकों के मुंह पर करारा तमाचा मारते हैं ।

(राष्ट्रीय सहारा, 3 सितम्बर 2010)

शिक्षा पूरी तरह बाज़ारवाद की गिरफ़्त में है । छात्रों को केवल अधिक से अधिक धन कमाने के लिए शिक्षित-प्रशिक्षित किया जा रहा है ।

जो इस दौड़ में पीछे रह जाते हैं वे निराश और कुंठित होकर कायरतापूर्ण क़दम उठा लेते हैं । कभी अनैतिक कर्म करने से भी नहीं हिचकते तो कभी जीवन-संघर्ष से पूर्णत: उब जाते हैं । जब तक शिक्षा का उद्देश्य सार्थक व सफल जीवन नहीं होगा और जीवन में वास्तविक आध्यात्मिक मूल्य एवं शिक्षाएं नहीं पनपेंगी, इन विकारों से नहीं बचा जा सकेगा । ● मुशर्रफ़ अली

लघुकथाएं

योजना !

पड़ोस का मनोज पुलिस में चुना गया है । प्रशिक्षण हेतु जाने से पहले मिलने आया तो उत्साह में था । बताने लगा, "अंकल ! पच्चास हज़ार जो भरती हेतु ख़र्च किया है वह तो ट्रेनिंग के बाद छह महीने में ही कमा लूंगा । आप देखिएगा अगले पांच वर्षों में तीनों बहनों की शादियां धूमधाम स निबटा दूंगा । नयी कॉलोनी में शानदार कोठी बनाऊंगा । छोटा भाई राजेश डॉक्टर या इंजीनियर जो बनना चाहेगा उसे पढ़ाऊंगा । विदेश भी जाना चाहेगा तो भेजूंगा । यदि कोई ढंग का थाना मिल गया तो कुछ न कुछ बैंक बैंलेंस भी बना लूंगा ।

हम इस युवक की इस पंचवर्षीय योजना से विस्मित भी थे और अभिभूत भी !

पढ़े-लिखे जाहिल !

वकील साहब लपकते हुए अदालत के कमरे से बाहर निकले । दरवाज़े की बगल में ज़ोर से नाक सिनकी और उंगली अंगूठा भी वहीं दीवार पर रगड़ लिए ।

होटल के कमरे से तैयार होकर निकलते हुए जेंटिलमैन ने अपने जूते नि:संकोच पलंग की चादर से पोंछ लिए ।

रेलवे रिजर्वेशन खिड़की से एक सूट-बूटधारी ने एक फ़ार्म उठाया । फिर इधर-उधर चोर नज़रों से देखकर पूरी गड्डी उठा कर अपने बैग में डाल ली ।

और मैं देखता ही रह गया इन पढ़े-लिखे जाहिलों की इन हरकतों को ! ● ओमप्रकाश बजाज

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877

Hosiery Centre

Wholesaler
Readymade & Handloom

B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G)

भ्रमित प्रतिनिधि

नक्सलियों की विचारधारा कितनी विकृत हो चुकी है, इसकी पुष्टि लुकस टेटे की हत्या से भी होती है । उन्होंने टेटे के सफ़ाये को इसलिए जायज़ ठहराया, क्योंकि वह आदिवासी होते हुए भी पुलिस में थे । नक्सली एक ओर सरकारों को विकास विरोधी बताते हैं और दूसरी ओर ख़ुद सड़कों, पुल-पुलियों, रेल पटरियों और मोबाइल फ़ोन कंपनियों के टॉवरों को ध्वस्त करते हैं । वे स्कूलों को यह कहकर ध्वस्त कर रहे हैं कि पुलिस और सुरक्षा बलों के जवान उनमें अपना ठिकाना बनाते हैं । ख़ास बात यह है कि नक्सलियों के ऐसे कृत्य को बुद्धिजीवी जायज़ ठहराते हैं । वैसे तो अब केन्द्र और राज्य सरकारों को इससे परिचित हो जाना चाहिए कि नक्सल प्रेमी बुद्धिजीवी या तो भ्रमित हैं या फिर नक्सलियों पर उनका कोई वश नहीं, लेकिन समस्या यह है कि अब सरकारों के प्रतिनिधि भी दुविधा से ग्रस्त हैं ।

(राजीव सचान, दैनिक जागरण, 7 सितम्बर 2010 ई॰)

गृहमंत्री का बयान

चिदम्बरम ने भले एक ऐसा वाक्य कहा हो, जो उन्हें गृहमंत्री की हैसियत से नहीं करना चाहिए था, लेकिन उनके इसी वाक्य ने भाजपा को अपनी खाल बचाने पर मजबूर किया है । वरना वह आतंकवाद को इस्लामी ही कहती आ रही थी । आज आडवाणी को यह कहना पड़ रहा है कि वे हर तरह के आतंकवाद की निंदा करते हैं । जबकि इससे पहले वे तमाम भगवाधारियों को पवित्र साबित करने पर तुले रहते थे । चिदम्बरम के बयान ने हिन्दू आतंकवाद ही नहीं, हिन्दुत्ववादियों को भी बेनक़ाब किया है ।

(साजिद रशीद, जनसत्ता, 5 सितम्बर 2010 ई॰)

सांसदों की वेतन वृद्धि

अपनी तमाम सुख-सुविधाओं के बावजूद वे काम क्या करते हैं ? ज़रा संसद में उनके कामकाज को तो देखिए । उनमें से कुछ तो कभी-कभार ही दिखलायी पड़ते हैं । वे बमुश्किल उतना ही आते हैं, जिससे उनकी सदस्यता बनी रहे । अगर यह छूट मिल जाए, तो वे शायद एक दिन के बाद आएं ही नहीं । उस दिन भी इसलिए क्योंकि शपथ ज़रूरी होती है । कुछ अपनी ज़िन्दगी का पहला भाषण देते हैं और फिर कभी नहीं बोलते । क्या और किसके लिए बोलना है संसद में ?

(खुशवंत सिंह, हिन्दुस्तान, 4 सितम्बर 2010 ई॰)

अशिक्षित शिक्षक

स्कूलों में बढ़ रहे व्यभिचार और अत्याचार से बच्चों के मन में अदृश्य भय समा रहा है । उनके व्यक्तिगत का विकास अवरुद्ध होने लगा है । सरकार को सबसे पहले बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए । शिक्षकों को जवाबदेह और ज़िम्मेदार बनाया जाए । नियुक्ति के समय ही उनका मानसिक परीक्षण ज़रूरी है ताकि ऐसे लोग शिक्षा के मंदिरों में प्रवेश न कर पाएं जो मानसिक रूप से विकलांग और बौद्धिक रूप से दिवालिया हों । लेकिन दुर्भाग्य से सरकार द्वारा ऐसा नहीं किया जा रहा है । एक ओर सरकार सबको शिक्षा गारंटी क़ानून के अधिकार से लैस कर रही है, वहीं बच्चों पर घिनौना अत्याचार बढ़ता जा रहा है । ऐसे में शिक्षा का सार्थक लक्ष्य नहीं पाया जा सकता । अगर तत्काल स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के माहौल को सुधारा नहीं गया तो आने वाले समय में स्थिति और विस्फोटक हो सकती है ।

(अरविन्द जयतिलक, राष्ट्रीय सहारा, 4 सितम्बर 2010)

सुपरमार्केट

सुपरमार्केट के कारण वैश्विक स्तर पर कृषि के विनाश के बावजूद उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री रिटेल क्षेत्र में खुले हाथों से निवेश को बढ़ावा दे रहे हैं । इसका मतलब है कि वालमार्ट और टेस्को जैसे बड़े खिलाड़ी भारतीय बाज़ार को निगल जाएंगे । औद्योगिक नीति और प्रोत्साहन विभाग के एक दस्तावेज़ के अनुसार, 'ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक विकास, संपन्नता और रोज़गार के अवसर सृजित करने के लिए कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्यशील बाज़ार की आवश्यता है ।' अनेक अर्थशास्त्री और शोधकर्ता सुपरमार्केटों की एक सुर में प्रशंसा कर रहे हैं । किन्तु क्या वास्तव में सुपरमार्केट फ़ायदेमंद है ? 2006 से भारत ने रिटेल क्षेत्र के लिए अर्थव्यवस्था के कपाट खोलने शुरू कर दिये थे । क्या इन रिटेल इकाइयों ने किसानों और उपभोक्ताओं को लाभ पहुंचाया है ? इसका जवाब है—नहीं ।

(देविन्दर शर्मा, दैनिक जागरण, 2 सितम्बर 2010)

AQUIL MUKHTAR
DEVELOPERS PVT. LTD.

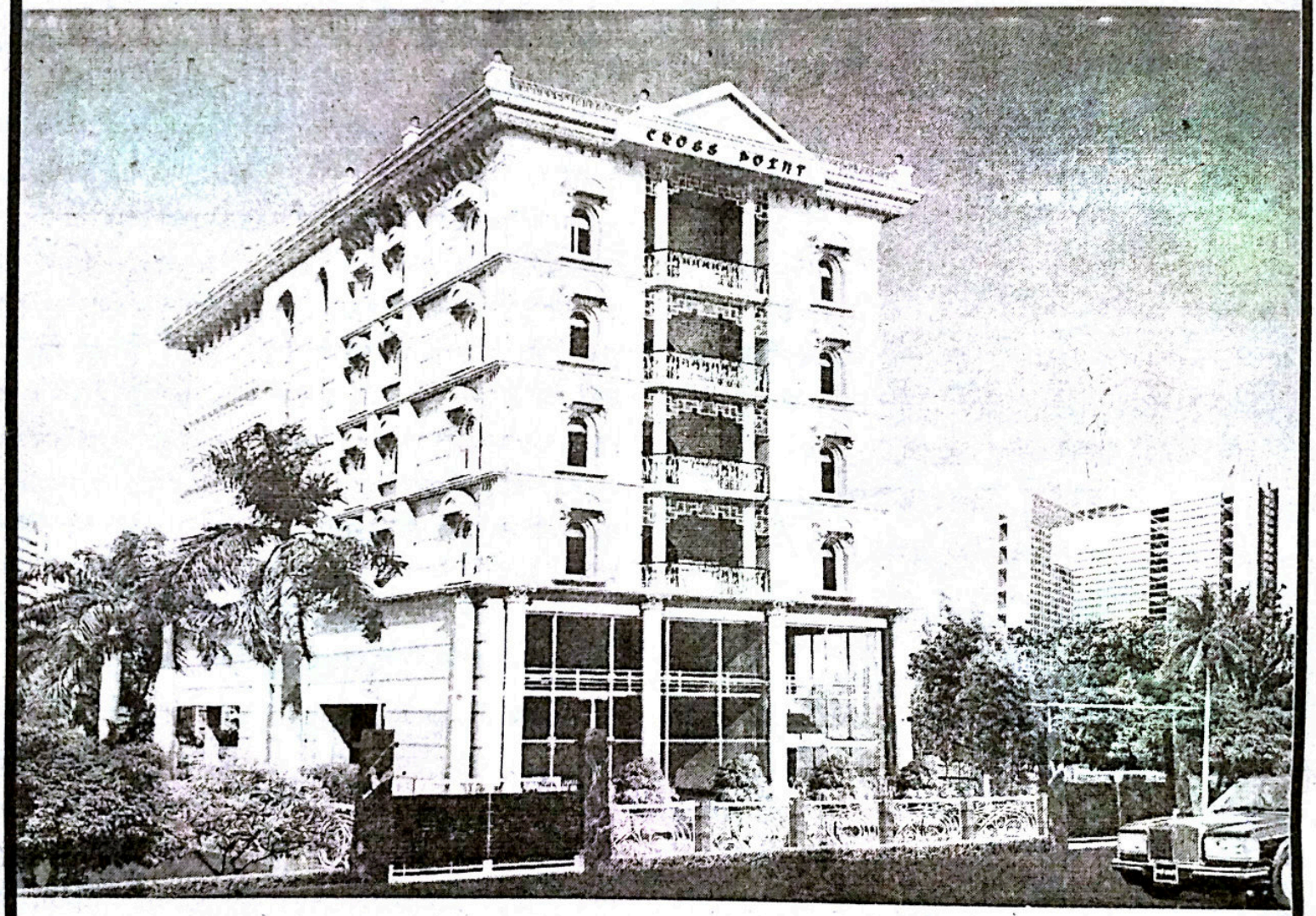

M.D. MR. MUKHTAR AHMED MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

मीलों दूर से भी कबूतर कैसे लौट आते हैं अपने बसेरे तक ?



कबूतरों को एक कुशल संदेशवाहक (डाकिये) की तरह इस्तेमाल किया जाता था । बड़े-बड़े युद्ध में कबूतरों ने एक जासूसी संदेशवाहक की महत्वपूर्ण भूमिका निभायी भी है । कहा जाता है कि कबूतर अपना रास्ता कभी नहीं भूलते, यही वजह है कि कबूतरों पर कभी किसी का विश्वास कम नहीं हुआ लेकिन सवाल यह उठता है कि आख़िर वो कौन-सी शक्ति है, जो कबूतरों को अन्य पक्षियों के मुक़ाबले इतना बुद्धिमान बनाती है ?

कबूतर सैकड़ों मील तक बिना रास्ता भटके इतनी आसानी से कैसे उड़ लेते हैं और वापस अपने बसेरे तक कैसे लौट आते हैं ? इन सब गुत्थियों को आख़िरकार वैज्ञानिकों ने सुलझा लिया है । यूनीवर्सिटी ऑफ़ पीसा के इन वैज्ञानिकों का कहना है कि कबूतरों की इस चतुराई के पीछे उनकी सूंघने की क्षमता का सबसे बड़ा हाथ है । उनके अनुसार कबूतरों में किसी भी क्षेत्र की हवाओं की खुशबू को पहचानने की अद्‌भुत शक्ति होती है और इसी ख़ुशबू की पहचान के कारण ही वे कहीं से भी बिना रास्ता भटके अपने बसेरे तक वापस लौट आते हैं ।

प्रमुख शोधकर्ता डॉ॰ ऐना गेगलियार्डो का कहना है कि कबूतरों की हवाओं को पहचानने की क्षमता के कारण वे अलग-अलग हवाओं की गंध से हवाओं के रुख़ को निर्धारित कर लेते हैं और इसी शक्ति के कारण वे उन क्षेत्रों के वातावरण की गंध से अपने दिमाग़ में एक नक्शा बना लेते हैं । इस स्मरण शक्ति के लिए कबूतर के जीवन के प्रथम तीन महीने बहुत महत्वपूर्ण होते हैं और अगर इन तीन महीनों में कबूतर को आज़ाद हवाओं में न उड़ने दिया जाए तो फिर वह पूरे जीवन अपनी यह शक्ति प्राप्त नहीं कर सकते ।

अपने बिल तक कैसे पहुंच जाती है चींटियां ?

आपने कभी न कभी तो यह ज़रूर सोचा होगा कि सीधे रास्ते अथवा घुमावदार रास्ते तय करके भी अपने बिलों से कई मीटर दूर भोजन की तलाश में जाने वाली चींटियां वापस अपने बिलों तक कैसे पहुंच पाती हैं ? आख़िर इतनी दूरी तय कर लेने के बाद भी उन्हें अपने बिल के अस्तित्व का आभास कैसे रह पाता है ?

इस बारे में बर्लिन स्थित हमबोल्ट यूनीवर्सिटी की प्रो॰ सैंड्रा बोल्ट वोलगेमुथ के नेतृत्व में जर्मन व स्विस वैज्ञानिकों के दल द्वारा सहारा मरुस्थल की चींटियों पर एक गहन अध्ययन किया गया और पाया गया कि टेढ़े-मेढ़े और घुमावदार रास्ते तय करके भोजन की तलाश करने वाली चींटियां एक मानसिक प्रक्रिया का सहारा लेकर यह पता लगाती हैं कि वे अपने बिल से कितनी दूरी पर हैं ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि अपने बिल से कई मीटर दूर भोजन की तलाश में जाने वाली चींटियां बिल से दूरी की

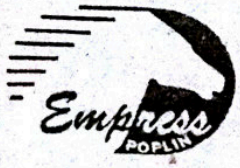

NEW EMPRESS MILLS

1st Phase Industrial Area BALOTRA-344022 (Raj.)

Visit us. www.Empress. com. E-mail : empresspoplin@hotmail.com

(M) SAYED PARWAN ALI 09214408133

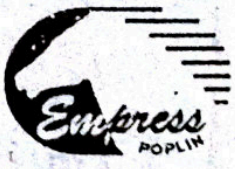

LILLY लिली गोल्ड GOLD

Superior Nighty

KAJAL काजल गोल्ड GOLD

MFG. OF : HIGHCLASS STANDARD POPLIN & NIGHTY PRINTS

मानसिक गणना करती हैं और पंक्तिबद्ध होकर सीधे वहां पहुंच जाती हैं । प्रो॰ सैंड्रा का कहना है कि चींटियां तय की गयी दूरी को मानसिक रूप से नापती हैं और वहां से बिल की सीधी दूरी क्या है, इसकी गणना करके सीधे रेखा में वहां पहुंच जाती हैं । वैज्ञानिक अब यह पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं कि चींटियां यह मानसिक माप दो आयामों में करती हैं या तीन आयामों में।

मानव उपस्थिति का कैसे पता लगाते हैं मच्छर ?

देखने अथवा सूंघने की शक्ति न होने के बाद भी मच्छर किसी स्थान पर मानव की उपस्थिति का पता कैसे लगा लेते हैं, यह प्रश्न अभी तक रहस्य ही बना हुआ था और वैज्ञानिक भी इसका जवाब ढूंढ़ने के लिए काफ़ी समय से सिर खपा रहे थे । संबसे परेशानी वाली बात तो यह रही है कि मच्छरों की सहनशक्ति इतनी बढ़ गयी है कि अब अधिकांश मच्छर भगाने वाले मैट्स, ऑयल अथवा अन्य दवाएं भी उन पर कारगर नहीं हो पाती । बहरहाल अमेरिकी वैज्ञानिकों ने मच्छरों के उन जीनों का पता लगा लिया है, जो मानव रक्त के प्यासे मच्छरों को मानव गंध के ज़रिये अपने शिकार तक पहुंचाते हैं । नेशविले स्थित वैंडरबिल्ट यूनीवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने मलेरिया फैलाने वाले 'एनोफिलिस' मच्छरों के कुल में पाये जाने वाले कुल चार ऐसे जीनों की पहचान की है, जो इन मच्छरों को मानव की उपस्थिति का एहसास कराते हैं । इन जीनों का पता चलने के बाद अब वैज्ञानिकों को यह उम्मीद हुई है कि वे मच्छरों को वाक़यी में दूर भगाने वाले उत्पाद बना सकेंगे ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित । फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

With best compliments from:

Ph: 0651-2330144, 2330604
Mo. 09334706965

Azad Pharma
formerly
Azad Pharmacy

Timing :
10:00 a.m. to 09:00 p.m.

Sunday Closed

B-7, Sainik Market, Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

और जो कोई
अल्लाह और उसके
रसूल (सल्ल॰) की
आज्ञा का पालन करे और
अल्लाह से डरे और उसकी
सीमाओं का ख़याल रखे,
तो ऐसे ही लोग
सफल हैं ।
(क़ुरआन)

A well wisher

MADGAO
GOA

Asif Khan.: 9386665296, 9934417909,9308184606

PATNA CAR

A House of Latest Accessories

Latest Car's Stereo, Seat's Cover, Remote Central Lock
Body Cover & All Accessories Items



Opp. Chankya Cinema Hall, Exhibition Road, PATNA-1

Posted on 20-21 September 2010
October 2010
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.09.2010

हिन्दी मासिकों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11



''पहुंचा दो मेरी ओर से चाहे एक ही आयत क्यों न हो''

–हज़रत मुहम्मद सल्ल०

कुरआन के महीने में कुरआन पहुंचाएं !

आइये ! अपने फ़र्ज़ मंसबी को अदा करें !!

आइये ! अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की अज़ीम सुन्नत को अदा करें !!!

कुरआन और हदीस से यह बात साबित है कि अब क़ियामत तक कोई नबी या रसूल आने वाला नहीं है । क़ियामत तक आने वाले इन्सानों के लिए अल्लाह तआला मुकम्मल हिदायतनामा ''कुरआन मजीद'' के तौर पर दे चुका है । अब इस हिदायतनामा यानी कुरआन मजीद को पूरी इन्सानियत तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी मुस्लिम उम्मत की है । क्या हम इस ज़िम्मेदारी को अदा कर रहे हैं ? यदि नहीं तो तुरंत इसकी चिंता करें, इससे पहले कि अल्लाह हम से हिसाब ले।

अत: प्रत्येक मुसलमान यह प्रोग्राम बनाए कि

- वह अपने ग़ैर-मुस्लिम दोस्त या पड़ोसी या जिन ग़ैर-मुस्लिमों से ताल्लुक़ात हों, उन्हें अपने घर आमंत्रित करे और कुरआन मजीद का अज़ीम तोहफ़ा पेश करे ।
- यदि उन्हें घर नहीं बुला सकते हों तो उनके पास जाए और उनकी सेवा में कुरआन मजीद का तोहफ़ा पेश करे ।

SALAAM Centre
Head Office: # 65/1, 1st Main Road, S.R.K. Garden, JAYANAGAR EAST, Bangalore - 41
Branch: G.C., RICH HOMES, RICHMOND ROAD, Bangalore - 25, Cell: 99451 88488, 99451 77477
Email: salaamcentrebangalore@gmail.com www.salaamcentre.org